पैंतीस साल पछुआ गेलौं

पैंतीस साल पछुआ गेलौं

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

PAINTIS SAL PACHHUAA GELAUN

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-0-7

दाम: 251/- (भा.रु.)

तेसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2017)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

कोढ़िया सरधुआ

राधेश्याम बाबा घरक बगलेक पोखैरमे स्नान करि एक हाथमे धोती आ दोसर हाथमे अछिंजलसँ भरल लोटा नेने डेढ़ियापर पहुँचबे केलाह कि पाछूसँ रस्तापर सँ लखन टोकलकैन-

“बाबा, अहींसँ कनी काज अछि।”

जहिना राधेश्याम बाबा लखनक बात सुनलैन तहिना आगूक डेग रोकि ठाढ़ होइत बजला-

“केहेन काज छह हौ लखन?”

अनका जकाँ बिटन्डी राधेश्याम बाबा नहि छैथ जे पाछूसँ टोकने टोकानि लगितैन। अपन विचार छैन जइ अनुकूल अपन जिनगीक धार बहै छैन जे गामे नहि आनो गामक लोक जनैए। लखनकेँ सेहो बुझल छइहे, तँए भरि राधोपुरमे जँ केकरो बिसवास पात्र मानैए तँ ओ मात्र राधेश्याम बाबाकेँ।

बिसवासक संग लखन बाजल-

“बाबा, एकटा नालिस अछि।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबा ठकुआएल ठाढ़ रहैथ। ओना लखनकेँ सेहो चिन्हते छैथ जे मिरचाइ, धनियाँ, हरदी, लसुन, आदीक वेपार लखन आइये नहि, तीसो-चालीस बर्खसँ राधोपुर सहित आनो-आन गाममे करैत आबि रहल अछि। गामक उपकारी लोक तँ छीहे तँए जँ कोनो विघ्न-बाधा रस्तामे एलै तँ ओकर

निमरजना हेबेक चाही। मुदा लगले फेर भेलैन जे स्नान केने आबि रहल छी, भीजल धोतियो आ पूजाक अछींजल सेहो हाथेमे अछि, तैबीच लखनक नालिस सेहो अछिए।

थकमकाएल ठाढ़ राधेश्याम बाबाक मनमे उठलैन जे अपनो आगूक काज अछि जे पहिने अँगनाक ओसारपर अछींजलक लोटा रखि घरक चारपर धोती पसारब, पूजा करब, भोजन आ अराम करब तेकर पछाइत ने दुनियाँ-दारीक काजमे जुटब। मुदा लगले भेलैन जे अपने अपन काजमे जखने जुटि जाएब, तखने दरबज्जापर आएल भूखल-दुखल बेकतीक उपकार केना हएत। तहूमे लखन सन लोक, जे तीन बजे भोरे उठि अपन भोरका कर्म–पर-पैखाना, कुर्रा-आचमन–सँ निवृत्त होइत चारिये बजेसँ अपना संग अनको दुख-धन्धाक पाछू लगि जाइए।

राधेश्याम बाबाक मनमे उठलैन जे उपकारो तँ उपकार छी। ओहो तँ एक्के रंगक नहियेँ अछि। एक उपकार भेल जे केकरो कएल जाइए आ दोसर भेल जे उपकारीकेँ उपकार करब। जहिना कोनो गाछ जड़िसँ लऽ कऽ छीप तक एक पुरखियाह होइए आ कोनो जड़ियेसँ सघन बनैत जाइए, जड़ियेसँ अनेको डारि-पात हुअ लगै छै तहिना लखनो सघन लोक अछिए...।

राधेश्याम बाबाक मन मानए लगलैन जे पहिने लखनक जे नालिस अछि तेकरे बुझी। अपन जे काज अछि ओ तँ अपना जुतिमे अछि, कनी देरिये ने हएत। तहूमे लखन दस-दुआरी अछि तेँ दस रंगक काजो हेतइ...।

ऐठाम अबैत-अबैत राधेश्याम बाबाक मन मानि गेलैन जे पहिने लखनेक काज करब पछाइत अपन करब। मुदा लगले फेर मनमे उठि गेलैन जे कोनो वस्तुक लेन-देन तँ छी नहि जे ओ मंगलक

आ अपने घरसँ निकालि दए देलिऐ। वा आगूक समय लऽ लेलौं। नालिस छी, नालिसो-नालिसमे अन्तर अछिए। दू गोरेक बीचक जँ कोनो छोट-छीन बात रहल तँ ओकरा लगले निपटा लेब। मुदा जँ नमहर माने एकसँ अधिकक बीचक रहल तँ ओ लगले थोड़े फरिछौल जा सकैए। ओइमे तँ बेसी समय लगबे करत। तँए जँ आगू बढ़ि लखनकेँ पुछिऐ जे की नालिस छह, तखन तँ जड़िसँ छीप धरि बुझै पड़त। तइमे समय केते लगत तेकर कोनो ठेकान अछि...। तइ बिच्चेमे लखन बाजल- “बाबा, अहूँकेँ बहुत काज पछुआएल अछि आ हमहूँ चारि बजे भोरेसँ घुमैत-घुमैत थाकि गेल छी। मन गरमा गेल अछि। घरपर जाएब, साइकिल रखि कनी ठंढाएब पछाइत नहाएब-सोनाएब तखन ने खाएब आ अराम करब।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मनमे जेना नव विचार जगलैन। नव विचार ई जगलैन जे जे आदमी चारि बजे भोरसँ काजमे जुटल अछि, अखन एगारह बजि रहल छै, ओइ आदमीक भूख-पियास आ अपने जे छह बजेमे ओछाइनपर सँ उठि पर-पैखाना होइत मुँह-कानमे पानि लइत चाह-पान करैत आठ बजेमे काज दिस बढ़लौं, दुनूक भूख-पियास एके रंग थोड़े भेल। मनमे अबिते दोसर विचार जेना राधेश्याम बाबाक मनकेँ पकैड़ लेलकैन। दोसर विचार ई पकैड़ लेलकैन जे कियो आदमी ओहन अछि जे एक साँझक भूखल अछि आ कियो तीन साँझक भूखल अछि, दुनूक भूख की एक्के रंग भेल। तैठाम पहिने केकरा खाइले भेटौ..? अबैत-अबैत राधेश्याम बाबाक मनमे थोड़ेक चैन एलैन। चैन अबिते बजला-

“लखन, जखन तूँ नालिस डायर केलह तखन ओ ठाढ़े-ठाढ़ थोड़े हएत। हमहूँ अछींजल ओसारपर रखि, धोती चारपर पसारि अँगनासँ अबै छी आ तोहूँ ताबे साइकिल लगा चौकीपर बैसह।”

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे सवुरक मेवा खसल। जहिना कोनो आम वा आने फलक गाछक पीपही-पौध रोपैकाल ओ फल मनमे नचैत अपन सुआद छिटकाबए लगैए तहिना लखनोक मनमे भेल जे पनचैती हेबे करत।

ओना सुधिया दादी सेहो अँगनाक मुँहथैर लग ठाढ़ भऽ दुनू गोरेक गप-सप्प सुनैत रहैथ। मुदा बजैथ किछु ने। किछु नहि बजैक कारण रहैन जे जखन मरदा-मरदी गप भऽ रहल अछि तखन बीचमे अनेरे बाजब नीक नहि। मुदा तँए मनमे खौंझ नहि उठैन सेहो बात नहियेँ अछि। खौंझ तँ उठबे करैन। भेल जअमे पाथर खसब एकरे ने लोक कहै छइ। भरि दिन नीक-अधला वृत्ति लोक अपन खाइये-पीबैक जोगार-ले ने करैए, सेहो जँ तुकपर नइ भेल तँ की भेल। मुदा दुआरपर आएल केकरो अकची-दोकची कहब सेहो नीक नहियेँ छी।

आँगनक पछबरिया ओसारपर अछींजलक लोटा रखि चारपर धोती पसारि राधेश्याम बाबा दरबज्जापर आबि चौकीपर बैसला। लखन पहिनेसँ चौकीपर बैसल छल। राधेश्याम बाबाकेँ किछु पुछैसँ पहिने लखन बाजल-

“बाबा, अहूँ देखै छी आ दादी सेहो देखैत आबि रहल छैथ, जे ई साल 2017 ईस्वी हमर चालिसम बरीस रोजगारक छी।”

बिच्चेमे राधेश्याम बाबा बजला-

“हँ, से तँ भेले हेतह।”

राधेश्याम बाबाक समर्थित बात सुनि लखनक मनमे आरो उत्साह बढ़ल। अपन विचारकेँ पसारैत आगू बाजल-

“बाबा, अहीं कहू जे आइ धरि कोनो शिकबा-शिकाइत लऽ कऽ कहियो किछु कहलौं?”

समर्थन करैत राधेश्याम बाबा बजला- “हँ, से तँ कहियो ने

किछु कहलह।”

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे आरो मजगूती आएल। बाजल-

“बाबा, जहिना अपन गाम आ परिवार अछि तहिना पँचकोसीक गामो आ परिवारोकेँ, आइये नहि सभ दिन अपन बुझैत आबियो रहल छी आ कारोबार सेहो करिते छी। नगद-उधार सभ चलिते अछि। धरमागती कहै छी जे ने अपने कहियो केकरोसँ एक पाइ झूठ बाजि बेइमानी केलिऐ आ ने आने कियो एको पाइ बेइमानी केलक।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मन कनी घुरियेलैन। घुरियाइक कारण भेलैन जे वेपारी छी तखन झूठ बाजि नइ ठकने हेतइ से सम्भव अछि। तँए कनी मिरमिराइत बजला-

“तइले कहियो किछु कहलियह?”

लखन बाजल-

“बाबा, अहूँ देखै छी आ आनो-आन देखिते छैथ जे झंझारपुर हाटपर समस्तीपुरबला वेपारीसँ समान कीनै छी आ तीस प्रतिशत लाभ लऽ कऽ बेचै छी।”

‘तीस प्रतिशत’ सुनि राधेश्याम बाबाक मन कनी ठमकलैन। ठमैकते बजला-

“तीस प्रतिशत!”

राधेश्याम बाबाक बातकेँ स्वीकारैत लखन बाजल-

“हँ बाबा, तीस प्रतिशतसँ कमपर काज करब तखन पेट भरत।”

राधेश्याम बाबा लखनक कारोबारक तहियाएल बात नहि बुझै

छला। रेडियो-अखबारसँ बड़का वेपारी सबहक बात बुझै छला। जे एक प्रतिशत, दू प्रतिशत वा पाँच-दस प्रतिशत लाभपर कारोबार करै छैथ। तैठाम लखन तीस प्रतिशत लाभपर कारोबार करैए, ई तँ सोझे गरदैनकट्टी करैए किने..!

बजला-

"एक प्रतिशत, दू प्रतिशत लाभपर काज करैबला वेपारीकेँ उना-सँ-दूना होइ छै आ तोरा पेटो ने भरतह?"

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे भेल जे राधेश्याम बाबा सुधंग लोक छैथ। सभ दिन खेती-गिरहस्तीपर जीबैत आबि रहला अछि तँए बनियाँ-बेकालक वेपारक बात नइ बुझै छैथ। मुदा जाबे धरि नइ बुझता ताबे धरि हिनका नजैरमे ठक-फुसिआह बनले रहब। जेकरा अपन बजार बनौने छी आ ओइ बजारक बीच कारोबार करै छी जइसँ परिवारो चलैए आ सामाजिकता सेहो बनले अछि, तँए पहिने ई बुझाएब जरूरी अछि।

लखन बाजल-

"बाबा, पाँच हजार अपन पूजी अछि आ पाँच हजार वेपारीक– माने जेकरासँ समान कीनै छी–उधार छइ। दुनू मिला दस हजारक कारोबार भेल। सभ दिन गाम सभ घुमि बेचै छी, जइसँ कहियो पाँच साए आ कहियो दुइयो साइक लाभ होइए। हरा-हरी बुझू तँ तीन-साढ़े तीन साइक कमाइ होइए। अहाँकेँ अपनो परिवार अछि, सभ किछु मिला खर्च जोड़बै तँ बुझि पड़त जे लखनक कमाइ केते भेल।"

सोल्होअना राधेश्याम बाबाक मन लखनक विचारपर नइ जमलैन मुदा आधा-छिधा नइ जमलैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

राधेश्याम बाबा बजला- "तोरा हिसाबे तँ केतौ गड़बड़ नइ

बुझि पेब रहल छी मुदा...।”

‘मुदा’ सुनि लखनक मनमे भेल जे बाबा सिमरियामे बहैत गंगा वा झंझारपुरमे बहैत कमला वा सुपौलमे बहैत कोसी वा दरभंगामे बहैत बागमतीक बात तँ बुझि रहला अछि मुदा जैठामसँ धार सभ निकलल अछि वा दोसरमे जा-जा मिलल अछि से नहि बुझि पेब रहला अछि। तँए जाबे ओ नइ बुझता ताबे असल बात नहि बुझता।

लखन बाजल-

“बाबा, हमसब खुदरा वेपारी छी। कम आँट-पेटक कारोबार अछि। मुदा अहाँक नजैरमे थौक वेपारी सभ छैथ, हुनका सबहक कारोबार करोड़ो-अरबोमे छैन, तँए हुनकर एक-दू प्रतिशत करोड़ो-अरबो आमदनीक भेल आ हमरा सबहक हजार-बजारक कारोबार अछि तँए साए-सैकड़ आमदनीक भेल।”

ओना अपना जनैत लखन नीक जकाँ अपन विचार बुझौलकैन मुदा राधेश्याम बाबाक मन नीक जकाँ नइ बुझि पेलकैन। तँए असमनजस करैत राधेश्याम बाबा बजला-

“हमरा ते होइए जे सभ वेपारीक चालि-ढालि एके रंग अछि, मुदा तोहर विचार तँ...।”

राधेश्याम बाबाक पेटक बात लखन बुझि गेल। बाजल-

“बाबा, केना कोन वौसक दाम बनैए ओ बड़ भारी अछि। ओकरा कहैमे बड़ देरी लागत मुदा एकटा बात नजैरपर-के दइ छी।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबा ठमकला। पाछू हटैत बजला-

“खाइ-पीबैक बेर अछि, तँए अनेरे गप-सप्पमे नइ गमाबह।

जइ काजे रूकलह तेकरा अगुआबह।”

गप-सप्पक क्रममे लखनक मन जेना भरि गेल होइ तहिना बाजल-

“बाबा, जखन दुनू गोरे बैस विचारिये रहल छी तखन काजो हेबे करत। मुदा एकटा बात पछुआएल अछि से पहिने सुनि लिअ।”

राधेश्याम बाबाक मनमे भेलैन जे भने पहिने वएह सुनि ली। जखने मनक बात मनसँ निकलतै तखने ने मन खाली हेतइ। जइमे कोनो बात आकि नव विचार रखैयोमे बेसी गरगर हएत। बजला-

“पहिने डोरियेलहे विचार सम्पन्न करह। पछाइत नवका काजक गरे करब।”

लखन बाजल-

“बाबा, सड़कक काते-काते पेट्रोल-डीजलक दोकान सभ देखिते छिऐ। दस लाख-बीस लाख लीटर पेटरौलो आ डीजलोक स्टॉक ओकरा सबहक अछि। अखन तक वेपारी सभ मुनाफा लैत जइ दरमे बिकरी कऽ रहल अछि, ओ बारह बजे रातिमे अन्हारे-अन्हारमे दू रूपिया-तीन रूपिया प्रति लीटर बढ़ि जाए, जइसँ हजारक कोन बात जे लाखो-करोड़ो अपने चलि अबैए। से हमरा सभकेँ थोड़े औत। चालीस बर्खसँ धनियाँ-मिरचाइ-हरदी-आदी साइकिलपर लादि गामे-गाम घुमि-घुमि बेचै छी तखन साए-सैकड़ मुँह आँखि देखै छी।”

एकाएक राधेश्याम बाबा जेना निर्णायक दौड़मे पहुँच गेला तहिना बजला-

“परिवार चलै छह किने?”

परिवारक बात सुनिते लखन बाजल- “से ने किए चलत।

धिया-पुताकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, बिआह-दान जेते भेल से तँ करिते आबि रहल छी। अखनो सात गोरेक परिवार चलैबते छी।"

लखनक बात सुनि बगलमे ठाढ़ सुधनी दादी बजली-

"लखन कि कोनो आइए-सँ भौरी करैए, पाबैन-तिहारमे केते गोरेक ऐठाम खेबो करैए आ अपनो खुऐबते अछि किने।"

सुधनी दादीक समर्थन पेब लखन समरथित होइत (समथारति स्वरुप) बाजल-

"दादी, कमसँ कम एक साए परिवारसँ खाएनो-पीन रखने छी आ बेटा-बिआहमे बरियाती आ बेटी-बिआहमे सामाजिक सम्बन्ध सेहो ऐछे। केकरो बेटीक बिआह होइ छै ते मास दिन पहिनहि कहि दइ छिऐ जे मर-मसल्लाक चिन्ता छोड़ि आन चिन्ता करब। तहिना माइयो-बापक श्राद्धमे करिते छी।"

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मन जेना भरि गेल होनि तहिना नरमाइत बजला-

"अखन खाइ-पीबैक बेर अछि लखन। पर-पनचैती तँ निचेनीक काज छी, मुदा तैयो जइ काजे तोहूँ अन-पानि तियागने छह आ हमहूँ तियागने छी से पहिने करह।"

अपन सभ विचारकेँ मनमे कतियबैत लखन बाजल-

"बाबा, पहिने रसियारीवाली कनियाँकेँ बजा लिअ। सोझा-सोझी गप नीक होइए।"

बगले परिवारक रसियारीवाली, तँए सुधनी दादी दरबज्जेपर सँ शोर पाड़ैत बजली-

"हइ रसियारीवाली, कनी एमहर आबह।"

अखन तक रसियारीवालीकेँ ई नइ बुझल जे पनचैती अपने

ऊपर अछि। मनो निरविकार। निरविकार ऐ दुआरे जे कोनो गलती केने नहि छेली। रसियारीवाली आबि सुधनी दादीक पँजरा लगि ठाढ़ भेली।

रसियारीवालीकेँ देखिते लखन बाजल-

“बाबा, भोरे-भोर बोहनियेँ-काल रसियारीवाली गारिसँ उकैट देलैन। मुदा हम किछु बजलौं नहि। बोहनी-पहर छल। जँ भोरे जतरा कुजतरा भऽ जइतए ते भरि दिन गारिये-फज्झैत ने सुनैत रहितौं। मुदा जखैनसँ सुनलौं तखैनसँ मनमे काँट जकाँ नइ गड़ल अछि सेहो थोड़े नहि...।”

राधेश्याम बाबा बजला-

“लखन तोहर बात नीक जकाँ नइ बुझलौं किए तँ जहिना सौंसे रामायण एकटा छप्पयमे सेहो कहल गेल अछि, मुदा रामायणिक विचारधाराकेँ जँ जिनगीक नजरिये बुझब तँ ओ सौंसे जिनगीक छी, तहिना तोहूँ एक्के सूरेमे सभ बात बाजि गेलह। जइसँ नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पहिने रसियारीए-वालीक गप सुनह।”

रसियारीवालीकेँ पँचवेदीमे ठाढ़ होइत देखि लखनक मनक अदहा दर्द मेटा गेल। बाजल-

“भने अहाँ कहलिऐ, बाबा।”

तैबीच सुधनी दादी रसियारीवालीकेँ चरियबैत बजली-

“निधोखसँ बाजह। कोनो झूठ-फूस नइ बजिहह। पंचवेदीमे ठाढ़ छह।”

रसियारीवाली बजली-

“लखनकेँ किछु नहि कहलौं से बात नइ अछि। बजलौं जरूर मुदा गारि नहि पढ़लिऐ।”

ओना लखनक मनमे ईहो उठैत रहै जे परिवारोमे जखन कनी-मनी भइये जाइ छै एना समाज तँ ओइसँ नमहर अछिए। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अही समाजक बीच ने जीबो करै छी आ सुख-दुखक गपो-सप्प करै छी। ओना, ईहो विचार लखनक मनमे नचिते रहै जे भोरका समय रहै बेसी लोक सुतले छल, तँए कियो सुननौं ने हएत। आ जँ सुननौं हएत तँ मने-मन विचारिये नेने हएत जे भोरका समयमे कियो अनका थोड़े कहने हएत। तँए लखनोक मनक चितपन कनी निच्चाँ भेले जाइत रहइ। मुदा पँचवेदीमे जँ फुसियाह बनि जाइ सेहो केहेन हएत। बाजल-

“कनियाँ, अहीं अपना छातीपर हाथ रखि कऽ बाजू जे ‘कोढ़िया-सरधुआ’ नइ कहने छेलौं?”

रंग-रंगक परिस्थिति राधेश्याम बाबाक आँखिक सोझमे उपस्थित भऽ गेलैन। तैसंग ईहो होनि जे दुइए गोरेक बीचक बात छी, तेसर कियो अछि नहि जे तीनमे दू-एकक अधारपर निर्णय करब...।

मुदा लगले मनमे एलैन जे मुद्दा ने बेकतीगत भेल। मुदा समाजेक लोक ने दुनू छी तँए मुद्दाक संग समाधानोक विचार किए ने दुनू गोरेसँ पहिने लऽ ली...।

राधेश्याम बाबा बजला-

“लखन, तोहूँ कि सोझे भौरीए करैबला वेपारी छह सेहो बात नहियेँ अछि। कहुना ते पचास-पचपनक उमेर भइये गेल हेतह। तोंही पहिने अपन विचार बाजह।”

लखन बाजल-

“बाबा, माए जखन जीबै छल तखन ओहो कोढ़िया कहै छल आ घरवाली सेहो केता दिन कोढ़िया कहने हएत तेकर ठेकान नहि। तँए कोढ़ियाकेँ छोड़ि दइ छी मुदा सरधुआ जे रसियारीवाली कहली

से जँ हमर सराधे भऽ जाएत तखन सात गोरेक परिवारक खरचा वएह देती।”

अधियाएल पनचैती होइत देखि राधेश्याम बाबा रसियारीवालीकेँ पुछलैन-

“आब, कनियाँ अहाँ बाजू।”

रसियारीवाली बजली-

“बाबा, खूब भोरे-के लखन आबि दरबज्जापर सँ चिचियाए लगै छैथ जे मिरचाइ, धनियाँ, हरदी लेब अइ ऐ ऐ ऐ...। से यएह कहथु जे भोरका ओहन कड़कड़ाएल नीनकेँ जे दुइर करत तेकरा कोढ़िया-सरधुआ कहिलिऐ ते कोनो बेसी कहलिऐ जे ओ गारि बुझै छैथ।”

रसियारीवालीक विचार सुनि लखनकेँ बुझबैत सुधिया दादी बजली-

“लखन, ‘कोढ़िया-सरधुआ’ गारि नइ छी। ओहुना स्त्रीगण सभ एक-दोसरकेँ कहै छैथ। तँए ऐ बातक जँ कुवाथ भेल हुअए तँ ओकरा मनसँ निकालि लिहह।”

सुधनी दादीक चेहरापर सँ नजैर उठा राधेश्याम बाबाक चेहरा दिस तकैत लखन बाजल-

“जाइ छी बाबा।”



शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017

बेटपन

बेरुका समय। घनश्याम काका असगरे दरबज्जापर बैसल मने-मन ऐगला जिनगीक विषयमे सोचि रहल छला। चारिम दिन पत्नीक श्राद्ध-कर्मसँ निवृत्त भेला। दस दिनसँ परिवारमे तेते लोकक–समाजो आ करो-कुटुमक–आवा-जाही भेल छेलैन जे अपना विषयमे किछु सोचै-विचारैक पलखतिये ने भेलैन। ओना, श्राद्ध-कर्मसँ निवृत्त होइते एकाएकी कुटुम सभ अपन-अपन गाम जाए लगल छला, मुदा अन्तिम खेप जे दुनू बेटा-पुतोहु आ पोता-पोतीक छेलैन ओहो सभ भिनसुरका अठबजिया गाड़ी पकैड़ दिल्ली चलि गेलैन, जइसँ घनश्याम काका असगरे रहि गेला।

दरबज्जापर बैसल घनश्याम काका सोचि रहल छला जे अपन पचासी बर्खक उमेर भऽ गेल, आ पत्नी बेरासी बर्खक उमेरमे देश छोड़ली। तइसँ अपने तीन बर्ख बेसीए छी। लगले भेलैन जे पचासी बर्ख आकि छियासी बर्ख मृत्युक दिन वा बर्ख थोड़े छी जे ओइ दिन आकि ओइ बर्ख मरिये जाएब। मरैक कोनो ठेकान अछि। कियो साए-सबा-साए आ कियो डेढ़-साए बर्ख सेहो जीबै छैथ आ कियो माइयेक पेटमे मरि जाइए। अन्तो-अन्त बर्खक विचार घनश्याम कक्काक मनसँ निकैल ऐठाम आबि अँटैक गेलैन जे जाबे आँखिमे ज्योति अछि ताबे तकक जिनगीक सोच तँ करइ पड़त। मुदा लगले फेर भेलैन जे एते नमहर परिवार–बेटा, बेटी, नाति-नातीन, पोता-पोती–रहितो असगरे रहि गेल छी। असगरोक तँ परिवारे भेल किने।

रहैले घर चाहबे करी, खाइ-पीबैले अन्न चाहबे करी आ ओढ़ै-पहिरैले कपड़ा-लत्ता चाहबे करी। मन ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे जेकर दस गोरेक परिवार अछि ओ दसो जखन भरि दिन घरक पाछू लगल रहै छैथ तखन परिवार चलै छैन, हम तँ असगरे छी, केना चलत? लगले मनमे उठि गेलैन जे दूटा बेटी-जमाए तँ बाहरे–एकटा बंगलोर एकटा दिल्लीमे–रहैए आ तेसर गाममे रहैए। मुदा ओहो तँ दस कोस हटले अछि। माने दस कोसपर सासुर छइ। ओना, जाइकाल तीनू बेटियो आ दुनू बेटो-पुतोहु कहिते छल जे असगरे गाममे केना रहब, तँए हमरे ऐठाम चलू। घनश्याम कक्काक जेठ बेटी जमाए बंगलोरेमे एकटा फ्लैट किनने छैन, दोसर बेटी-जमाए दिल्लीमे पचीस गज जमीन लऽ दू मंजिला घर बना रहै छैन। तहिना दुनू बेटो-पुतोहु दिल्लीए-मे दू ठाम जमीन कीनि घर बनौने छैन।

घनश्याम कक्काक मनमे उठलैन गाम आ बाहर। जहिना बेटा-जमाए घर बना बाहर रहैए तहिना ने अपनो बनौल घर गाममे अछि। एक तँ बाप-पुरुखाक देल घराड़ी तैपर अपन बनौल घर अछि, तैठामसँ जाएब केते उचित हएत। अपन लगौल गाछी-कलम अछि आ अपन खेती-पथारी अछि, अपन जोड़ल समाज अछि तेकरा छोड़ि अनका समाज अनकर घर-घराड़ीमे रहब, अनका जे नीक लगौ मुदा अपन मन कहाँ मानि रहल अछि। जाबे जीबै छी आ घर-घराड़ीक संग समाजो जीबैए। तेकरा जँ बदैल लेब वा हटि कऽ चलि जाएब तखन जिनगीमे रहि की जाएत जे तेकरा देखि भरमैत रहब..!

ऐठाम अबैत-अबैत घनश्याम कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैकते मनमे उठलैन जे कोनो कि हमहींटा ऐ धरतीपर एहेन छी जे एहेन जिनगीसँ भेँट भेल अछि आकि हमरा सन-सन केतेको गोरे समाजमे भाइयो चुकल छैथ आ अखनो छैथ आ आगुओ हेबे

करता...।

ऐठाम आबि घनश्याम कक्काक मन फेर घुमलैन। घुमिते मनमे उठलैन जे जखने असगरक परिवार बना रहब तखने ने दस गोरेक परिवार जकाँ दस रंगक ओरियान सेहो करइ पड़त। हँ, एते जरूर हएत जे दस गोरेमे जेते वस्तुक खगता होइ छै तेते नइ हएत। कम हएत। मुदा नहियेँ हएत से बात तँ नहियेँ अछि, हेबे करत। घनश्याम कक्काक मन कलशलैन। कलैशते विचार जगलैन जखन तारीख-साल मोन पाड़लौं तखन ने पचासीम बर्ख मोन पड़ल मुदा मनोसँ आ काजोसँ कहाँ बुझि पड़ैए जे मरैमान भऽ गेल छी। अखनो देहमे ओते शक्ति ऐछे जे अपन जिनगी चलबैक सभ ओरियान अपने करि सकै छी। आन जकाँ जखन घचकनाह बनब तखन ने अपनो भार अनकापर पड़तै आ जखन से नइ बनब तखन अपन जिनगीकेँ किए ने हँसबैत कहबै जे जेना-जेना परिवारमे विघटन भेल से तँ जनिते छी, जँ कियो अपन हाथ-पैरक गुण बुझबे ने करत तँ ओकरा बदला अनकर स्वधीनता थोड़े जेतइ...।

मुदा जे स्वधीनता प्राप्त कऽ लेलक ओ केना अपन जीता-जिनगी परधीनता कबूल करत? स्वधीनता आ परधीनताक बीच घनश्याम कक्काक मन ठमैक गेलैन।

स्वधीनता दिस जखन मन बढ़ैन तँ जिनगीक सार्थकता ओहिना झलैक उठैन। मुदा जखन परधीनता दिस बढ़ैन तँ जिनगीक कोन बात जे अपन किरिया-कलापकेँ मनुक्खक कोटिसँ निच्चाँ बुझए लगैथ। अही दू पाशाक बीच मनुक्खक जिनगी चलैए। आन जीव-जन्तुकेँ एकर खगते कोन छइ। ने बुधि-विवेक छै आ ने जिनगीए बुझैक अवगैत छइ। घनश्याम कक्काक विचार लगले आगू बढ़ि ओइ सिमानपर पहुँच गेलैन जेतए-सँ दुनू पाशाक दिशाक रस्ता फुटै छइ। मन ठमकलैन। ठमैकते विचार उठलैन जे गप-सप्पक

क्रममे आकि शब्द–विन्यासमे दुनू स्वधीनता आ परधीनतामे जे अलंकारिक सम्बन्ध वा शाब्दिक होइ मुदा दुनू जिनगीक दू छोरपर अछिए। ओना, दुनूकेँ दू छोर कहबो ओते उचित नहियेँ हएत। किएक तँ स्वधीनता लेल कठिन तप-तपस्या आ कर्म-कर्मणाक जरूरत अछि तँ परधीनता लेल ढलानपर सँ उतरैत गाड़ी जकाँ बिनु भीरेक दौड़ैत चलैए...।

समुद्री जहाजपर बैसल यात्री जहिना एक किनारपर एक देश आ दोसर किनारपर दोसर देश देखैए तहिना घनश्याम काका स्वधीनता-परधीनता देखए लगला। मुदा दुनूक रस्ता अलग-अलग अछि तैपर नजरिये ने जा रहल छेलैन। नजरियो केना जइतैन, दुनूक अपन सोचो-विचार आ काजो-बेवहारमे विपरीतक सम्बन्ध अछिए।

..लगले मनमे उठलैन जे अनेरे मनकेँ सघन बोनमे वौआबै छी। दुनियाँमे अन्हार रहौ कि इजोत मुदा दुनूक अपन-अपन गुण-धर्म अछि किने। जँ दुनियाँमे अन्हारे अछि तँ ओ अन्हार हमरा जेते अन्हरौत तेतबे ने हमरा-ले अन्हार भेल। आकि इजोते अछि तँ ओतबे इजोत ने भेल जेते देखै छी। अन्हार-इजोतक बीच घनश्याम कक्काक मन तेना ओझरा गेलैन जे की नीक आ की अधला से निर्णये ने कऽ पाबि रहल छला। तही बीच रामखेलावन भाय पहुँचला, पहुँचते बजला-

“काका, गोड़ लगै छी।”

ओना, ऐसँ आगू रामखेलावन भाइक मनमे अनेको विचार उठैत रहैन मुदा विचारसँ विचार टकराइयो लगलैन। टकराइक कारण भेलैन- समान्य परिस्थितिक जगह विषम परिस्थिति। ओना रामखेलावन भाय जिनगीकेँ गहींर तक धँसि अनुभव केने छैथ मुदा एकक जिनगी आ दोसरक जिनगीमे अन्तर सेहो ऐछे जइसँ हू-बहू

एकरंग चलब सेहो कठिनाह भइये जाइए। ओना, जिनगीक किछु मूल तत्त्व ओहन ऐछे जे सबहक संगे समान्ये अछि मुदा किछु असमान्य नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो अछिए।

रामखेलावन भाइक 'गोड़क' जवाब घनश्याम काका मुहसँ असिरवाद नहि दैत आँखि खसा इशारासँ देलखिन-

"अपना की रहल जे तोरा असिरवाद देबह। मुदा आइ धरि जे सम्बन्ध रहल तेकर निछौर दइ छिअ।"

ओना घनश्याम काका मुहसँ किछु ने बजला मुदा मनक मर्जसँ रामखेलावन भाय सभ बात बुझि गेला। बुझला पछाइत विचार उठलैन जे जाबे तक केराक कोशा जकाँ एक-एक कोष आ ओइ कोषक भीतर एक-एक छीमीक जिनगीकेँ नीक जकाँ नइ बुझता ताबे तक जहिना लोक कोष छुटल केराकेँ एकटा निम्मन बुझितो बाँकीकेँ कोशा बुझैए तहिना बुझैत रहता।

मुदा ओही कोशामे ओहू केराक जिनगी नुकाएल छल, तइ दिस लोकक धियाने ने जाइ छइ। लगले रामखेलावन भाइक मनक विचार बदैल गेलैन। बदैलते घनश्याम कक्काक जिनगीमे प्रवेश करैक विचार जगलैन। विचार जगिते मन कहलकैन- जाबे अपन क्लेशकेँ नहि कलशौता ताबे कलशैक सम्भावना केना बनत। पुछलखिन-

"काका, यज्ञसँ तँ निवृत्ति भऽ गेल हएब किने?"

ओना 'यज्ञ' सुनि घनश्याम कक्काक मनक घनघनी छँटलैन मुदा आगूमे दोसर यज्ञ देखि पुन: मन ओहिना सकुचा गेलैन जेना पहिने सकुचाएल छेलैन। मुदा तैयो अपन घरक मान रखैत घनश्याम काका बजला-

"हँ, आठ बजेक ट्रेनसँ अन्तिम विदाइ दुनू बेटा-पुतोहुकेँ करि

निचेन भेलौं।”

कि सोचि घनश्याम काका अपनाकेँ निचेन बुझलैन से तँ घनश्यामे काका जानैथ मुदा रामखेलावन भाय बुझलखिन जे भरिसक बेटोक आशा टुटि रहल छैन। घनश्याम कक्काक मनकेँ बहलबैत रामखेलावन भाय बजला-

“काका, आब कि बेटो बेटा रहल! ओकरामे बेटपनक गुण मिसियो भरि नइ आबि रहल छइ।”

‘बेटपन’ सुनिते घनश्याम कक्काक मनक बखारक मुँह खुजलैन। जहिना भरल कोठीक मुँह खुजिते अन्न भुभुआ कऽ निकलए लगैए तहिना घनश्याम कक्काक मुहसँ निकललैन-

“बौआ, गाममे तोरा सभसँ नीक विचारक बुझै छिअ। ओना, हमहूँ सभ दिन गुरुआइये केलौं। मुदा..?”

‘मुदा’ कहैत-कहैत घनश्याम कक्काक हृदय जेना दहैल गेलैन। दहलिते आँखि नोरसँ नोराए लगलैन, भादवक मेघ जकाँ बरिसैले टप-टप करए लगलैन।

नोराइत आँखि देखि रामखेलावन भाय मने-मन आँकि लेलैन।

ओना, बरखो-बरखामे अन्तर होइते अछि। एकटा होइए जइमे वादल फाटि कऽ बरिसैए आ दोसर होइए जइमे खेबा कालक छिच्चा जकाँ फुहियाइए। तइ बिच्चेमे अनेको रंगक बरखा सेहो अछिए।

रामखेलावन भाय बजला-

“काका, अहाँ कोनो आइयेक छी, अस्सी-नब्बे बर्खक उमेर भइये गेल आ जहिया अपन पढ़ाइ छोड़लौं तहियेसँ ने पढ़ौनी शुरू केलौं।”

तमुरिया हाइ स्कूलसँ घनश्याम काका मैट्रिक पास केलाक

पछाइत जीवकोपार्जन करैले नेपालक बिराटनगर गेला। अविकसित बिराटनगर अखुनका जकाँ नहि, तोहूमे दोसर देश सेहो छीहे। ओना, उत्तर प्रदेशक किछु भाग, बिहारक चम्पारणसँ पूर्णिया तक आ बंगालक नक्शल वा दार्जिलिंग तक नेपालसँ सटल अछिए। सटल रहने बोली-वाणीसँ लऽ कऽ जिनगीक सभ किरिया-कलापक बीच सेहो लगपन छइहे।

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम कक्काक तबधल मनमे जेना शीतल समीरक संग सीताएल बरखा सेहो हुअ लगलैन। बजला-

“बौआ रामखेलौन, तोरासँ कोन बात छिपल छह, जेकरा छिपाएब।”

पहाड़पर सँ गिरैत जलधारमे अपन विचारक जलधर मिलबैत रामखेलावन भाय बजला-

“काका, अहाँ मुहेँ आइ धरि कोनो झूठ बात नइ सुनलौं। ई दीगर भेल जे ई पोथी-पुराण अपने प्रपंची अछि आ अहाँ वएह पढ़ि बजैत होइ, ऐमे अहाँक कोन दोख। मुदा जहिया कहियो केकरो किछु विचार देलिऐ ओ ओही अधारपर देलिऐ आ अखनो दइते छिऐ।”

ओना किछु बात रामखेलावनक मुहसँ एहेन जरूर निकलल जइसँ घनश्याम कक्काक मनमे ठेँस लगितैन, मुदा जेना जिनगीक थपेरमे किछु विचार थपथपा गेल होनि तहिना ठेँसोमे भेलैन। महसूस करैत बजला-

“बौआ राम, सुनै छी जे परबाबाकेँ सात साए बीघा जमीन छेलैन, जे दरभंगा राजसँ पुरस्कार स्वरुप भेटल रहैन। मुदा हमरा भैयारी तक अबैत-अबैत ओ सठि गेल। दूधक डाढ़ी जकाँ किछु बँचि

गेल। जइसँ पारिवारिक जीवन चलब कठिन भऽ गेल। तँए परिवार-ले बाहरसँ कमा कऽ आनब जरूरी भऽ गेल।”

घनश्याम कक्काक विचारकेँ सूहकारैत रामखेलावन भाय बजला-

“काका, धनो-सम्पैत कि केकरो बान्हल रहैए, ओ तँ धारक पानि जकाँ एबो करैए आ जेबो करैए। मुदा तही बीच ने केतौ-केतौ–माने पोखैर, तलाव आकि मोइनमे–अँटकियो जाइए आ केतौ-केतौ–महार नहि रहने–पहिलुको पानि बाढ़ियेक संग बहिये जाइए।”

घनश्याम काका बजला-

“बौआ, जहिया पाँच बर्खक रही तहिये पिताजी गामक स्कूलमे नाओं लिखा देलैन। गामसँ लोअर पास केलौं। गाममे ऐसँ आगूक पढ़ाइ नइ होइत छल। ओइ समयमे अपना इलाकामे दुइए-टा मिडिल स्कूल छल। एकटा तमुरियामे आ दोसर सिमरामे। पछाइत कछुबीमे सेहो भेल आ आब तँ अपना गामोमे भइये गेल अछि। सिमरासँ मिडिल पास केलौं। मिडिल पास केलाक पछाइत तमुरिया हाइ स्कूलमे नाओं लिखेलौं। आ ओत्तैसँ मैट्रिक पास केलौं।”

रामखेलावनक मुहसँ निकललैन-

“बाह-बाह।”

रामखेलावन भाइक बाहबाहीसँ घनश्याम कक्काक मनमे अपन कएल कीर्त्तक यश जगलैन जइसँ मनो आ विचारो फुलाए लगलैन। बजला-

“बौआ राम, मैट्रिक पास केलाक पछाइत लगले बिआह भऽ गेल। छबे मासक भीतर। एकाएक मनमे भार बुझि पड़ल। जेना तीन बट्टीपर पहुँच गेल होइ। एक दिस माए-बाबू भेला, दोसर दिस अपन

पत्नी आ तेसर दिस दूटा छोट भाए आ एकटा बहिन छल। घरक स्थिति ओहन नइ छल जे ओहू भरे परिवार चलि सकैत।"

घनश्याम कक्काक बात सुनि रामखेलावन भाय मुहसँ तँ किछु ने बजला मुदा मुड़ी डोलबैत स्वीकार कइये लेलैन जे स्थिति भयावह जरूर छेलैन।

रामखेलावन भाइक स्वीकारोक्तिसँ घनश्याम कक्काक मन जेना उत्साहित भेलैन। बजला- "बौआ, ओइ समयमे–माने आइसँ पचास-साठि बर्ख पूर्व–अपनो गामक आ आनो-आनो गामक लोक बिराटनगरमे नोकरियो करए जाइ छल आ सीजन पेब धानो-पटुआ काटए जाइ छल। हमहूँ ओही लाटमे बिराटनगर गेलौं।"

बिच्चेमे रामखेलावन भाय बजला-

"दुनू देशक बीच जे सीमा अछि तैठाम कोनो रोको-राक होइ छल?"

घनश्याम काका बजला-

"नइ, ओना नेपालमे गाँजाक खेती करैक छूट छल, तँए ओमहरसँ अबैकाल मात्र गाँजाक लेल चेक-चाक होइ छेलै, सेहो सभकेँ नहि। ओना, सीमाक दुनू कात अपन-अपन देशक पुलिस-चौकी छेलैहे।"

"केतेक दिन बिराटनगरमे रहलिऐ?"

घनश्याम काका बजला-

"पैंतीस बर्ख बिराटनगरमे रहलौं। ओना, ने माड़वारी ऐठाम नोकरी केलौं आ ने कोनो सरकारिये स्कूलमे। मिडिल किलास तकक विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़बै छेलौं। अखुनका जकाँ ट्यूशनो फीस नहियेँ छल, समैयो सस्ता छेलै मुदा तैयो सबा साए-डेढ़ साए महिनामे कमा लइ छेलौं।"

रामखेलावन भाय बजला-

“आ खेनाइ-पीनाइ?”

घनश्याम काका-

“अपन गामक बेसी गोरे एकटा सेठक ऐठाम रहै छला। गोटि-पंगरा आनो-आनो ऐठाम रहै छला मुदा जइ सेठक ऐठाम बेसी गोरे रहै छला ओइ सेठक कारोबार पैघ छल। धान, पटुआ, तोरी इत्यादिक खरीद-बिकरी चलै छेलइ। नोकर-चाकर-ले खाइ-पीबैक अपन बेवस्था छेलइ। एकटा नोकर भानसे करै छल, ओहीमे सभ खाइ-पीबै छला। ओही लाटमे सेठजी हमरो खाइक बेवस्था केने छला।”

ओना घनश्याम कक्काक इतिहाससँ रामखेलावन भाय अकछाए सेहो लगला मुदा मनमे ईहो होनि जे जाबे सुख-दुखक पीड़ा कक्काक मनसँ नहि निकैल जेतैन ताबे मन हल्लुक नइ हेतैन आ जाबे मन हल्लुक नइ हेतैन ताबे नव विचार मनमे जगतैन नहि। संगे मनमे ईहो रहबे करैन जे गाम-समाजक परिवारक बात छी, जँ गाम-समाजक लोक ओकरा नइ बुझता तँ गाम समाजक महत्ते की भेल। तोहूमे जखन जिज्ञासा करए आएल छी आ मनक बाते नहि बुझि पएब ताबे आगूक विचारे की दए सकै छिऐन। मुदा तैयो रामखेलावन भाय बजला-

“पुरना इतिहासकेँ कनी संक्षेपमे कहियौ, काका। जइसँ वर्तमान आ भविष्यक विचार करैक अवसर भेटए।”

रामखेलावन भाइक विचारसँ विचार मिलबैत घनश्याम काका बजला-

“बौआ राम, पाँच भाए आ दू बहिन छी से तँ देखिते छह।”

रामखेलावन भाय- “हँ, से तँ छीहे।”

घनश्याम काका- “एक बहिन आ दू भाँइ जेठ बाँकी दू भाँइ आ एक बहिन छोट अछि। बहिनो आ दुनू भाँइयोक बिआह-दान पहिने भेल। बहिन सासुर चलि गेल आ दुनू जेठ भाय अपन परिवारक संग भीन भऽ गेला। माए-बाबू आ चारू भाए-बहिनक परिवार एकठाम रहल। ओही परिवारक जुआकेँ घीचए लगलौं। दुनू भाँइयोँ जवान भेल आ बहिनोक बिआह भेल। ताबे अपनो दूटा सन्तान भेल।”

बिच्चेमे रामखेलावन भाइक मुहसँ निककलैन-

“बाह!”

‘बाह’ सुनि घनश्याम कक्काक मन आरो उत्साहित भेलैन। उत्साहितो केना ने होइतैन, केहेन परिवारक जुआ कान्हपर लए केते दिन खींचलौं, यएह ने छी जिनगी आ जिनगीक पुरुषार्थ। ओना जिनगीक आगूओ बहुत रास जिनगी अछि आ पाछुओ बहुत रास ऐछे, मुदा ओही बीच ने अपनो केतौ सीमा-सरहद अछि।

घनश्याम काका बजला-

“बिराटनगरक परसादे माइयो-बाबूकेँ पार-घाट लगौलिऐन, दुनू भाँइयोकेँ आँखि-पाँखि बना देलिऐ आ बहिनोकेँ बिआह कऽ ठौर धरा देलिऐ।”

जेना कितावक कोनो पाराग्राफ पढ़ला पछाइत साँस छुटैए तहिना रामखेलावन भाइक साँस छुटलैन। बजला-

“यएह ने छी जिनगी!”

ओना रामखेलावन भाय सफल जिनगीक दृष्टिसँ बाजल छला मुदा घनश्याम कक्काक मनमे असफल जिनगी नाचए लगलैन। तँए जेहेन खुशी जगबैक दृष्टिसँ रामखेलावन भाय बाजल छला से खुशी घनश्याम काकाकेँ नहि जगलैन। बदरियाएल मेघ जकाँ मेघौन मेघ

मनमे नाचए लगलैन तँए बदलैत परिवेशमे घनश्याम काका बजला-

“मुदा..?”

‘मुदा’ सँ ने पहिने किछु घनश्याम काका बजला आ ने पाछूए किछु बजला जइसँ रामखेलावन भाइक मन चोन्हियेलैन। चोन्हियाइते मनमे उठलैन- चेतना तँ कर्मसँ जगै छै आ कर्म चेतनासँ जगै छइ। भरिसक अहीठाम घनश्याम काकाकेँ रस्ता छुटलैन। मुदा से अपने थोड़े अहिना बुझि सकै छी। ओकर जड़ि तँ घनश्यामे कक्काक जिनगी आ विचारमे छिपल छैन...।

रामखेलावन भाय बजला- “काका, नइ बुझि पेलौं जे ‘मुदा’ की कहलिऐ?”

रामखेलावन भाइक प्रश्न सुनि घनश्याम कक्काक मन घनघोर घटाक बीच घनघनाए लगलैन। मुदा अपनाकेँ समटैत बजला-

“बौआ, एक नजैरसँ देखै छी तँ जिनगीमे केतौ गड़बड़ नइ बुझि पड़ैए मुदा लगले ईहो तँ ऐछे जे हमरा सन लोकक जिनगी केहेन हेबा चाही आ केहेन बनि गेल अछि।”

घनश्याम कक्काक टुटैत जिनगीसँ विचारमे घटबी आबि रहल छेलैन मुदा से मुहसँ निकैल नहि रहल छेलैन। जिनगीक रेह तँ सुइयोक रेहसँ मेही होइत अछि किने। ओकरा पकड़ैले तँ मेही नजैरक जरूरत ऐछे, मुदा ओ तँ औत मेही बात बुझने। से तँ आबि नहि रहल अछि..!

महियबैत रामखेलावन भाय पुछलखिन-

“काका, नीक जकाँ बात नजैरपर नहि चढ़ि रहल अछि। तँए कनी अपने मुहेँ कहियौ जे चूक ने ते केतौ भेल।”

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम काका मनाकाशमे घुमए लगला। जइसँ कखनो बेटापर तामस उठैन तँ मने-मन

बड़बड़ाए लगैथ जे बेटा सब गद्दार निकलल, माए-बापकेँ छोड़ि बहुक पाछू बेहाल अछि। लगले पुतोहुपर नजैर जानि तँ मन बड़बड़ाए लगैन जे चूक अपने भेल। दहेजक खातिर कोन-कहाँ परिवारमे पड़ि गेलौं। जइ परिवारक बेटीकेँ माए-बाप एतबो ने सिखौलक जे बौआ, माता-पिताक सेवा पितृऋृण चुकाएब छी, तँए ओकरा जरूर चुकबिहह। मुदा लगले अपनापर नजैर पड़ैन तँ बुझि पड़ैन जे आइ जँ सरकारी नोकरी केने रहितौं तँ जरूर पेंशन भेटैत। बेटा-पुतोहु जँ लगमे नहियोँ रहैत तैयो एकटा नोकर राखि लइतौं, वएह सभ सेवा करैत। मुदा सेहो ने भेल!

..ठेहियाइत-ठमकैत घनश्याम काका बजला-

“बौआ राम, समाजमे अहाँकेँ हम सभसँ ऊपर बुझै छी। किएक तँ हमरो सन निरीहसँ निच्चाँ उतरल अपन पितियाइनकेँ अहाँ पार-घाट लगेलौं।”

रामखेलावन भाय मुस्की दैत बजला- “काका, हम हुनकर पार-घाट थोड़े लगौलिऐन, अपन कर्तव्य केलौं। समाजक लोक भेने समाजक प्रति किछु दायित्व तँ होइते छै, ओ दायित्व पूर केलौं।”

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम कक्काक मनक करिया मेघ जेना थोड़ेक छँटलैन। ओना, छँटलैन चान-सुर्जसँ थोड़े हटि कऽ मुदा सोलहन्नी नहि चौअन्नी मन जरूर बिहुसलैन। बिहुसते बजला-

“बौआ, तोरा सन बेटा जँ हमरो समाजमे जन्म नेने रहैत तँ हमरो तोरे पितियाइन जकाँ सद्गति होइत।”

घनश्याम कक्काक विचार सुनि रामखेलावन भाइक मन सहैट कऽ लग पहुँचैत बाजल- “काका, समाजक बीच समाजकेँ छोट करि कऽ बुझै छी तँए मनमे कनी झलफली अछि। मुदा समाजकेँ जँ

नमहर बुझि देखब तँ केतौ संशय नहि बुझि पड़त।”

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम काका नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस छुटिते जेना मन खनहन भेलैन। बजला- “बौआ राम, एकटा बात कनी-कनी मनमे उठि रहल अछि।”

जिज्ञासु बनि जिज्ञासा करैत रामखेलावन भाय बजला- “जे बात मनमे उठए ओकरा केकरोसँ नुकाबी नहि। खण्डने-मण्डनक ई दुनियाँ छी। जे जेतेक अपन जिनगीकेँ खण्डन-मण्डन करैत चलत ओकर जिनगी ओतेक फरीच होइत जेतइ। नीको आ अधलोमे। दुनूक दू दिशा छै, जे देश-दुनियाँक भ्रमण करबैए।”

ओना, विचारक दौड़मे घनश्याम कक्काक मनमे बेसी चुभलैन, किएक तँ अपनो जिनगी भरि उपदेशे बँटलैन जइसँ शब्दक जाल कनी-कनी मनमे फरीच भऽ गेल छेलैन। तोहूमे रामखेलावन भाइक सह भेटबे केलैन। सहैट कऽ घनश्याम काका रामखेलावनक मनक लग पहुँच बजला-

“बौआ रामखेलावन, किछु विचार मनमे रहि गेल से बजैले उबिया रहल अछि।”

मुस्की दैत रामखेलावन भाय बजला- “काका, रदक जेतेक अन्न निकैल जाएत ओतेक मन हल्लुके हएत। तँए जे अछि ओकरा उगलिये दियौ।”

रामखेलावन भाइक विचार सुनि घनश्याम काका पहिल उल्टी केलैन- “बौआ, जिनगी भरि परिवारक भरण-पोषण करैत एलौं मुदा परिवारजनसँ जेते लग रहैक छल से नइ रहलौं।”

घनश्याम कक्काक विचार सुनि रामखेलावन भाय बजला- “मूल्यवान विचार अपनेक भेल।”

घनश्याम काका बजला- “बौआ, पिता बेटा-बेटीक खाली

जनमदते नहि, प्रथम गुरु सेहो होइ छैथ, मुदा से नहि निमैह सकल। कमसँ कम बेटो-बेटीकेँ अपना लग किछु दिन राखि पितृ धर्मक पालन करितौं, से नइ भेल!”

चेतौनी दैत रामखेलावन भाय बजला- “काका, जँ अहाँकेँ अखनो जिनगी भार बुझि पड़ए तइले श्रवण जकाँ कान्ह अड़ौने छी। मुदा...।”

रामखेलावनक ‘मुदा’ सुनि घनश्याम काका चौंकला जे भरिसक ठनकाक इजोत हएत। बजला- “बौआ राम, अखनो धरती धरमात्मासँ भरल अछिए मुदा नजैरक दोष परिवार समाजकेँ चिन्हैमे वाधक सेहो अछिए।”

घनश्याम कक्काक विचार सुनि रामखेलावन भाय बजला-

“काका, बेटाकेँ बापे ने बेटपन सिखौत, चाहे पिते ने पुतपन सिखौत। ठाढ़े होइत काल ने बच्चाकेँ नानी-माए ‘लड़े-लड़े’ कहैत कोरामे लइए। तखन?”

मुस्की दैत घनश्याम काका कबड्डी खेलक सर्ड़ी दैत बजला-

“ओहन-ओहन जे महापुरुष सभ भेला जे बिआहे ने केलैन ओ कहाँ कहियो परिवार आकि समाजक उपकारक आशा केलैन। मनुक्ख योनिकेँ कर्मयोनि सेहो कहल जाइ छै, तँए अपन कर्तव्या-कर्तव्यकेँ ठेकनबैत ने चलए पड़ै छइ!”

हँसैत रामखेलावन भाय बजला- “जनिहे मियाँ धुनै बेरिया।”



शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017

छातीक हार

भादो मासक अन्हरिया पखक आइ अष्टमी छी आ आइये कृष्णाष्टमी सेहो छी। काल्हि पाँच बजे साँझेमे राधाकृष्ण स्थानक अतिरिक्त आठ-दस ठाम गामोमे लॉडस्पीकरक हॉरन ऊपर-निच्चाँ अकासमे टँगा गेल। ओना किछु बर्ख पूर्व तक कृष्णाष्टमी स्थाने टा पर उत्सवक रूपमे होइत छल मुदा से ऐ बेर बहुत आगू बढ़ल। ऐ बेर गामे उत्सवक रूपमे बदलल जकाँ बुझि पड़ैए। रंग-रंगक गीत–कृष्णजीक जन्मसँ लऽ कऽ रास लीला तक–जहिना अकासमे उठि रहल अछि तहिना मैथिली-भोजपुरी गीत सेहो पसरल अछिए। सभ सभकेँ दाबियो रहल अछि आ दबाइयो रहल अछि। जहिना मचानक ऊपर लत्ती-पर-लत्ती–माने एकरंगक वस्तुक लत्तीपर दोसर रंगक वस्तुक लत्ती–चढ़ि नाचए लगैए आ तर पड़ल लत्ती अपन जान अरोपि जीबतो रहैए आ ऊपरका लत्तीक फूल-फड़केँ चाटि बाँझ सेहो बनबैत रहैए तहिना गामक राग-तानक हाल भेल अछि।

एकर माने ई नहि जे गामक लोकमे उत्साहे ने अछि, हर्खसँ हरखितो अछि आ उत्-सँ उत्साहितो अछिए। उत्साहित तँ एतेक अछि जे ढेरबा-जुआन बच्चिया सभ जखने सुनलक जे कृष्णाष्टमी छी तखनेसँ उत्साहित भऽ दिन भरिक उपास करब मनमे रोपि लेलक जइसँ कियो परसुए सहि गेल, कियो काल्हि सहल आ कियो आइ सहत, माने आइ उपास करत। ओइ निरीह बच्चिया सभकेँ किए बोध रहतै जे उपास करैक विधि-विधान की अछि, तँए कि

ओकरो अपन विधि-विधान बनबैक अधिकार नइ छै सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। कहलो किए जाएत, मिथिलाक माए-बापक संस्कार पाबि बेटा-बेटीकेँ अभावमे उपास करैक अभ्यास बनियेँ गेल अछि किने। तँए आठो-दस बर्खक नेना उपास करैक, रोजा रखैक साहस कइये नेने अछि।

आह! केहेन ओ राति, औझुके जकाँ रहल हएत जे बंगालक खाड़ीसँ उठल चक्रवात देशक एक हिस्साकेँ लपेटलक। लोक केतौ बाढ़िमे डुमि मरैए तँ केतौ मेघ फाटि बरखा भेने आ केतौ ठनका खसने मरिते अछि, एहने ओ अन्हरियाक राति छल जइमे वासुदेव अपन कोरामे कृष्णकेँ रखि चलैत रहला। उत्सवक महौल रहने सड़क परहक चापाकलक चलती सेहो आबि गेल। किए ने औत, यमुना नदीमे गोपी सभ जहिना पानि भरै काल कि नहाइ काल एकठाम होइत छेली तहिना ने कलोपर आइ भीड़ लागल अछि...।

भीड़ देखि भुखनी काकी सड़केपर बाल्टीन राखि बजली-

“आजुक मेला केहेन सोहनगर बुझि पड़ैए.!”

रतौलवाली भौजी टिपलैन-

“महकारीक फड़ सन।”

‘महकारी’क गुण भुखनी काकीकेँ बुझले ने रहैन। बुझल ऐ दुआरे नहि रहैन जे हुबगर परिवारक पलित-पोसित छैथ, तँए महकारीसँ भेँट नहि छेलैन। ओना गाए-महींसक भाँजमे सेहो कहियो ने रहली तँए महकारीसँ हटल छेलीहे।

दुलारपुरवाली कनियाँ टेढ़ आँखिये बघुआ-बघुआ रतौलवाली भौजीकेँ देखैत रहली मुदा बजैक साहस नहि केलैन। साहस नइ केलैन आकि साहस भेबे ने केलैन ई दीगर भेल। दीगर ई भेल जे भऽ सकैए जेठ-छोटक विचार मनमे जगि गेल होनि वा अपने मन रोकि

देने होनि जे जखन दू गोरेक बीच गप-सप्प चलि रहल अछि तखन बीचमे बीचमाइन नीक नहि। दुनू गोरेक विचार सुनब जँ रूचिगर लागत तँ सुनब नहि तँ हटि कऽ चलि जाएब।

तैबीच भुखनी काकी बजली-

“से की हइ रतौलवाली कनियाँ?”

रतौलवालीकेँ जेना ठोरेपर रहैन तहिना बजली-

“गाम-गाम मेला बढ़ि गेल आ मेल घटि गेल।”

रतौलवालीक बोल दुलारपुरवालीकेँ ने मीठे लगलैन आ ने तीते, तँए रीबरिबाइन जकाँ मुँह चिकुरि गेलैन। ओना दुलारपुरवाली कनियाँ अपन संगतुरियामे सरदारी नेने छैथ तँए जखन कखनो पटकाए लगै छैथ तँ गुड़-खिचड़ीकेँ घी-खिचड़ी कहि अपनाकेँ बँचबैक गुण छैन्हे। तँए गर अँटबैक भाँज लगबैत दुलारपुरवाली कनियाँ चुप-चाप दुनू गोरेक गप-सप्प सुनए लगली।

ओना, रतौलवाली भौजी बच्चेमे शिकार पकैड़ैयोक आ खेलैयोक लूरि सीख नेने छेली। तेकर कारण अछि जे कमला कातक गाममे हिनकर जन्मे भेल छेलैन। वीरुदावनक बोन जकाँ बोनाह गाम ऐछे तँए बोनैया जानवरक उपद्रव रोकैक खगता सभ परिवारमे अछिए। ओना पितो शिकारी रहथिन, तँए ई बात ओ बुझैत रहैथ जे ‘बेटीकेँ बेटा-बरबैर अधिकार भेटौ’ से सोझे भखने तँ हएत नहि, ओ तँ जिनगीक पद्धतिमे छिपल अछि। तँए बेटीकेँ जंगली जानवरक ओगरवाहीक भारे सुमझा देने छेलखिन।

सोझमतिया भुखनी काकी, सोझे मुहेँ रतौलवाली भौजीकेँ पुछलखिन- “कनियाँ, अहाँक बात नइ बुझलौं?”

ओना, रतौलवाली भौजी बुझै छेली जे भुखनी काकी हमर बात नीक जकाँ नइ बुझि रहली अछि। मुदा आगूमे ठाढ़

दुलारपुरवाली दुआरे गढ़ि-गढ़ि कऽ अपन सभ बात बजैत रहली।

दुलारपुरवाली सेहो ने कलपर सँ हटली आ ने किछु बजबे केलीह, मुदा गजर-गजर सुनितो नइ छेली सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

तैबीच ठिकिया कऽ रतौलवाली भौजी बजली-

“किसनामुट्ठी पाबैनमे लोक चित्तचोरबेक उपास करैए किने। से जाबे चोरक माएकेँ लोक नइ चीन्हत ताबे चोर केना पकड़ाएत। जइ दुआरे मेला कुमेला आ मेल कुमेल भऽ गेल अछि।”

जेना दुलारपुरवालीक छातीक हार हरण भऽ गेल होनि तहिना बाल्टीन उठबैत बजली-

“मेला कुमेला हुअ आकि मेल कुमेल मुदा झमेल नइ बढ़ल अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तँए झमेल झमेलिया जानह, सुमेलिया अपन बाट धरत..!”

कहैत कलपर सँ आँगन दिस दुलारपुरवाली बढ़ली। दू लग्गा आगू जखन बढ़ली तखन रतौलवाली भौजी, दुइए गोरेक सुनै-जोकर आवाजमे भुखनी काकीकेँ पुछलखिन- “काकी, ईहो उपास करै छैथ किने?”

सोझमतिया भुखनी काकी, बजली- “कहिया उपास करै छी आ कहिया नइ करै छी, सएह ने बुझै छी।”

हरिजन परिवारमे जनमल रीतलाल मैट्रिक पास केलक। साधारण परिवारमे जन्म भेने नोकरीक पाछू दौग-धूपमे नइ सकल। तँए नोकरीसँ वंचित रहल। बर-बँटाइ करैबला परिवार रहने बाप-माए एतेक अपन इज्जत बेटाकेँ बुझै लगल जे अनकर खेतमे काज करए नइ जाए दइ छल। अपने जे बँटाइ करै छल, मात्र तेहीटा मे जाइ छेलइ। माने केकरो अनका ऐठाम काज करए नइ जाए देलक।

ओना, अपने दुनू परानी अनको खेत-पथारमे बोनि-बुत्ता करैत छल मुदा तेकरा ओ अधला नइ बुझैत। परिवारक उपार्जनो तँ वएह छेलै जे सभ दिनसँ करैत आबि रहल छल।

समय ससरल। ओना, रीतलाल जखन मैट्रिकेमे पढ़ैत छल तहिये बिआह भऽ गेल छेलइ। नीक परिवारमे बिआह भेलै, माने अपनासँ अगुआएल परिवारमे। रीतलालक ससुर लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक। हुनकर अपनो बिआह हाइये स्कूलमे पढ़ै-दिनमे भेल छेलैन आ बिआहक थोड़बे दिनक पछाइत सरकारी स्कूलक शिक्षक बनि गेला। पढ़ै-लिखैक संस्कारो आ बातो-विचार परिवारमे थोड़ेक अगुएलैन। भिनसुरका समयमे कारीब छअ-सात बजे रीतलाल गामक चौहद्दी बान्हि, माने अपन डीलरीक क्षेत्र टहैल-बुलि घरपर पहुँचल।

नोकरी-चाकरी नइ भेने हारि-थाकि कऽ रीतलाल खेती-बाड़ीक काज शुरू केलक। आठ बर्ख धरि जखन बँटाइ खेतमे समय बितौलक तखन हरिजन कोटासँ डीलरी–राशनक सरकारी दोकान–क लाइसेंस बनौलक। डीलरीक लाइसेंससँ नव आशाक किरण रीतलालक जिनगीमे पहुँचल। दस वार्डक पंचायतमे चारिटा डीलर। जइमे तीनटा पहिनेसँ छल आ चारिम रीतलाल भेल। लाइसेंस बनौलाक साल भरिक पछाइत एक वार्डक डीलर रीतलाल बनि गेल। बाँकी तीन-तीन वार्ड पुरना तीनू डीलरक हिस्सामे रहल। डीलरीक आमदनी रीतलालक अपनो मनमे आ परिवारोक मनमे नचिते छल। आशा-आशीपर दिन बीतैत गेल, बीतैल गेल।

छह मासक पछाइत रीतलालक लाइसेंस सीज भऽ गेल। अनाड़ी रीतलाल रहबे करए, केतए की भेल से अखनो तक वेचारा नहि बुझि पेलक। काल्हिये चारि बजे ब्लौकसँ चिट्ठी भेटलै।

ओना, रीतलाल बुझै छल जे पछुआएल लोकक लूट सगतैर होइते छइ। मुदा जखन बेसी आमदनी नजैरपर पड़लै तखन मनमे आशा जागिये गेल छेलइ। जखने घरसँ निकैल आगू बढ़ल तखने चाह-पानक खर्च, चन्दा-चिट्ठाक खर्च सेहो बढ़बे करत।

हाथमे चिट्ठी अबिते रीतलाल पढ़लक। पढ़ि कऽ ब्लौकसँ निकैल सड़क परहक पीपरक गाछक निच्चाँमे साइकिल लगा जड़िक सिरपर बैस विचारए लगल जे आब की करब..?

चोटसँ रीतलालक मन चोटाएल छेलैहे, चोटाएल मनमे जेहेन विचार उठै छै ओहने विचार सभ उठए लगलै- ओह! अनेरे कोन फेरामे पड़लौं जे डीलरीक लाइसेंस करेलौं। ऐसँ नीक भने दुनू परानी अपन खेती-पथारीक काजमे लागल रहै छेलौं, जेहेन आ जेते करै छेलौं तेहेन आ तेते तँ बिसवासू उपज/आमदनी होइते छल। हरहरो-खटखट तँ नइ होइ छल। जेहेन आमदनी होइ छल तेहने बनि चैनसँ तँ रहै छेलौं। अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ि गेलौं। गाम-घरसँ लऽ कऽ जेतेक दूरक दुनियाँ अछि तइमे सभ कि दुश्मन कोनो आइयेक छी, आइ तँ राशनक बहाना छइ। जँ दुश्मनक मन इष्टक रहितै तखन तँ ओ पहिने विचार दइतए किने। जेतए जे त्रुटि अछि ओकरा पूराए लइतौं। मुदा से नइ भऽ सकल। कोटाक आमदनी हाथसँ निकैल गेल। गामक लोकसँ लऽ कऽ ब्लौक ऑफिस होइत कोट-कचहरीक सबहक मुँह भरब असान थोड़े अछि..!

एकाएक रीतलालक मन उनैट कऽ अपना दिस बढ़लै। बढ़िते समोह लगि गेलइ।

माथपर दुनू हाथ देने पीपरक गाछक सिरपर बैसल रीतलाल दुनियाँक रीत देखए लगल। मनमे उठलै- यएह छी जिनगी आ यएह छी जिनगीक खेल..! जेते लोक एकपेटू भऽ गेल अछि ओकर

मुकाबला हमरा बुते थोड़े हएत। जरूर ई सभ जहल कटौत। जखन जहल चलिये जाएब तखन इज्जते की रहत..!

'इज्जते की रहत' लग अबिते रीतलालक मन ठमैक गेलइ। ठमैकते मनमे दोसर विचार जगलै। जगलै ई जे जहल जहिना इज्जत लइ छै तहिना इज्जत दइतो छै किने। मुदा केकरा दइ छै आ केकरा लइ छै ओ भिन्न बात अछि। जहल जखन इज्जत दइतो छै आ लइतो छै तखन किए ने लइक रस्ता पकैड़ आगू बढ़ी। मुदा ब्लौकसँ आगू देखलो तँ नहियेँ अछि।

एकाएक रीतलालक मन आगू बढ़ल। अनेरे पीपरक जड़िमे माथा हाथ देने बैसल छी। सुतनिहारक जिनगी सुतै छै आ जगनिहारक जिनगी जगै छइ।

उठि कऽ साइकिल पकैड़ रीतलाल घरमुहाँ भेल। दस डेग जखन आगू बढ़ल तँ मनमे उठलै- कोनो कि हमहीं एहेन पहिल डीलर छी जे ऐ फेरामे पड़लौं हेन। केतेको डीलर पड़बो कएल आ उनटा कऽ फेर डीलरी लेबो केलक। सभ तँ चिन्हरबे लोक छी। तहूमे अपने जाति-बेरादर बेसी अछि। से नहि तँ काल्हि फुदन डीलरसँ भेँट करब। ओ कोट-कचहरीक रेहल-खेहल लोक छैथ आ अपनो अनुभव छैन्हे जे केना डीलरी घुमलैन। घरपर रीतलाल पहुँचैत-पहुँचैत विचारि नेने छल जे जखन परिवारमे डीलरीक काज अपना सिरे करै छी तखन नीक-बेजाइ चोटो अपने सिर राखब। जखने माइयो-बाबू आ घरोवालीक कानमे पड़त तखने ओहो सभ चोटेबे करत। तहूमे परिवारक धनक हार टुटि गेल अछि। तँए परिवारमे केकरो लग किछु नहि बाजब। जखने बाजब तखने अनका जे हौउ, जहलक नाओं सुनिते कनैत-कनैत माइक औरुदा पाँच बर्ख कमि जाएत।

रीतलालक मनमे लगले ईहो शंका भेलै जे समय-साल बिगैड़ गेल अछि। जँ कहीं जहल गेलौं तँ घरोवाली रहत कि नहि रहत। देखै छिऐ जे तीन-तीन–चरि-चरिटा धिया-पुतावाली सभ घर छोड़ि पड़ा जाइए। खाएर जे हौउ, जखन उक्खैरमे मुड़ी पड़ि गेल अछि तखन मुसराक डर केने थोड़े काज चलत।

एक तँ कृष्णाष्टमीक भोर दोसर भादो मास, रातिमे कृष्ण भगवानक जन्म हेतैन। भरि दिन आ भरि राति धूमधाम रहत।

गामसँ घुमि-फीरि जखन रीतलाल अँगनाक डेढ़ियापर पहुँच रहल छल, तखने रीतलालक पत्नी सेहो आँगनसँ निकैल डेढ़ियापर एली।

जिनगीक टुटल आशसँ रीतलालक मन ओहन फूल जकाँ मन्हुआ गेल छेलै जेकर डारिये टुटि गेल रहैए। मन्हुआएल मन रहने रीतलालक मुँह सेहो मौला सिकुरि कऽ उदास भऽ गेल छल। ओना, रीतलाल अपन मनकेँ सक्कत बनैबते छल। मनमे उठै छेलै जे जखन जिनगीमे ठनका खसिये पड़ल तखन ओकर निमरजना केना हएत से ने सोचब आ सोचि कऽ रस्ता धरब। तखने ने जानो बँचत आ फेर डीलरियो भेट जाएत जइसँ परिवारकेँ आगू-मुहेँ उठाएब।

डेढ़ियापर पहुँचते रीतलालकेँ पत्नी पुछलकैन-

“कोन बोनमे बोनाएल छेलौं जे छातीक हार टुटि गेल?”

ओना, बुधनी ऐ बातकेँ जनै छेली जे सभ दिन भोरे टहैल-बुलि कऽ गामक हवा-पानि लइते छैथ। मुदा कृष्ण जन्मोत्सवक मेला ने आइ छी। बाजा-गाजासँ गाम गनगनाइए। बाल-बोध आ ढेरबा-सियानसँ लऽ कऽ चेतन-सँ-बुढ़ धरि आइ सभ ने उत्साहित छैथ। की पुरुख, की औरत, सबहक मन उत्साहसँ उत्साहित छैन्हे। ओहने उत्साहमे उत्साहित भऽ बुधनी बाजल छेली।

एक तँ भिनसुरका समय तैपर पत्नीक बोल सुनि रीतलालक मन तड़ैप उठल। तड़ैपते मुहसँ फुटल-

“हार तँ हारे छी, चाहे ओ देहक हार हुअए कि मनक हार हुअए आकि धनक हार हुअए जे टुटि गेल ओकरा फेरसँ सेरिया सुधारि कऽ पहीरि लेब। खाली हड्डी बँचल रहक चाही। से तँ बँचल अछिए। तखन हार टुटब केना भेल। हँ, एते भऽ सकैए जे केतौ छहैक कऽ कनी-मनी छिटैक गेल हुअए आकि लूटा गेल हुअए।”

अपना जनैत रीतलाल पत्नीकेँ उत्तर दए देलैन मुदा कृष्ण जन्मोत्सवक मेलाक उत्साह रहने बुधनीक मन नइ भरलैन।

तैबीच अपन रणभूमिक रूप बनबैत रीतलाल फेर बाजल-

“जाबे हम नहाइ-सोनाइ छी ताबे अहाँ जलखै तैयार करू।”

जलखैक नाओं सुनि बुधनी बुझि गेली जे केतौ कोनो काजे जाएब छैन। तँए बिना किछु आगू बजनहि बुधनी अपन काज दिस डेग बढ़ौली। ओना, रीतलाल अबोध-अनाड़ी नव डीलर, डीलरीक कारोबारकेँ नीक जकाँ नहि बुझैत जइसँ मन हको-परास भइये गेल छेलैन। अन्हार-इजोतक बीच बसल दुनियाँ अछि तइमे रीतलालकेँ सोल्होअना अन्हारे बुझि पड़ै छेलैन। मुदा अन्हारोमे तँ लोक टप्पा-टोइया दइतो जीबऽ तँ चाहिते अछि।

पतिक रूप देखि बुधनीक मनमे सेहो सिहरन जागिये गेल छेलैन जइसँ मन कनी-मनी भरियाएब सोभाविके छल। ओना, बुधनीक मनमे ईहो उठैत रहैन जे पतिसँ पुछि लेलापर मनक भार घटत। मुदा फेर अपने मनमे ईहो उठि जानि जे जँ कोनो उदगारक बात रहैत तँ ओ अपने उपकैर कऽ कहितैथ। तहूमे आइ कृष्णाष्टमी छी। भरि वृन्दावन सोहर-सँ-बधैइया तक अनघोल होइते अछि।

जलखै खा रीतलाल मन मारि फुदन ऐठाम विदा भेल।

फुदन बी.ए. पास ग्रेजुएट डीलर छैथ। ओना, घरक आर्थिक दशा ओतेक नीक नहियेँ छैन, मुदा रीतलालसँ बहुत नीक छैन्हे। खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ बच्चा सभकेँ जेनरल शिक्षा धरिमे कोताही नहियेँ छैन। ओना, पिता कोसी प्रोजेक्टमे किरानीक नोकरी करैत सेवा निवृत्त भेल रहथिन। जखन फुदन बी.ए. पास केलक तखन पिताक इच्छा रहैन जे फुदन सेहो नोकरी करए, मुदा से भेलैन नहि। ओना, पिताक विचार फुदन एक शर्त्तपर नोकरी करब मानि नेने छल। शर्त्त ई जे घूसहा नोकरी पौनिहारकेँ घूसखोर बनब अनिवार्य ऐ दुआरे भऽ जाइ छै जे मोट रकमकेँ भरपाइ करए पड़ै छइ। ओना, पिता घूस दइले तैयार भेलखिन मुदा फुदन विरोध करैत कहलकैन जे जेते पाइ घूसमे खर्च करब तेतेसँ अपने कारोबार किए ने ठाढ़ करब।

बच्चेसँ फुदन स्वतंत्र विचारक लोक तँए शुरूए अपन जिनगीकेँ चिन्हैक पाछू लागि गेल जइसँ आत्मबल भेटैत गेलै आ आत्मबली बनैत गेल।

रीतलालकेँ देखिते फुदन सासुरक अंगिते बजला-

“साढ़ू, अहाँक लाइसेंस रद्द कऽ देलक..!”

फुदनक बात सुनि रीतलाल चौंकल। चौंकैक कारण भेल जे काल्हि चारि बजेमे तँ चिट्ठीए भेटल तखन फुदन बुझि केना गेला। मुदा सत्य बातकेँ छिपौने नोकसान होइते अछि। मन मसोसि कऽ रीतलाल बाजल-

“हँ।”

अगरजानी जकाँ फुदन बजला-

“चिन्ता-फिकीर करैक बात नहि अछि। तखन तँ किछु दिनक लफरा भइये गेल।”

तही बीच सुवधी–फुदनक पत्नी–चाह नेन दरबज्जापर पहुँचली। सुवधीक चेहरा फूल सन खिलल। खिलल चेहराक कारण छेलैन जे पतिक संग संगिनी-पतिक बीच छेली तँए कमल फूल जकाँ डगडगी छेलैन्ह। रीतलालपर नजैर गड़ा सुवधी बजली-

"आइ किसना-मुट्ठी पाबैन छी, तँए दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ बिना भोजन केने जाएब उचित नहि।"

हारैत रीतलालक मन रहबे करइ, बाजल-

"रहैये ले तँ एलौं हेन। अपना तँ गौंआँ-घरूआसँ लऽ कऽ अनगौंआँ तक उजाड़ै पाछू लगले अछि।"

चाह पीब फुदन उठैत बजला-

"साढ़ू, ताबे अहूँ सढ़ुआइनसँ गप-सप्प करू, हमहूँ एकटा काज सम्हारि लइ छी। पछाइत निचेनसँ गप-सप्प करब। एते मनमे बिसवास बना लिअ जे हएत किछु ने, लाइसेंस भेटबे करत, खाली किछु दिनक लफरा भेल।"



शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017

उमेरक लेहाज

जेठ मासक इजोरियाक अष्टमी दिन। ओना तिथि-मितिक हिसाबसँ मास उतरोन्मुख उतैर गेल मुदा रूप-गुणक हिसाबसँ चढ़न्ते दिस गनगनाइत बढ़ल जा रहल अछि। माने ई जे जहिना मनुक्खक जिनगी अनुकूल सामाजिक आ पारिवारिक वातावरण पेब गनगनाइत चढ़न्त दिस बढ़ैत रहैए आ प्रतिकूल रहने पाछू दिस पछुआइत पाछाँ होइत जाइए तहिना मौसमोक अछिए। मौसमेक अनुकूल मासोक स्थिति स्वत: सएह भऽ जाइए। तिथि-मितिक हिसाबसँ ऐ बेरक जेठ मास तेसरपनमे पहुँच गेल अछि। आइ इजोरिया पखक अष्टमी तिथि छी। मुदा सुर्जक तेजपन ढलान दिस नहि चढ़न्ते दिस चढ़ल अछि। तेकर कारण ई भेल जे पैछला साल चितरा नक्षत्रमे जे दसटा फूही भेल तेकर पछाइत अखन तक एको बून पानि धरतीपर नहि खसल जइसँ धरतीक छाती जरैत-जरैत ओहिना जरि गेल जेना विपैतक मारल केकरो मनमे क्रोधक आगि पजैर जाइ छै आ जँ ओ प्रकृति-निर्मित विपैत रहल तखन तँ ओकरा हलाहल बुझि महादेव जकाँ पीब कऽ पचाइयो लइए मुदा मनुक्ख-निर्मित विपैतकेँ बरदास नहि कऽ पबैए, तहिना ऐ बेरक जेठक रूप बनि गेल अछि। बनबो केना ने करत। तीनटा मौसम–जाड़, गरमी आ बरसात–केँ सभ देखै छी। जाड़क मौसममे जँ खूब ओस-पाला खसल तँ शीतलहरी भेल जइसँ मौसम भरिया कऽ विकराल बनि जाइए। मुदा ओही जाड़क मौसममे जँ ओस-पालाक कमी भेल तँ ओकर रूपे विपरीत भऽ जाइए। पहिल परिस्थितिमे सुरुजो अपन

हारि कबूल कऽ मास-मास दिन मुँह नुकौने रहै छैथ मुदा वएह सुरुज दोसर परिस्थितिमे हँसैत-खेलैत आने मौसम जकाँ माघो मासमे ओहिना मुँह देखबैत रहै छैथ, माने समयपर उगि समयानुसार आगू बढ़ैत अपन लीला धाम पहुँच लीला करिते छैथ। ओना, ई दुनू परिस्थिति दू दिशाक पाशा भेल। जेकर बीचक जे बीचपन अछि ओइमे सइयो-हजारो पाशाक खोल्ही बनले अछि। माने ई जे कोनो दिनक आकि कोनो मासक आइक केहेन मौसम अछि, माने औझुका तारीखमे केतेक ओस वा केतेक पालाक जोग हेबा चाही आ अछि केतेक। जइ जोगमे कमी-बेसी वा समगम नहि भेने सइयो रंगक रोग-व्याधिक लग्न बनियेँ जाइए। अहिना अगहन कहियौ आकि अधियाएल कातिक मौसमक रूप लोक देखए लगैए। ओना, मासे-मास आ दिने-दिनक अपन मौसमक रूप-गुण सेहो अछिए। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे।

ऐ बेरक जेठ आन सालक जेठसँ अनुकूल परिस्थिति पेने अपन अनुकूल जिनगी धारण केनहि अछि। बरखे आ कि जाड़े किए हएत, ओकर तँ मास छी नहि। ओना, हवे-बिहाड़ि भेने जखन बरखा होइए, जेकरा बिहरिया बरखा कहै छिऐ–सेहो नहियेँ हएत ओहो नहियेँ कहल जा सकैए मुदा भइये जाएत तेकरो कोनो ठर-ठेकान छै सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे अछि, जेते ठेकानल-बेठेकानल अछि से अछि। मुदा ऐ बेरक जेठ सभकेँ मन रहबे करत जे बहुत दिनक पछाइत एहेन जेठ आएल।

गाए-महींस पोसनिहार आठ बजेसँ पहिनहि अपन माल-मवेशीकेँ छाहैरक ठौर धड़ा दइ छैथ। तहिना भानस केनिहारि सेहो नअ बजेसँ पहिनहि अपन चूल्हि-चौका सम्हारि ऐ दुआरे लइ छैथ जे जरौन मास छी, कखन जरा देत तेकर ठेकान नहि। मुदा ई तँ ठेकानै पड़त जे जहिना जाड़सँ वा पानिक ठण्ढसँ जड़ौन लगैए तहिना

आगियो ने जरौन छीहे। गामक-गामकेँ क्षणेमे क्षणाक करैत घर-दुआरकेँ जारक जारैन बना उला-पका लइए। खाएर जे करैए मुदा दुनूक जड़ौन एक-दोसरक विपरीत पाशापर नइ बैसल अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ऐठाम एतबे जे सोल्हो सिंगार, बत्तीसो आसन आ चौंसैठो कलासँ सुर्ज अपन सुर्जपन देखा रहल छैथ।

जाड़ आ गरमीक अपन-अपन लक्षण-करम छै तँए दुनू बेछप अछिए। मुदा तेसर जे वर्षाक मौसम अछि ओ तँ चाहे मौसमक उभय लिंग छी चाहे किछु ने छी। मनुक्खमे जहिना हिजरा होइए तहिना अछि। ओना, किन्नरकेँ हिजरा सेहो कहल जाइए मुदा ऐठाम जाति-विशेष नहि, ओकर लक्षण-करमसँ मतलब अछि। किन्नर तँ ओतेक अगुआएल सभ दिनसँ रहला अछि, जे संगीत कलासँ जुड़ल रहला आ अखनो छैथ।

बरखा-मौसमकेँ ऐ दुआरे हिजरा कहि रहल छी जे बेठेकान मौसम अछि। जेना भादवक लिअ, जखने झाँट-हवा आ झमटगर पानि एकठाम भऽ बरिसए लगैए आकि जाड़क जड़ौन आबए लगै छै जइसँ जाड़ होइए। मुदा लगले मेघोकेँ बदलने आ हवोकेँ असथिर भेने, गुम-गुमौआ गरमी सुर्जक रौद पेब देहेटा नहि मनोकेँ तँ जरैबते अछि। ओना, भलेँ बरसातक मौसमकेँ हिजरा कहि टारि दियौ मुदा सालक–किसानी जिनगीक सालक–राजा वएह छी। सेहो नइ कहने पक्षपन भेबे कएल।

सालक राजा बरखा मौसम ऐ दुआरे छी जे जँ खूब बरिसल आ धोइ-पोछि कऽ फसलकेँ लऽ गेल तैयो अपना घरमे जमा कऽ लेलक आ जँ नहि बरिसल रौदी भेल तैयो जरा-पका कऽ अपना घर लऽ गेल। दुनू कला तँ ओकरा छइहे। तँए पूजनीय अछिए। ओना पूज्यनीयेक सेहो दोसरो कारण अछि, ओ अछि ओकर खुशपन।

जखन ओकर मन खुशी रहल आ खुशीसँ अपन किरिया-कलाप करैत रहल तखन समय-कुसमयक संग पूरैत उचित-अनुचितक विचार करैत ठेकानि-ठेकानि बरखो वारिस करैए आ रौदो-बसात करैए, एहेन मौसम निरमबैए जइसँ धन-धान्यसँ सालो भरि धरती सजलो रहैत आ गीत-संगीत करैत अपन दिवसो गुदस करबै करैए।

जहिना सालक तीनू मौसममे बरसातक मौसम सालक राजो छी आ हिजरो तेहने उतारक रामपुर गाममे मदनेसर भाय छैथ।

जेठ मासक इजोरिया अष्ठमीक एगारह बजे दिनक समय। ने अपराहणे आ ने भोरराहणे भेल। ओना उचित जँ बुझल जाए तँ ओ भोरराहण भेल। मुदा जहिना कोनो गरीब घरक बच्चा भोजनक अभावमे कुपोषित भऽ रोगा-टटा जाइए वा जुआन-जहान वृद्धपनक रूप पकैड़ लइए तहिना भोरराहणकेँ सेहो भइये गेल छल। माने पाछूए-सँ एहेन रूप बनि गेल छल जइमे सुर्ज फूह खेलैत धरतीक संग वातावरणोकेँ रूपे बिगाड़ि देने छला।

एगारह बजेक समय जागेसर भाय अपन पहिल उखराहाक सभ काज सम्हारि अराम करए ओछाइनपर पहुँच गेल छला। हहाएल-फुहाएल मदनेसर भाय एकटा झोरा काँखमे लटकौने पहुँचला।

जागेसर भाय आ मदनेसर भाय दुनू बेकती गामक स्कूलसँ हाइ स्कूल तकक संगी। तँए संगपना रहबे करैन। जइसँ तीनू शब्दक प्रयोग दुनूक बीच होइते आबि रहल छेलैन। कखनो दुनू भैयारी संगी बनि एक-दोसरकेँ ‘रौ-रौ’क प्रयोग करैथ, कखनो एक-दोसराक पत्नीसँ गप-सप्प करै दुआरे ‘भैया होउ’क प्रयोग करैत छला तँ कखनो अपनासँ छोटो आ अनठियो लग ‘यौ-यौ’क प्रयोग सेहो करैत निमाहैत अखन तक आबि रहल छला। ओना, अखन दुइये

गोरे छला तँए 'रौ-रौ'मे गप होइतैन मुदा से नहि भेलैन। नइ होइक कारण भेल जे जागेसर भाय शान्तचित्त ओछाइनपर अराम करै छला आ मदनेसर भाइक चित्त अशान्त छेलैन। अशान्तक कारण छेलैन जे नहाइये बेरमे बेटो आ पत्नियोक संग तेहेन कटहा-कटही गप-सप्प शुरू भेलैन जे खिसिया कऽ नहाएबो छोड़ि मदनेसर भाय घरसँ पड़ा गेला।

..ओना, जीवनक दूरी दुनू गोरेक बीच बेसी अछि मुदा विद्यार्थीए जीवनसँ मदनेसर भाइक मनमे अगुआ गेलैन जे जागेसर भाइक दरबज्जापर पहुँचैसँ पहिनहि रस्तेपर सँ 'जागे भाय' 'जागे भाय' करैत पहुँचल छला।

एक तँ गरमीक प्रचण्ड रूप रहने मदनेसर भाइक मुँह-कान मौला कऽ करिया गेले छेलैन, तैपर नहेनौं ने छला आ अन-पानि तँ पछुआएल रहबे करैन।

ओना बाजबेसँ जागेसर भाय बुझि गेल छला जे मदनेसर छी, मुदा जिनगीक जे दूरी दुनूक बीच बनि गेल छेलैन तँए तइसँ बेसी धियानमे किछु नहि एलैन।

दलानक ओसार परहक चौकीपर बैस मदनेसर भाय कान्हक झोरा चौकीपर रखलैन। तैबीच जागेसर भाय सेहो कोठरीसँ निकैल ओसारक चौकीपर आबि बैसला। बसिते जखन जागेसर भाय मदनेसर भायकेँ हियासि कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे त्रिशूलसँ बेधित मदनेसर छैथ। त्रिशुलसँ बेथित देह, मन आ बुधि तीनू अक्रान्त छैन। मौसमक प्रचण्ड रूप रहितो नहेनौं ने रहैथ तँए देहक शूल, बेटा-पत्नीक कटाह विचार सुनि पड़ाएल छला तँए विचारक शूल आ बिना अन-पानिक इंजन ढक-ढक करैत रहैन तँए मनक शूल रहबे करैन।

ओना मदनेसर भाय जाबीर शिकारी छैथ। दिनमे एक बेर जँ अनकर अन भेट जाइन तँ चौबीस घन्टा माने दिन-राति पानियोँपर काज चला लइ छैथ। से बेवहारिक रूपमे रहैन। जाबीर शिकारी रहने जहिना नाच पार्टीक बिपटा होइए जे पेन्ट पहीरि पुल्लिंगक पार्ट खेला लइए आ पेन्टेपर साड़ी लपेट स्त्रीलिंग बनि स्त्रीक पाट खेल लइए, से गुण चौंसैठोअना मदनेसर भायमे रहबे करैन। आइ रौतुका भाँजमे पड़ल छला तँए किछु जलथम्हन दिनोमे हेबेक चाही से नइ भेल छेलैन। तेकर कारण छल जे तीनू गोरेक बत-कटावैल भेने खिसिया कऽ मदनेसर भाय पड़ा गेला। ओना जँ बुझी तँ ओ पड़ेला नहि, किएक तँ घर ओहन धाम छी जैठाम चौंसैठो कला सजल रहैए मुदा से घरकेँ जे घर बुझौनिहार छैथ तिनका लेल।

..मदनेसर भाइक जिनगी कौआक जिनगी बनि गेने नीक मकान रहितो मास दिनक कोन बात जे रातिक अदहोसँ बेसी समय अन्तइ बितबै छैथ। तँए घरसँ पड़ेता की, ओ तँ पड़ेलहे भेल...। मदनेसर भाइक चेहराक रूपक अनुमान करैत जागेसर भाय बजला-

"मदन, केतौसँ अबै छह कि जाइ छह?"

जागेसर भाइक मनमे भलैन जे कड़गर रौदमे केतौसँ एला अछि तँए रौदाएल छैथ जइसँ चेहराक रूप उतरल छैन। ओना, जहिना जागेसर भाइक घर रस्ते-कातमे छैन तहिना मदनेसर भाइक घर दोसर टोलक पुवारि भागमे रस्ते-कातमे छैन। जागेसर भाइक बात सुनि मदनेसर मुहसँ तँ किछु ने बजला मुदा मुँहक बिजकीसँ स्पष्ट निकलै छेलैन जे दुनूमे किछु ने। माने ने घरे आ ने बाहरे। किछु ऐ दुआरे नहि जे बाहरसँ तँ अबै नइ छी, आ ने कोनो निसचित जगहपर निसचित काजे जाइये रहल छी। बेटा-पत्नीक कटाह बात सुनि पड़ा रहल छी मुदा से जागेसरकेँ कहबै केना, की कहत।

मदनेसरक मुँहक बिजकनसँ जागेसर भाय बुझि गेला जे भरिसक नहाइसँ पहिने किछु भऽ गेलैन तँए नहाएबो छुटि गेल छैन आ खाएब सेहो छुटि गेल छैन। अखन खाइ बेर अछि तँए मुँह छोहैन करैत जागेसर भाय बजला-

"अखन खाइ बेर अछि मदन, पहिने किछु खा लएह।"

ओना जइ विचारक लोक जागेसर भाय बनि गेल छैथ ओइ विचारे मदनेसर सन लोककेँ खेबाक कोन गप जे दरबज्जापर बैसैयो देब अनुचित बुझै छैथ, मुदा भूखक आगू आचार-विचार कनी कात पड़िये जाइए। किएक तँ गदहो सन जानवर आ उल्लुओ सन चिड़ैकेँ भोजन भेटते अछि। दोसर ईहो मनमे उठैत रहैन जे एक मुट्ठी खुऔने जरल पेट भरैए, ओइसँ अचार-विचारकेँ कोन मतलब छइ...। तैबीच मदनेसर भाय बजला-

"नइ, नइ खाएब। पहिने, जइ दुआरे एलौं हेन से कनी बुझि लएह।"

ओना जेहेन खाधूर मदनेसर भाय छैथ जँ परिवारजनक खेवासँ पहिने आग्रह भेल रहितैन तँ 'नहि' नइ कहितैथ मुदा मने-मन अजमा नेने छला जे सभ जखन खाइये-पीब नेने छैथ तखन खुएबे कथी करता। बड़ बेसी खुएता तँ बेरू पहर जे भुज्जा-ले चूरा रखने हेता ओ नून संगे खुएता, तइसँ नीक ने भेल जे नइ खाएब...। ओना, तैबीच जागेसर भाय दोहरा कऽ सेहो बजला-

"मदनेसर, काज केतौ पड़ाएल जाइए, अखन खाइ बेर अछि।"

बहुरूपिया मदनेसर भाय छथिए। चारू मुलुक दुनियाँ देखल होनि वा नहि मुदा मुहसँ सभ जनिते छैथ। संयासी रूप जकाँ बजला- "जागे, कहियो घी घना, कहियो मुट्ठी चना आ कहियो ओहो

कहाँ! तेहने ने अपन जिनगी अछि। तँए खाएब कोनो माने थोड़े रखैए।”

मदनेसर भाइक बात सुनि जागेसर भाइक मनमे सन्तोख उठबे केलैन जे अपने तँ तिथि-अतिथिकेँ सत्कारे करैक अधिकारी ने छी, तइसँ बेसी कइये की सकै छी। जागेसर भाय पुछलखिन-

“की बात मदनेसर?”

‘की बात’ सुनि मदनेसर भाइक मन थरथरा गेलैन। मुदा क्रोधोक तँ अपन समैयक हिसाबे सीमा अछि, तँए विचारमे कनी-मनी फेड़-फाड़ भइये जाइए।

तैबीच बिच्चेमे चौकीपर सँ उठि मदनेसर भाय बजला-

“कनी पेशाव केने अबै छी तखन निचेनसँ सभ गप करबह।”

किछु विचार करैक बहन्ने मदनेसर भाय उठला आकि पेशाव करए उठला से तँ ओ जानैथ मुदा जागेसर भाइक मनमे भेलैन जे भरिसक कोनो तेहेन उझट बात बेटे वा पत्नियेँ जरूर कहलकैन अछि जइ बेथासँ मदनेसरक हृदय बेथित जरूर छैन। मुदा से तँ बजला पछातिये बुझब। भऽ सकैए जे ओहन चोटाएल बात बजबे ने करए। जँ नइ बाजत तँ अपने अनुमानसँ पुछबै, मुदा तैयो जँ खोलि कऽ नहि बाजत तँ जएह सुनने रहब तेकरे जवाब ने सुनेबै।

मदनेसर भायकेँ चौकीपर बैसते जागेसर भाय पहिने चेहराकेँ नीकसँ हियासलैन। चेहरामे बेसी चढ़ा-उत्तरी नहि देखि बजला-

“बाजह।”

जहिना पानिमे सौरखी-करहर वा मखानकेँ पानिक ऊपरक पात पकैड़ नाले-नाल भँजियबैत बिच्ची पकैड़ उखाड़ल जाइए तहिना मदनेसर भाय जड़िये पकैड़ बजला- “जहिना बेटा कुकुर भऽ

गेल तहिना घरोवाली भऽ गेल। दुनूमे के कम से निर्णये ने कऽ पाबि रहल छी।”

मदनेसर भाइक मुहसँ ‘निर्णय’ सुनि मुस्की दैत जागेसर भाय बजला-

“मदन, तूँ ते अपने पण्डित छह, जखन तोरा अपना बुते निर्णय कएल नइ भेलह तखन हमरा बुते हएत।”

ऐठाम पण्डितक अर्थ जाति विशेष नहि, विचार विशेष अछि, तँए गलत नजरिये नइ देखल जाए। पण्डितक अर्थ गाम-समाजमे पूजा-पाठ विशेषसँ अछि, जे एक जातिक बीच नहि सभ जातिक बीच अपन-अपन पुजौनिहार भऽ गेल छैथ।

जागेसर भाइक बात सुनि जेना आरो बेसी तामस मदनेसर भायकेँ लहैर गेलैन तहिना बजला-

“जेकरा सभ-ले दिनकेँ दिन नइ बुझै छी आ रातिकेँ राति नइ बुझै छी, दिन-राति रने-बने वौआइत रहै छी, जखन सएह ने मोजर दइए, तखन दुनियाँ मोजर देत!”

मदनेसर भाइक विचारक ऑंट-पेट देखि जागेसर भाय कान कुरियबैत बजला-

“पहिल बात तँ ई कहबह जे अपनो उमेरक लेहाज राखह। दोसर ई जे केकरो मोजर देने केकरो मोजर थोड़े होइए। ओ तँ ओकर अपन विचारानुकूल किरिया-कलाप केने होइए।”

ओना बजैक क्रममे जागेसर भाय बाजि गेला मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे उमेरक माने मदनेसर जन्म तिथिक समयसँ ने बुझि गेल होथि। मुदा जखन गप-सप्प कइये रहल छी तखन आगू ऐ विचारकेँ फरिछा लेब जे उमेरक माने भेल जिनगीक सर्वांगिन विकसित मेड़।

‘केकरो कहने केकरो मोजर होइए’ सुनि मदनेसर भाय चौंकला। देहमे सिहरन उठए लगलैन। बजला-

“जागे, कोनो बात बजैमे जँ उनटा-पुनटा भऽ जाए तेकरा सुधारि कऽ बुझिहह मुदा सभ बात खोलि कऽ कहै छिअ।”

बिच्चेमे मुस्की दैत जागेसर भाय बजला-

“अपना दुनू गोरे ते लंगोटिया संगी छी, केना कातिक मासमे आमक गाछीमे अखड़ाहा खुनि लड़ै छेलौं, से बिसैर गेलहक।”

जागेसर भाइक मनमे उठि गेल छेलैन जे मदनेसर छड़पनमा लोक अछि, केतए-सँ कि जोड़ि बाजि देत तेकर ठेकान नहि, तँए जाबे बिटिया कऽ नहि पकड़ब ताबे नीक जकाँ बुझि नहि पएब। जहिना सौरखी-करहरक पनिपत ओकर बालपन भेल जेकरा जड़िपन सेहो कहि सकै छिऐ। ओना, रसे-रसे मदनेसर भाइक मन सेहो असथिर हुअ लगलैन। मुदा जिनगीक अनुकूल लोक अपन चालियो-ढालि आ बातो-विचार बनाइये लइए।

मदनेसर भाय बजला-

“की दिन-दुनियाँ छल आ अखन की भऽ गेल।”

जागेसर भाय बुझि गेला जे आब मदनेसरक विचार सुढ़िआइ दिस बढ़ि रहल अछि। तँए पहिने ओकरे मुहसँ उगलबाबी। बजला-

“से की मदनेसर?”

मदनेसर भाय बजला-

“पहिने जँ कियो केकरो उपकार करैत छल ते ओकरा आँखिमे पानि रहै छेलै, मुदा आब ओकरा लोक चलाकी बुझैए जे फल्लाँसँ ठकि अपन काज सुतारि लेलौं।”

अपना जनैत मदनेसर भाय पेटक बात बाजल छला मुदा

जागेसर भायकेँ अपन जिनगीक अनुसार दोसर अर्थ लगलैन। बजला-

“मदनेसर, कियो अपन जिनगी-ले सभ किछु कर्म बुझि करैत चलैए, तइमे जँ केकरो उपकार भऽ जाइ छै तँ भऽ जाइ छइ। तेकरा ओ किए उनैट कऽ ताकत जे फल्लाँकेँ उपकार केने छिऐ तँ ओहो ओकर बदला देत। हँ, एहेन जरूर होइए जे जे परोपकारी लोक छैथ हुनकासँ केतौ-ने-केतौ कोनो उपकार भइये जाइए।”

जागेसर भाइक विचार सुनि मदनेसर भाय बजला-

“केकर मुँह देखि उठल छेलौं से नहि जाइन। जँ नीक मुँह देखि उठल रहितौं ते एना थोड़े होइत।”

मदनेसर भाइक बात सुनि जागेसर भाय बुझि गेला जे जरूर कोनो तेहेन विचार परिवारमे फँसल छैन जे सबहक सभसँ टकरा रहलैन अछि। परिवार हुअ आकि समाज, विचारक बीच भेद भेने टकराहटक सम्भावना भइये जाइए। मुदा जखन परिवार-ले आकि समाज-ले हुअ कि समाज, सभ जँ नीके चाहै छी तखन बीचमे टकराव केना..! माने सभ तँ नीके दिस बढ़ए चाहैए तखन टकराहटक सम्भावना केतए छइ! मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे परिवेशो आ जिनगियो लोकक एहेन मोड़पर आबि गेल अछि जे जहिना जिनगी तहिना विचारो छिड़िया रहल अछि। माने ई जे जे परिवार वा समाज नीकक दिशामे बढ़ि रहल अछि ओहू परिवारमे मशीन ऐने विचार बदैल रहल छै आ जे परिवार वा समाज अधला दिस बढ़ि रहल अछि ओहू परिवार आ समाजमे अधला वृत्ति मोड़ लेलक अछि। जे गुरुसँ गुरुतर कहियौ आकि छिछलाहटसँ गहींर कहियौ, भइये रहल अछि।

अखन धरि जे जिनगी मदनेसर भाइक रहलैन ओ जागेसर

भाय नीक जकाँ नहियोँ तैयो बहुत किछु, गाममे रहने बुझिये रहल छला, मुदा ई सोचि पेटमे रखने छला जे दुनियाँक पाछू जे लोक वौआ रहल अछि–माने दोसरक नीक-अधला बुझै पाछू–से किए ने अपना पाछू वौआएत जे अपन कल्याण हेतै, अपन नीक हेतइ। तही बीच सुमित्रा भौजी लोटामे पानि नेने दरबज्जापर पहुँचली।

सुमित्रा भौजीक हाथमे लोटा देखि मदनेसर बजला-

“जागे भाय, भगवान जँ पत्नी देलैन ते अहाँकेँ देलैन। हमरासँ कोन जनमक कनारि छेलैन जे कपारमे हराशंख लिख पठा देलैन।”

ओना मदनेसर भाइक मुहसँ सुमित्रा भौजी अपन बड़ाइ सुनलैन, मुदा मन उधिएलैन नहि, जेना आरो शान्त भेलैन। बजली-

“अपना घरक बात अनेरे अनका लग बाजि अपन घरो आ घरोवालीकेँ किए घिनबै छी। तइसँ नीक थोड़े हएत। परिवारमे कनी-मनी नीक-बेजाए भइये जाइ छै ओ अपने ने थतमारि कऽ सम्हारब कि गाममे ढोल पीटब!”

सुमित्रा भौजीक बात सुनि जहिना जागेसर भाय गंभीर भऽ विचारए लगलैथ तहिना मदनेसर भाय सेहो विचारए लगला। ओना दुनूक जिनगी दू दिशामे बहैत, मुदा प्रश्न तँ एके दुनूक सामनेमे छेलैन। भलेँ अपन-अपन जिनगीक बहाबक अनुकूल किए ने विचार करैथ। जागेसर भाइक मनमे उठलैन जे परिवारक तीनू सदस्य–पति, पत्नी आ बेटा–क जिनगी टोबए लगला। बालपनक संगी रहितो मदनेसर धनक धन्य अर्थ नहि बुझि पेलक। भलेँ भरि दिन किए ने भखैत हुअए जे मनुक्खक सभसँ पैघ धन ओकर बुधि-ज्ञान छी जे मनकेँ पकैड़ ओकर जिनगीकेँ अचार-विचारक संग संचालित करैए। तैठाम जँ धनक उपार्जनो आ उपभोगो मदनाइत चलत तँ ओइ जिनगीक दुर्गैत हएब सोभाविक छइ। रंग-बिरंगक श्रमहीन उपार्जन

केनिहार मदनेसर अछिए। की ओहन परिवारमे श्रमशील मनुक्ख बनि सकैए? आ जँ श्रमशील जिनगी नइ बना पेलौं तँ केतौ-ने-केतौ जिनगी श्रमचोर हेबे करत।

जइ बेटामे बच्चासँ बेटपन नइ आएल ओ बेटा कहियो अपनाकेँ बापक बेटा बुझत? तहिना जइ स्त्रीमे स्त्रीपन नइ आएल तँ ओ पतिपन थोड़े बुझि सकैए। श्रम ओहन गुण छी जइ गुणसँ लोक गुणी बनि गुणवान बनैए। गुणवान बनला पछातिये कियो विद्वान, कियो पहलवान तँ कियो शक्तिमान बनैए। जखन 'वान' तखने मान। मुदा मदनेसर भाइक मनमे उठलैन जे चोरी केने भेल कि छिनरपन आकि ठकपन-फुसिपन केने, मुदा एते तँ हमरे कएल ने परिवारमे छी जे तीन पुस्त-जोकर मकान बना देलिऐ, खेत-पथार तेते कीनि देलिऐ जे बेचियो-बेचियो खाएत तैयो दू पुस्तकेँ नहि सठतै, तइ परिवारमे जँ घरवालीक संग बेटो चानिपर खापैड़ फोड़ै ओइ परिवारमे जएह निरलज हएत सएह ने रहत। विचारक दौड़मे अबैत-अबैत मदनेसर भाइक ब्लडपेसर जेना तेज भऽ गेलैन। ओना, पाँचटा बेमारी देहकेँ जकड़नहि छैन मुदा संयमी रहने भरि दिन झोरेमे सभ दवाइ रखने रहै छैथ तँए समय-समयपर खाइत रहै छैथ, जइसँ भरि दिन ठीक-ठाक चलै छैथ। मुदा शान्त वातावरणमे बेमारियो शान्त रहैए आ अशान्तमे तँ अशान्त भइये जाइए।

मदनेसर भाय झोंकमे बजला- "जागे, तूँ हमर बालसखा छिअह। गाममे रहैले कहह आकि चलि जाइ-ले। से अखने कहि दएह।"

बीच-बचाव करैत सुमित्रा भौजी बजली-

"जखन गाममे रहैले कही वा नहि कही, एते विचार मनमे जँ अछि तँ पहिने किछु खा लिअ। हमहूँ समाजे ने छी आ अहूँ गामेक

चर्च ने केलौं।”

सुमित्रा भौजीक बात सुनि मदनेसर भाइक ब्लडपेसर जेना गड़ धेलकैन तहिना शान्त होइत बजला-

“जागे भाय जेठ छैथ, अहूँ भौजीए भेलौं, मातृतुल्य भौजीकेँ अपना ऐठाम मानल गेल अछि, तँए अहाँक बात मानि लइ छी। मुदा एकटा शर्त्त अछि जे परिवारमे आइये छह-नअ भऽ जाए।”

जागेसर भाय बजला-

“जँ हमरा केने हेतह तँ आइये भऽ जेतह। नहि तँ अपन करैत रहिहह।”



शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017

पैंतीस साल पछुआ गेलौं

अदहा फागुन बीत गेल। परसू शिवराति छल। पनरहिया फगुआ शुरू भऽ गेल। पनरहिया फगुआ भेल, जे फगुआ, फगुआ पाबैनसँ पनरह दिन पहिनहिसँ गौल-बजौल जाइए।

बेरुका समय, शुभकान्त काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर ठकुआएल बैसल चिन्तामे डुमल छला। चिन्ताक कारण छेलैन जे शिवरातिये-शिवराति जँ साल जौड़ैथ तँ देखैथ जँ परसू शिवराति छल, पैछला साल बीत गेल आ ऐगला साल दू दिन अगुआ गेल।

फेर जखन फगुआकेँ अड्डा बना दोसर तारीखकेँ जोड़ैथ तँ देखैथ जे तेरह दिन अखन पैछला सालक बाँकी अछि आ ऐगलाकेँ चढ़ैमे तेरह दिन देरी अछि। मुदा फेर जखन तेसर तारीखपर नजैर दैथ, जइमे चैतसँ साल शुरू होइए आ फागुनमे विसरजन करैए, तँ लगले मनमे ईहो उठि जाइन जे अनेरे लोक थोड़े गबैए- ‘जे जीबए से खेलए फॉगु..!’

मुदा शुभकान्त काकाकेँ तारीखक ओझरी तैयो ने सोझरेलैन। किएक तँ लगले मनमे उठि गेलैन जे फगुआकेँ ने तेरह दिन बाँकी अछि मुदा सकराँतिक हिसाबसँ तँ पचीस दिन बाँकी अछि। किएक तँ बारह दिन पाछू चलैए। जखने पचीस भेल, तखने मासमे पाँचे दिन ने कम भेल, महिना तँ भइये गेल...।

शुभकान्त कक्काक मन जखन महिना दिस बढ़ैन आकि

दोसर तारीख मनेमे हल्ला करए लगैन जे तखन तँ बैशाखसँ नवका साल आ चैत तक पुरना साल रहल...।

शुभकान्त काकाकेँ भाँजेपर ने चढ़ैन जे ऐ ओझरीकेँ केना सोझराएब। ओझराएल मनमे आरो ओझरी तखन लगि गेलैन जखन रूसक क्रान्ति मोन पड़लैन। मोन पड़िते मनमे ठहकलैन जे ओ क्रान्ति अक्टूबरमे भेल, जेकरा किताव पढ़निहार नवम्वर मानै छैथ। ओहूठाम पतरेक पेंच लागल अछि। तँए क्रान्तिक समय ओइठाम कोन तारीख चलै छल पहिने से ने बुझए पड़त।

आँगन बहारैत-बहारैत कल्यानी काकी जखन अँगनासँ बहराक मुँह लग पहुँचली आ दरबज्जाक मुँहक मिलानी भेलैन तखन नजैर शुभकान्त काकापर पड़लैन। हाथमे बाढ़ैन रखनहि हिया कऽ देखली तँ बुझि पड़लैन जे घटाएल घटा जकाँ करियाएल घन पसैर रहल छैन। मुदा बजली किछु ने। चुपचाप आँगनक मुँहथैर होइत बहारैत दरबज्जाक मुँहथैर लग पहुँचली तँ अपन काजक हाजिरी पुरबैत आँखि उठा शुभकान्त काकापर देलैन। ओना शुभकान्त कक्काक आँखिमे नोर तेना डबकल रहैन जे कखनो धारक रूप धारण कऽ सकै छल। मुदा तेकरा ई सोचि शुभकान्त काका सम्हारि रखने छला जे संग मिलि दुनू परानी चाहे जेहेन जिनगी हुअए मुदा संगे-संग अखन धरि चलबो केलौं आ चलियो तँ रहले छी। तैठाम जँ अपन बेथेक कथा पत्नीकेँ सुनेबैन सेहो केहेन हएत। ओना, मनुक्खताक रूपमे देखल जाए तँ ओ नीक हएत। मुदा पत्नियोकेँ तँ अपन संसार छैन किने, जे दुनूक संजोगक परिवार ओइ संसारक संगम छी। तँए वैचारिक रूपमे अनिवार्य ऐछे, भलेँ बेवहारिक रूपमे अपन-अपन दुनियाँक पाछू घुमैत रही...।

ने शुभकान्ते काका कल्याणी काकीकेँ किछु कहलखिन आ ने

कल्याणीए काकी किछु बजली। ओना, अपन ठकुआएल जिनगीक बीच शुभकान्त कक्काक मन वौआइत रहैन जे कल्याणी काकीक मन कहलकैन जे भरिसक कोनो तेहेन विचारमे बिचैड़ रहला अछि जेकर कोनो रस्ते ने सुझि रहल छैन। तँए अन्हारकेँ आरो अन्हार बनबैसँ नीक जे भने ओहो अपन इजोत तकता आ हमहूँ अपन इजोत ताकब..! ई बात तँ कल्याणी काकीक मनमे उपकलैन तँ मुदा लगले दोसर मन धोपैत कहलकैन-

“जखन दुनू गोरे संगी छी, एकबट्टू रस्ता धेने चलि रहल छी तखन नहियोँ बुझब वा जानबकेँ तँ नीक नहियेँ कहल जा सकैए।”

मुदा तैयो सोझा-सोझी कल्याणी काकी किछु नहि बाजि मने-मन विचारली जे अपने नहि किछु बाजि गोपीलालक मुहसँ बजबाएब...।

कल्याणी काकी दरबज्जेपर बाढ़ैन रखि गोपीलालक आँगन एली। गोपीलाल अँगनेमे रहए, नजैर पड़िते कल्याणी काकी बजली-

“बौआ गोपी, बुड़हा ठकुआएल दरबज्जापर बैसल छैथ, से कनी भाँज बुझहक तँ, की बात छिऐ।”

गोपीलाल पकिया चेला शुभकान्त कक्काक। आन मानेमे पकिया कि कचिया से नहि कहै छी, मुदा आन गाम-गमाइत करैमे गोपीलाल संग पुरिते छैन। ओना दसअन्नी, बरहअन्नीसँ लऽ कऽ दुअन्नी-एकन्नी तकक सभ गप शुभकान्त काका आ गोपीलालक बीच चलिते अछि तँए गोपीलाल बजैमे निधोक अछिए।

गोपीलालक आँगनसँ अगुआ कऽ निकैल कल्याणी काकी अपन दरबज्जापर आबि बाढ़ैन पकैड़ बहारए लगली। पाछूसँ गोपियोलाल आबि बिनु प्रणाम केनहि शुभकान्त काका लग बैसल। ‘बिनु प्रणाम-पाती’क गलत अर्थ नहि, एकठाम रहलाक पछाइत आ

अलग-अलग रहने भेँट भेलापर दुनूक दू परिस्थिति अछि तँए प्रणामक दू रूप अछि। ..शुभकान्त काका लग बैसते गोपीलाल बाजल-

"काका, तमाकू खाइले एलौं हेन। ओना बेरूका चाहो पछुआएले अछि।"

कनखरल कल्याणी काकी रहबे करैथ, 'चाह' सुनि बजली-

"बौआ गोपी, तमाकुल पाछू खइहह, पहिने चाह पीब लएह।"

शुभकान्त काका एक-दोसरपर नजैर दौड़बैत टक-टक देखि रहल छला, मुदा अखन तक किछु ने बाजल छला। बकारक हरण मरणसँ भेल छेलैन आकि मरमसँ से तँ ओ जानैथ मुदा छला चुपे। मने-मन अपनो जिनगी आ परिवारक संग समाजोक जिनगीकेँ देखि रहल छला, देखि रहल छला टुटैत जिनगी, देखि रहल छला 'पछुआएल जिनगी', देखि रहल छला 'खसैत जिनगी'।

मुदा अज्ञानतो तँ मुँह चुप रखैक पैघ शस्त्र छीहे। की गामक सभ समयकेँ एके रंग आँकि रहल छी? आँकबो तँ असान नहियेँ अछि, जेहेन जइ वेपारीकेँ पूजी रहत, से तेहने ने वेपारो करैए। मुदा आन बुझौ वा नहि बुझौ, आकि बुझि कऽ अनठाबौ वा नहि अनठाबौ, मुदा अपन तँ दायित्व ऐछे जे जे जानि रहल छी ओकरा मानि बना आनोकेँ मनाएब! मुदा कहबै केकरा, एहेन लोकक कानमे ने पड़ि जाए जे समस्याकेँ उनटा कऽ भगवानक दोख लगा अपनाकेँ ओइमे नुका लइए। तँए ओहन लोकक कानमे जरूर जेबा चाही जे समस्याकेँ समस्या बुझि समाधान करए।

ओना गोपीलालक मन चुप रहबकेँ नीक बुझैत मुदा कल्याणी काकीक मन भन-भनाए लगलैन। भन-भनाए ई लगलैन जे मालिक मन्हुआएल छैथ आ अपने ओइ बातकेँ बुझबे ने करिऐ, ईहो तँ नीक

नहियेँ भेल। दुनियाँ जनैए जे झुटकोसँ घैल फुटै छइ। तँए जँ कोनो एहेन विचार मुहसँ खसि पड़ए जइसँ पतिक कष्टक हरण भऽ जाइन, तँ किए ने ओहन प्रतिकार करब। मुदा ईहो नीक केना हएत जे जखन गोपीलालकेँ विचार बुझैले बजा अनलौं तखन अपने जा बीचमे टभकए लगी।

मुदा लगले कल्याणी काकीक मनमे दोसर विचार उपैक गेलैन। उपैक ई गेलैन जे भोलो बाबा तँ असगरे धुनी रमा बैसल रहै छला मुदा फेर दरबार केना लगि जाइ छेलैन! दरबार तँ अहिना ने लगै छेलैन जे पार्वती छिपलीमे जलखै, गणेशजी हाथमे पानिक लोटा आ कार्तिक खलिया बाटी नेने पहुँचै छल आ गौंआँ-घरूआ सभ सेहो कियो भाँग, कियो चीलम, कियो गूलक डोरी आ कियो गुलाब-तख्तीक संग प्रेमकटारी नेने पहुँचै छल। जखने दस गोरे एकठाम बैसलौं कि दरबार लागल।

चुपे-चुप रहने गोपीलालक मन औनाए लगलै। औनाए ई लगलै जे जखन कल्याणी काकी कक्काक मनक बात बुझैले बजा अनली तखन मुहोँ बन्न राखब, नीक नहियेँ भेल। शुभकान्त कक्काक आँखिपर गोपीलाल आँखि चढ़बैत बाजल-

“काका, एहेन समयसँ कहियो भेँट नहि भेल छल।”

जेना शुभकान्तो कक्काक नजैरमे यएह विचार नचै छेलैन कि की, अपन नजैरकेँ गोपीलालक नजैरसँ मिलबैत बजला-

“गोपी, तूँ तँ कौल्हुका छौड़ा छिअ, मुदा सत्तैर बर्खक जिनगीमे हमरो पहिल बेर एहेन समस्यासँ भेँट भेल अछि।”

शुभकान्त कक्काक विचारक सह गोपीलालकेँ भेटल। सह भेटिते गोपीलाल सहैट कऽ शुभकान्त कक्काक विचार लग पहुँच बाजल- “से की काका?”

ओना गोपीलालकेँ लगक लोक शुभकान्त काका सेहो बुझै छला आ दूरक सेहो। मुदा जइ समस्याक जालमे शुभकान्त काका ओझराएल छला तही समस्याक जालमे गोपीलाल सेहो फँसल छल तँए लग मानए लगला।

तही बीच कल्याणी काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। ओना, शुभकान्त काका आ गोपीलालक बीच जे टोका-टोकी भेल से कल्याणी काकी सेहो सुननहि छली। मुदा अँगनामे, चुल्हि लग, रहने नीक जकाँ नहि बुझि पेली। ओना, मनमे तैयो बिसवास बनले रहैन जे गोपीलाल सभ गप कहबे करत।

चाहक चुस्की लइत शुभकान्त काका बजला-

“बौआ गोपी, अपन आँखिक देखल अछि जे जेकरा तूँ रेडियो-अखबारमे सुनने-पढ़ने हेबह जे हिमाचल प्रदेशमे मेघ फाटि कऽ बरिसल ओहन अपनो ऐठाम गोटे साल भऽ जाइए। ऐ साल से नइ भेल। मुदा जेहेन माइरिक चोट ऐ साल लागल, तेहेन ओहू साल नइ लगै छल जइ साल मेघ फाटि कऽ बरिसै छल।”

मुड़ी डोलबैत गोपीलाल चाहक गिलास रखि बाजल-

“काकी, पानक सभ समचा एतै नेने आउ। गपो-सप्प सुनब आ पानो लगाएब।”

खग जानए खगक भाषा। भाय, भरल केना खगलक भाषा बुझत, ओ तँ सुनबो आकि देखबो करत तँ ओकरा खढ़िया जकाँ खेहारि देत। ओना गोपीलालक भाषा शुभकान्तो काका बुझलैन, मुदा मनमे भेलैन जे मनुक्खकेँ तँ मनुक्खता पबैले मनुखाह बनइ पड़तै...।

जँ ओ मरखाह बनि जाएत तखन ओकर भरण-पोषण भारी भइये जेतइ। तहिना कल्याणी काकीक अपनो मन सजैग गेलैन।

किए तँ अझप्पे ने शुभकान्त कक्काक बात सुनने छेली तँए मनमे उपैक गेल छेलैन जे दुखीकेँ सुखीक सेवा आ दलितकेँ फलितक मेवा नइ भेटत तखन दुखताहक दल केना ठाढ़ भऽ सकैए? मुदा ऐठाम तँ पति-पत्नीक बीचक प्रश्न अछि, कोनो धरानी जँ हुनकर मनक पीड़ा नइ उतारबैन तँ ओ पीड़ाइत-पीड़ाइत पीड़ाइये जेता किने। पानक सभ समचा–माने पानक पात, चुनक कोही, खएर, सुपारी, जरदा इत्यादि पनडालीमे–नेने कल्याणी काकी एली। पानक डाली देखि शुभकान्त काका बजला-

“लाउ, हम अपने हाथे पान लगाएब।”

‘अपने हाथे पान लगाएब’ सुनि बिच्चेमे गोपीलाल टभकल-

“काका, हमरो नीक जकाँ पान लगाएल होइए।”

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त काका मुस्किएला। शुभकान्त कक्काक मुस्की देखि कल्याणियो काकी आ गोपीलालोक मनमे शंका भेलैन। शंकाक कारण ई जे सभ दिन जखन कल्याणी काकीक हाथक लगौल पान काका खाइ छला तँ नीक लगै छेलैन, मुदा आइ किए एना बजला? हमहूँ कि पान लगाएब नइ बुझै छी, केते भोजो-काज आ सतनारायण भगवानक पूजोमे पान लगैबते छी। मुदा पानपर सँ धियान हटा शुभकान्त कक्काक मुस्कीपर धियान अँटकबैत गोपीलाल बाजल-

“काका, मुस्कियेलौं किए?”

ओना, चाह पीबिते आ पानक डाली आगूमे देखि शुभकान्त कक्काक मनक पीड़ा पीड़ीपन नेने ठमैक गेल छेलैन तँए पानपर कम धियान रखैत मूल समस्यापर गम्भीर भऽ गेल छला। मुदा तैयो गोपीलालक पश्नकेँ जिज्ञासुक जिज्ञासा बुझि मुँह-छोहैन करैत बजला- “गोपी, जहिना भोजन केनिहार जँ अपने भोजनक

ओरियान करैत भोजन बनबए तँ ओकर मनक इच्छाक तृप्तक बीज-रोपण तखने भऽ जाइए। किएक तँ ओ अपन मनोनुकूल विन्यास बनबैए।”

गोपीलाल शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलक किएक तँ शुभकान्तो काका अदहा विचार अपना पेटेमे रखि नेने छला। ओना नीक जकाँ नहियोँ बुझला पछाइत ने गोपीलालेक आ ने कल्याणीए काकीक मनमे कनियोँ खोंट भेलैन। किएक तँ दुनूक नजैर शुभकान्त कक्काक ठकुआएल मनपर छेलैन। तैबीच शुभकान्तो काका मुँहमे पान लऽ नेने रहैथ।

आ जरदा खाइते शुभकान्त कक्काक मन फुलाए लगलैन जे जरदाक सुगन्धक संग निकैल रहल छेलैन। तैबीच गोपीलाल बाजल-

“काका, की कहने छेलिऐ जे सत्तैर बर्खक जिनगीमे पहिल बेर देखलौं..?”

गोपीलालक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका पाछू उनैट तकला तँ बुझि पड़लैन जे समस्याक ने फड़क कमी अछि आ ने सिरक। मुदा अपने ने ओकरा बिटिया कऽ बुटियाबए पड़त। जँ से नहि करब तँ अनेरे बजला साफल की हएत?

शुभकान्त काका बजला-

“बौआ गोपी, जइ चिन्ताक चिन्त करै छेलौं से पछाइत कहबह। ओना इशारामे कहि दइ छिअ जे तीस बर्खक किसानी जिनगी पछुआ गेल।”

एक संग अनेको प्रश्न शुभकान्त कक्काक मुहसँ खसैत देखि गोपीलालक मन चौंकल। चौंकते चँकियाएल जे कल्याणी काकी बजौने किए छेली आ हम कऽ की रहल छी! मुदा जैठाम बड़क गाछ जकाँ अनेको जड़ि ऊपरे-ऊपर केतौ-सँ-केतौ सिर निकैल बनि गेल

अछि तैठाम मूल-जड़िकेँ पकड़ब बाल-बोधक खेलो तँ नइ छी...।

बाजल-

“काका, अपन बातकेँ बुधिया-बुधिया सीटियबैत कहियौ।”

शुभकान्त काका बजला-

“बौआ, जे कहै छिअ तैपर सुरता रखिहह। जेते सुरता रखबह तेते सूरता औतह आ जेते सूरता औतह तेते सूर-वीरता जगतह, मुदा संगे असुरता सेहो माया जकाँ पछुऐबते औतह, तँए चाँकि राखह पड़तह़।”

शुभकान्त कक्काक बात सुनि जहिना कल्याणी काकी सहमली, तहिना गोपियोलाल सहमल।

सहैमते बाजल-

“हँ, से तँ ठीके कहै छिऐ काका।”

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त कक्काक मन जेना पाछूक विचार करैत अपन धियान मूल प्रश्नपर एकाग्र भेल। एकाग्र होइते शुभकान्त काका बजला-

“बौआ गोपी, समाजमे दू तरहेँ विचार चलैए, एकटा इष्ट होइत आ दोसर अनिष्ट होइत। इष्टसँ सुदृष्ट पनपैए आ अनिष्टसँ दुष्ट पनपैए जइसँ दुष्टताक प्रवृत्ति जगैए।”

शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ गोपीलाल बुझि नहि पेब रहल छल। तँए मुँह बबा गेल छेलइ। जे शुभकान्त काका बुझि गेला। तइ बिच्चेमे कल्याणी काकी बजली-

“अपन मन किए बेथाएल अछि?”

कल्याणी काकीक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका अपना दिस तकैत बजला- “बड़ बढ़ियाँ बात बजलौं। मुदा पहिने ई बुझि लिअ

जे दुनियाँमे जेते दुख वा कष्ट अछि ओइमे दूअना भगवानक देल अछि बाँकी चौदहअना मनुक्ख मनुक्खकेँ दइए। अपन जे दुख वा कष्ट अछि ओ मनुक्खक देल अछि।”

कहि शुभकान्त काका चुप भऽ गेला।

उदास होइत शुभकान्त कक्काक चेहरा देखि गोपीलाल बाजल-

“उपाय?”

बेथित मने शुभकान्त काका बजला-

“बौआ, पैंतीस बर्खक जिनगी टुटने आइ औतइ पहुँच गेलौं जेतए पैंतीस बर्ख पहिने छेलौं।”

अचम्भित होइत गोपीलाल बाजल-

“पैंतीस बर्ख..?”

शुभकान्त काका बजला-

“हँ। अस्सीक दशक किसानक लेल उठानक समय रहल। जेकरा हरित क्रान्तिक संग आंशिक स्वर्ण काल सेहो कहि सकै छिऐ। ओही उठाइनमे किछु किसान अपनाकेँ उठौलैन। ओही उठाइनिक रस्तासँ अपनाकेँ उठबैत एलौं। जइसँ बाड़ी-फुलवारीक रोहैन सुधैर गेल छल। जे आइ बनौआ आफतमे नाश भऽ गेल!”

अखन तक गोपीलाल मनुक्ख निर्मित दुख वा कष्टकेँ नीक जकाँ नइ बुझै छल, तैसंग कृषि क्रान्तिक अर्थ सेहो फरिछा कऽ नइ बुझै छल, तँए दुनू प्रश्नक बीच ओझरा गेल छल। मुदा विषयक खोर-चाल भेने बुझैक जिज्ञासा मनमे जगि गेल छेलै, तँए सामंजस करैत बाजल-

“काका, अहाँ ते तेहेन पण्डितक गिरथानि पितिआइन जकाँ

बजलौं जे...।”

गोपीलालक विषयकेँ सम्हारैत शुभकान्त काका बजला-

“गोपी, तूँ ते वृन्दावनक गोपी जकाँ नचनाइयेटा बुझै छह। नाचक तानी-भरनी तँ बुझै नइ छहक तँए तोरा बुझैमे कम एलह।”

चपाड़ा दैत गोपीलाल बाजल-

“काका, हमर मनक बात अहाँ बुझि गेलिऐ आब अहाँ कनी हमरा सन मुहसँ बजियौ।”

हारल बाटमे हेराएल गोपीलालक विचार सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे पर्पनक संग अर्पण सेहो जगलैन। बजला-

“बौआ, बीसमी सदीक आठम दशकमे किसानक संग सरकार जुड़ल। जुड़िते किसानक जिनगीमे जीवनी शक्ति भरैक कार्यक्रम बनौलक।”

बिच्चेमे गोपीलाल बाजल-

“की जीवनी शक्ति?”

“बौआ गोपी, रामायणिक कथामे सुनने हेबह जे संजीवनी बुट्टीक पहाड़े हनुमानजी उठा लेलैन।”

सुनल कथा गोपीलालकेँ रहबे करइ, बिच्चेमे बाजल-

“हनुमानजी ठीके बज्र रंगमे रंगल महावीर छला, काका।”

गोपीलालक विचार सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक दुनू गोरे जीवनी शक्ति बुझि गेल। विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

“बौआ गोपी, तीस सालक जिनगी टुटि कऽ निच्चाँ झड़ि गेल जइसँ आइ ओतइ पहुँच गेलौं जेतए तीस साल पहिने छेलौं।”

गोपीलाल बाजल- “से केना काका?”

गोपीलालक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका स्मृतिमे विस्मृति भऽ गेला। मोन पड़लैन पूसा कृषि अनुसन्धानक आमक गाछ। बजला-

“बौआ, तीस बर्खक भीतर की अनलौं आ केतए-सँ अनलौं तेकर छोड़ह।”

ओझरीक डरे आकि की, गोपीलालोक मन जेना अकछाए लगलै तहिना बाजल-

“हँ काका, ओकरा सभकेँ अखन छोड़िये दियौ। ने अहाँ केतौ भागल जाइ छी आ ने हमहीं। दोसर दिन बुझि लेब।”

तीस साल पूर्व आनल पाँचटा आमक गाछक संग पूसाक कृषि-मेलाक उछाही शुभकान्त कक्काक मनमे आबिये गेल रहैन, बजला-

“बौआ गोपी, पाँचटा आमक गाछ आइसँ चौंतीस बर्ख पूर्व पूसासँ अनने रही। जहिना जानकारी भेटल छल तहिना रोपलौं। ओना ओ गाछ साले भरिक पछाइत मोजैर गेल, मुदा पाँच बर्ख धरि मोजर तोड़ैत रहलिऐ। छठम सालसँ ओ पाँचो गाछ एतेक फड़ए लगल जे भरि मौसम नीक जकाँ परिवारमे चलए लगल। मुदा ओ पाँचो गाछ ऐ बेर पानिक जमावसँ सुखि गेल।”

गोपीलालक मन गुलाबखासक सिनुरियाएल आमपर पहुँच गेल। बाजल-

“सुअदगर होइ छल किने?”

शुभकान्तो काका गोपीलालक सुआदमे भँसिया गेला। भँसियाइत बजला-

“ओह! कपूर जकाँ मुँहमे बिला जाइ छल।”

गोपीलाल विचारकेँ मोड़ैत बाजल- “जाए दियौ! जहिया जे

भोग-पारसमे छल से भेल।"

शुभकान्त काका बजला-

"दसम बर्खसँ ओ आमदनीक जड़ि बनि गेल। जे साले-साल बढ़ैत-बढ़ैत किसानी जिनगीक जीवनी शक्ति बनि गेल छल।"

गोपीलाल-

"काका, दुनियाँमे केकरो आशा नइ करी ओ तँ आमक गाछे छल, लोको की ओइसँ कम अछि।"

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त काका किछु ने बजला। मनमे उठलैन- अस्सी बर्खक आन्हर बुढ़ जखन भदवरिया अन्हार टपि जाइए तखन...।



शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017

पुरान साड़ी

जेठ मासक अमरस्साक नीन तँए सुति कऽ उठैमे कनी देरी भइये गेल। ओना, नीन केतबो मोटाएल आकि भरियाएल किएक ने हुअए मुदा पत्नी उठा कऽ तोड़िये सकै छैथ। मुदा छैथ तँ सोलहन्नी पतिवरते, कखनौं सुखमे बाधा उपस्थित नहि करए चाहै छैथ। सुतबकेँ सुख बुझि अपने केतबो काल धरि सुतल रहब तैयो ओ उठेती नहि, जइसँ नीन सुरक्षित बँचल रहिये जाइए। तहिना खेबाकाल सेहो बिनु पुछनौं पत्नी बजलोरी थाड़ीमे तरूआ-तरकारी आ छलिगर दही आगूए-सँ फेकैत रहै छैथ, भर्लें मनमे एहनो आशा किए ने होनि जे थारीमे जँ बँचल रहत ओ अपने हिस्सा ने भेल जइसँ डेढ़िया-दोबर पबैक आशा पत्नीकेँ बनियेँ जाइ छैन। खाएर जे छैथ, मुदा जिनगी भरि संग तँ वएह रहती तँए दोसराक सिहन्तो केने कोनो लाभ नहियेँ अछि।

ओछाइनपर सँ उठि आँखि मीड़िते दलानसँ निच्चाँ भेलौं कि मिरचाइ-धनियाँ, हरदी-लसुन बेचैबला वेपारी–मखन–क आवाज कानमे आएल-

“धनियाँ..., मिरचाइ..., हरदी..., लसुन... लइ जाएब यै...?”

आवाजेसँ बुझि गेलौं मखन छी। मनमे भेल चनौरागंजसँ, माने चारि किलोमीटरसँ वेपारी ऐठाम पहुँच गेल आ अपने ओछाइनपर सँ उठि दलानक निच्चाँ भेलौं! मन लजा गेल। जइसँ वेपारीपर नजैर नहि अँटका धरती दिस गाड़ि लेलौं। मुदा वेपारी जेतेक रेहल अछि

तइसँ बेसी खेहल सेहो अछिए। केना ओ अपन शिकार छोड़त। नजैर पड़िते टोकलक- "भाय साहैब, एकटा समाचार भेटल किने?"

मखनक बात सुनि चौंकलौं। केहेन समाचार? गामक आकि अमेरिकाक? किएक तँ देखिते छी जे दरभंगा रेडियो स्टेशन जखन सुतले रहैए तइसँ पहिनहि आन-आन देशक अकासवाणी सभ जागि-जागि अपन-अपन समाचारक हल्ला मचा दइए। फेर भेल जे जँ कहीं गाम-घरक समाचार हुअए तखन? मनमे अबिते दोहरौनी लाज जागि गेल। जागि ई गेल जे जँ गामेक समाचार हएत आकि टोले-पड़ोसक हएत तखन केना एहेन लोक लगमे मुँह उठाएब जे चारि किलोमीटरसँ आबि घर लग अपन कारोबार पसारने अछि आ अपने अखन ओछाइने छोड़लौं हेन! मुदा समाचारो तँ समाचार छी। जिनगियोक भऽ सकैए, जिनगी जीबैक लूरियोक भऽ सकैए। माने, जिनगी जीबैक कलो भेट सकैए आ जीवन-मृत्युक संघर्षोक दर्शन भऽ सकैए। तँए समाचारकेँ बुझब जरूरी अछिए। मुदा रच्छ रहल जे मखन बिनु पुछनहि अपने बजैत आगू बढ़ि गेल- "सुभद्र भाइक माए चारि बजे भोरमे मरि गेलखिन।"

मखनक सुनौल समाचारकेँ दू टुकड़ी कऽ देखिऐ तँ एक टुकड़ी तँ साफ देखाए जे सुभद्र भाइक माए–माने सुधनी–काकी मरि गेली। मुदा दोसर टुकड़ीपर नजैर पड़िते बुझि पड़ए जे अमरस्साक चारि बजे भोर तँ सभसँ सुखद समय होइए, तखन केना काकी मरली? माने ई जे बारहो मास आ चौबीसो घन्टाक दिन-रातिमे जेठ मासक भोर सभसँ सुखद होइए, तइमे केना यमदूत आएल जे काकीक प्राणे लऽ कऽ उड़ि गेलैन! मुदा लगले मनमे उठि गेल जे अखन चाह-पानक समय अछि, मुइल काकीक जिगेसा करए जँ अखने जाएब आ एहेन समयमे चाहो-पान सुभद्रे भायपर लादि दिऐन से उचित नहि। कोनो कि सुभद्र भाय टोलेक छैथ जे कन्नो-खिजी सुनि लगले

विदा हएब। आन टोलमे घर छैन, समाचार सुनैत-सुनैत ने सुनब, तइमे किछु समय तँ लगबे करत। तहूमे गाम-गाममे तेहेन लॉडस्पीकर-बाजा सभ परमानेन्ट लटका देल गेल अछि जे मोबाइलोमे गप-सप्प करब कठिन भऽ गेल अछि। तखन एहेन-एहेन समाचार की प्रभावित नहि हएत? हेबे करत। जहिना प्रदुषणकेँ दूर करैले एक दिस नमहर-नमहर योजनामे खर्च भऽ रहल अछि तहिना प्रदूषणकेँ बढ़बैयो-ले नहि भऽ रहल अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तहूमे आन प्रदूषणसँ बड़ बेसी तँ देहमे हौहैठ-कलकैल हएत, देह चुलचुलाएत। मुदा ध्वनि प्रदूषण तँ लोकक मत्थे चाटि बताह बनाएत..! दरबज्जापर सँ चोटे आँगन जा पत्नीकेँ कहलयैन- “झब-दे चाह बनाउ। सुभद्र भाइक ऐठाम जाएब जरूरी भऽ गेल।”

ओना पत्नीकेँ सुभद्र भाइक समाचार भेट गेल छेलैन तँए नाकर-नुकर नहि केलीह। जाबे मुँह-कान धोलौं ताबे पत्नियोँ चाह बना लेलैन। कलपर सँ आबि चाह पीलौं। चाह पीला पछाइत पानपर नजैर पहुँचल। मुदा नजैर अँटकल नहि, उड़ि कऽ आगू बढ़ि गेल। आगू ई बढ़ि गेल जे हरण-मरणमे पान नइ खेबा चाही। तहूमे सुभद्र भायसँ दियादीक सम्बन्ध सेहो अछि..!

पानक फसादमे मन तेना फँसि गेल जे सुभद्र भाइक ऐठाम जेबाक विचारे मनसँ उतैर गेल। मुदा चाह पीबैत-पीबैत किछुए काल बीतल कि सुधनी काकी आगूमे झमैक कऽ कुदि पड़ली। काकीक कुदब देखि मनमे उठल- नबे बर्खक जिनगीक टपानमे कहियो सुधनी काकी अपन नवपनक तियाग नहि केलैन! समाजो आ परिवारोक संग काकीक सम्बन्ध सभ दिन एकरंगोहे बनल रहलैन। ओना, कहियो काल सम्बन्धमे घटी-बढ़ी सेहो होइत रहलैन मुदा अपना मने काकी जेहने शुरूमे छेली तेहने काल्हियो धरि रहबे केलीह। तहूमे राति नअ बजे तक एकेठाम बैस काकी संगे घर-

परिवारक गप-सप्प करबे केलौं अछि, सुभद्रो भाय छला..!

सुधनी काकीपर सँ मन सुभद्र भायपर पहुँच गेल। जखने सुभद्र भाय मोन पड़ला कि जिगेसा करब सेहो मोन पड़ल। चाह पीब नेने छेलौं मुदा पान पछुआएल छल। पानपर नजैर पड़िते मनमे मटाउ हुअ लगल जे पान खा कऽ जाइ आकि बिनु पान खेने? अगदिगमे पड़ि गेलौं। मनमे उठल- जखनसँ ककीक मृत्युक समाचार सुनलौं तखनसँ आँखियो कहाँ अपना मने नोर बहौलक आ मुहोँ कहाँ कानल? मुदा मनमे ईहो उठल- कानत किए? सुधनी काकी सन-सन धरमी जँ गाम पीछु पाँचो-सातटा रहत तँ ओ अपन विचार कर्मसँ बिचड़ैत कर्मकार जकाँ कर्मी-धर्मी धार बहैबते रहत। भलेँ इलाहाबादक त्रिवेणी घाटपर वृन्दावनसँ बहैत आएल यमुना धार किए ने पतराइत-पतराइत पतरखेप खेपैत हुअए, मुदा धारक धारा तँ मानल जेबे ने करत किने? ओना, देखनिहारो आ ओइमे डुबकी लगा नहेनिहारो मानए वा नहि मानए...।

मन आगू बढ़ल। आगू बढ़ैत मनमे फुड़फुड़ा कऽ एकटा विचार खसल। विचार ई खसल जे एक तँ पान, तैपर ओकर पातकेँ अशुद्ध केना बुझल जाएत..?

'शुद्ध' 'अशुद्ध'क बीच मन घुरियाए लगल। फेर भेल जे भरिसक मरल लोकक ने तँ बरस-गाँठ मनबै दुआरे अशुद्ध भेल? मुदा अखन से तँ नहि, अखन तँ सुधनी काकीक जिगेसा करए जा रहल छी..! तैबीच काकी अपन डोर मे बान्हि विचार देली- 'बेटा, जखन तोरे सभले जिनगी गलेलौं तखन तोरा मुँह पान नहि! हँसैत खाइत खेलाइत आबह। आब कि हमरा कोनो अगुताइ अछि। जखन मन हुअ तखन जरबिहह आकि केतौ माइटिक तरमे गाड़ि दिहह।'

सुधनी काकीक विचार मनमे जगिते नजैर फुन-फुना उठल।

फुनफुनाइत नजैर पानपर उतरल। अन्दाजए लगलौं जे जेतेक कालमे घुमि कऽ घरपर आएब तेतेक कालक हिसाब जोड़ि पान लऽ ली। पाँच खिल्ली पानक पात बिछेलौं। पान तँ बिछा देलिऐ मुदा चुनक कोही हाथमे लइते मन पनपनाए लगल। मुदा तैबीच सुधनी काकी फेर घुमि कऽ आबि कहली- "चुनक कोही-तोही फेकैक काज नइ छह! जाबे तोरा सबहक बीच छेलौं पान-तमाकुल खेलौं। ओ भोग-पारस आब हमर थोड़े रहल, तँए तूँ हमरा-ले कोही नइ फेकिहह। चुनक कोहिये फेक देबहक तखन आगू पान केना खेबह?"

सुधनी काकीक विचारमे तेना ने बिचड़ए लगलौं जे पाँचोटा बिछौल पातमे कोनमे चुन कम पड़ल आ कोनमे बेसी से ठेकाने ने रहल। तहिना खएरो बेरमे सएह भेल। मुदा जे भेल से भेल, कोनो कि संगीतक उत्सवमे जाएब अछि जे चुन मुँह काटत आकि जर्दा हुचकी उठौत तँ...। हाँइ-हाँइ कऽ एक खिल्ली पान खा बाँकी चारू खिल्लीकेँ समेट प्लाष्टिकमे लटपटा गमछाक खूटमे बान्हि विदा भेलौं। जेठ मास छीहे तँए गंजी-कुरताक जरूरते की। तहूमे ओहन लोकक कृत्यमे जा रहल छी जे हँसैत-हँसबैत चारि पीढ़ी धरि नब्बे बर्खक उम्र गुजारलैन..!

दरबज्जापर सँ हेट होइत गामक रस्तापर जखन पएर पड़ल कि अनायास पैरक गति तेज हुअ लगल, मुदा जहिना पैरक गति तेज भेल तहिना मन लजा उठल, लाज हुअ लगल। जइ सुभद्र भायसँ एतेक लगीची सम्बन्ध अछि, तिनकर माए चारि बजे भोरेमे मुइली आ जिगेसा करए आठ बजे भिनसरमे जा रहल छी! सुभद्र भाइक नजरिक सोझ पड़ब तँ की कहता! मुहेँ बाजैथ वा नहि मुदा मने तँ जरूर मनमनेबे करता किने जे 'वाह रे बेर परक खलीफा, बेरेपर दिशा-मैदान सभटा उतरए लगै छैन..!'

मुदा मन जागल, जगिते विचार देलक- “जहिना स्कूल, कौलेज आकि कोनो कार्यालयमे कर्मचारी एगारह बजेसँ ड्यूटी करए जाइ छैथ, पारिवारिक लोक रहने जँ कोनो कारणे पाँच मिनट पहिने नहि पहुँच पेने अपन उपस्थिति ऑफिसमे नहि दर्ज कऽ सकला आ रस्ते-रस्ते आबि अपन काजमे जुटि गेला, पछाइत जँ ओ अपन उपस्थिति दर्ज करता, ओकरा की मानल जाए?”

विचार जगिते अपनो गर अँटल। गर ई अँटल जे चारि बजे भोरमे काकी मुइली, अखन आठ बजैए, आँगनसँ असमसान तक भरि दिनक काज भेल, तैठाम जँ नित्य-निवृत्तिमे कनी-मनी आगू-पाछू भेल तँ ओकरा काजेसँ ने पुरौल जाएत। सुभद्र भाय ओहेन लोक थोड़े छैथ जे काकी लग बैस सोझे कैनते हेता। हुनको नजैर कहिते हेतैन ने जे के केहेन लोक अछि। तँए अनेरे मनमे शंको करब नीक नहियेँ छी। फेर भेल जखन सुधनी काकीक अन्तिम विदाइ दइले जाइये रहलौं अछि आ जँ हमरो बहन्ने सुधनी काकी दू-चारि आँगनमे बैस किछुकाल गुजारि लेती, ईहो कम थोड़े भेल?

काजक लोक बनिते मनमे भेल जे एक मुट्ठी मूज किए ने कर्त्ताक डोराडोरि-ले नेने चली? सएह केलौं, भाय जेकर डोराडोरि जेतेक सक्कत रहत ओकरेमे ने ओतेक सक्कतपन रहत।

हाथमे मूज नेने जखन सुभद्र भाइक घरपर पहुँचलौं कि समाजक मजमा देखि अपने हेरा गेलौं। हेरा ई गेलौं जे असगरूआ सुभद्र भाय एतेक लोककेँ नौत-हकार केना दऽ एलखिन? छोट भाए जे छैन ओ तँ सुधनी काकीक कोड़ैला बेटा भेलखिन, वेचाराक छठिहारक छाती छुटि रहलै हेन, तँए ओकरा कानैसँ मनाहियो तँ सुभद्र भाय नहियेँ कऽ सकै छैथ। तहूमे जेठ रहू कि छोट, माए तँ दुनू भाँइक मुइली हेन, अपन-अपन हिस्सा तँ सभकेँ कानबो तँ हेबे करतैन। सुभद्र भाय अपनो तहूमे बरदाएल हेता। तैसंग माए माइये

छथिन। अनका जकाँ सुभद्र भाय थोड़े छैथ जे आँखिक सोझमे माइक शरीरकेँ आगिमे बिसरजन नहि करैथ। भाय! दुनियाँ बड़ीटा छै, अपन-अपन आँट-पेट देखि ने अपन आँट-पेट बनाएब? गामसँ अहाँ काज करए बाहर गेलौं। काज केलाक पछाइत जखन बैसारी भेल, बुढ़ भेलौं तखन बाप-पुरखा मोन पड़ला, गाम मोन पड़ल! खाली मरैले गाम आएब तँ जरौत के सेहो ने विचारि लिअ पड़त जे जँ हम केकरो माए-बापकेँ नहि जरौने छी तँ अपन माए-बापकेँ जरबए के औत? तँए मरैबेर जँ घीच्चम-तीड़ा लहासक हएत तइसँ नीक नहियेँ ने हएत!

माए मुइने असगरे सुभद्र भायपर बिपैतक बोझ खसिये पड़लैन। असगरे कनता कि बजारसँ कपड़ा आनए जेता आकि कान्हपर उठा माएकेँ असमसान लऽ जेथिन आकि अहरी-अछिया खुनता..?

मुदा, जेना गामक लोक ई बुझैत होथि तहिना एकाएकी सभ आबए लगला। मुदा बुझैक पाछू किछु कारणो तँ जरूर हेबे करत। ओना, समाजेक मनचोभिया नाचबला सभ सेहो अपन नाच दरबज्जापर ठाढ़ केने छल। रंग-रंगक नाच-गानसँ सुभद्र भाइक दरबज्जा गनगनाइत रहैन। मनमे भेल जे सुभद्र भाय तँ काकीकेँ ओगरने आँगनमे हेता तँए काजक पछातिये अपन उपस्थिति दर्ज कराएब। चोटगर नाच रहबे करै, बीचमे जा कऽ बैसलौं। चारूकातक लोक जे नचितो छला आ गबितो छला, ओ अपना मने खूब चोटियेबो केलैन आ चोटो खेलैन। तहिना जे गरियबै छला ओ गारियो तँ सुनिते रहैथ। सुधनी काकीक ने विदाइ समारोह छिऐन तँए समाजक लोक सभ अपन-अपन भागीदारी दर्ज तँ करबे करता किने...।

उठि कऽ कनियेँ आगू बढ़लौं कि दोसर ठाम निर्गुण

सम्प्रदायक प्रवचन चलैत देखलौं। दूटा बबाजी अपनामे खट-समाद करैत रहैथ। एकक कहब रहैन-

“अपनामे लागि जाउ।”

आ दोसरक कहब रहैन-

“राम धुइनमे लागि जाउ।”

दुनूक खट-समादसँ परहेज करैत कतवाहि देने निकैल थोड़ेक आगू बढ़लौं तँ ओतए देखलिऐ जे कियो बाँस अनलक, कियो बाँस फाड़ैए, कियो खड़ौआ जौड़ बाँटैए, कियो कुरहैर-टेंगारी लऽ लकड़ीक ओरियानमे लागल अछि आ कियो बाँसक फट्ठाकेँ बिछा मचान बनबैक सुरसार कऽ रहल अछि जैपर सुधनी काकीकेँ सुता असमसान घाट पहुँचौल जाएत। जेना बिजली चालित कोनो मशीन गनगनाइत चलैत रहैए तहिना समाजक बीचक सौम्यपनसँ सुधनी काकीक मृत्युक पछातिक प्रक्रिया चलि रहल छल..!

सभ काजकेँ नीक जकाँ संचालित होइत देखि मनमे भेल जे सुभद्र भायकेँ अपन आँखिक देखल सभ बात सुनाइयो देबैन आ मुइल माए लग बैसल हुनका सन बेटाक रंगो-रूप देखि लेब। आँगन गेलौं। ओना, सुधनी काकीक मुँह माछी दुआरे झाँपल रहैन मुदा जिज्ञासुकेँ पहुँचते सुभद्र भाइक बहिन मुँह उघाइर कऽ दर्शन करा दैत आ पुन: ओहिना झाँपि दैन। काकीक दर्शन केलाक पछाइत जखन सुभद्र भायपर नजैर पहुँचल कि हुनका हँसैत देखलयैन। सुभद्र भायकेँ हँसैत देखि अकबका गेलौं। कहाँसँ सुभद्र भाय दुनू परानी एकठाम बैस हबो-ढकार भऽ कनितैथ, तँ देखै छिऐन मकैक लाबा जकाँ मुँहक दाँत देखा-देखा हँसि रहला अछि! फेर मनमे भेल जे जहिना राजाक मंत्री मुँह-मिलानी करैत मिलल मुहेँ वातावरणकेँ अनुकूल बनबैत तहिना सुभद्र भाय बना रहला अछि। हुनकर हँसीकेँ

हँसोइथ-हँसोइथ अपनो मुँहमे लिअ लगलौं जे ओहने रूप अपनो बनि गेलापर अन्तिम संस्कारक विचार करब।

जहिना नाटकक मंचपर जाइसँ पहिने नटुआ अपन रूप-रंग बदैल लइए तहिना अपनो रंग-रूप बदलैत सुभद्र भाय लग पहुँच हुनका पजरा दबा कऽ बैसलौं। बैसला पछाइत मनमे उठल जे केतए-सँ गप उठाबी? सुभद्र भाय तँ हँसि रहला अछि, तँए अखन काजक गप उठाएब बुड़िबकी हएत। विपरीत परिस्थिति अछि, मृत माइक आगू बेटा हँसैत अछि..!

मने-मन लाख कछमछेलौं मुदा बजैक कोनो गर नइ लागल। थोड़ेकालक पछाइत एकटा गर लागल। गर ई लागल जे जहिना विद्वतजन दोसरक बात बेसी सुनै छैथ आ ओकरा अपन मनक मथानीमे मक्खन जकाँ मोहि घी बना उत्तर देबकैं नीक बुझै छैथ, तहिना सोचलौं। तहूमे एकटा आरो गर सुतरल जे अखन काकीक जिज्ञासा ने कऽ रहल छिऐन, तँए थोड़ेकाल आँखि-मुँह बन्न कऽ सुमिरन नहि करबैन सेहो केहेन हएत। तइ बिच्चेमे सुभद्र भाय बजला-

“गौरी, अपना आँखिये हम कहियो माएकैं नइ देखलयैन जे नव साड़ीकैं देहमे लगौने हेती। अभावमे नहि, बेटी-पुतोहुक विचारमे।”

सुभद्र भाइक बात सुनि अकबका गेलौं। किछु फुरबे ने कएल जे की बाजी? मुदा मन कहलक- बाजि नइ सकै छी, मुदा पुछि तँ सकिते छी। पुछलयैन-

“से की भाय साहैब?”

सुभद्र भाय बजला-

“दूटा पुतोहु छैन जे दुनू अखन मुहेँ लग बैसलो छैन्हे, जहिया

कहियो माएकेँ नव साड़ी कोनो कुटुम-परिवार देने हेतैन वा अपनो बजारसँ कीनि आनि देने हेबैन, तँ ओ साड़ी माए ओतबे काल नवमे पहिरै छेली जेतेक काल आन गामसँ अपना गाम अबैमे लगैत रहैन। भलेँ पुतोहुक देहक साड़ी पनरहे दिनक किए ने पहिरल हुअए, मुदा तेकरासँ ओ बदैल अपन नव साड़ी पुतोहुकेँ दऽ दइ छेली।"

सुभद्र भाइक विचार पहिने तँ सहरगंजा जकाँ बुझि पड़ल मुदा पछाइत बुझलौं जे सचमुच सुधनी काकी तियागक प्रतिमूर्ति छेली। जे देहक वस्त्र फेक सकैए ओ पेटक अन्न नहि फेक सकैए! अपन मन भकरार भऽ कऽ फुला गेल। बजलौं-

"भाय साहैब! मासेक धक हएत, बाध दिससँ काकी अबैत रहैथ, रस्ता कातक लतामक गाछ लगसँ देखलयैन तँ बुझि पड़ल जे कोनो टोल दिससँ आबि रहली अछि। फरिक्केसँ काकीकेँ कहलयैन-

"काकी, गोड़ लगै छी!"

झटकल अबिते रहैथ, असीरवाद दैत-दैत ओहो लतामक गाछ लग पहुँच पुछलैन-

"अखने सुति कऽ उठलह हेन?"

ओना, काकी असथिरसँ बजली मुदा बुझि पड़ल जे जँ कहीं अपना उकैतिये कहि दैथ जे 'तोरे सन-सन जुआन-जहान हिमालय पहाड़पर चढ़त!' मुदा से काकी किछु ने बजली। अपन जान बँचैत देखि हमहीं पुछलयैन-

"काकी, अनका पुतोहु जकाँ ने ते अहूँक पुतोहु सभ ताल-मात्रा देखबै छैथ?"

जेना सभ दिन बरी बनौनिहारि बरीवाहिनीकेँ ठोरेपर बरी पकैए तहिना काकी बजली- "पुतोहु जे ताल-मात्रा देखौती से कि कोनो हम बिनु परिछौने आँगन अनने छी।"

अदहा-छिदहा बात काकीक बुझबो केलौं आ अदहा-छिदहा नहियोँ बुझलौं। पुछलयैन-

“से केना काकी?”

बच्चा जकाँ पढ़बैत काकी कहलैन-

“परिछन भेल, लूरिक नाप-जोख।”

काकीक बात फेर मनमे लटपटाएले रहल। अपन आँखि बिआह-दुरागमन होइकालक परिछन देखने छल। जइमे दसटा स्त्रीगणकेँ गीत गबैत, फोटो खिचबैत देखने छल, तँए परिछनकेँ ओतबे बुझैत रही। बजलौं-

“से केना काकी?”

गम्भीर होइत कहलैन-

“जखने जेठकी कनियाँ डेढ़िया टपल कि आने स्त्रीगण जकाँ फुसफुसा कऽ पुछलिऐ- ‘कनियाँ, भत-उसना बनौल होइए? बिना किछु उत्तर देने पुतोहु चुपेचाप आँखि मिला नजैर निच्चाँ कऽ लेली। अपन परिवार तँ ओहन ऐछे जइमे समय-कुसमय भत-उसना होइते अछि। बुझि गेलौं। बड़ बेसी तँ एतबे ने कहि सकै छेलिऐन जे बकलेल माए-बाप बकलेले बना पठौलक। मुदा तइसँ की होएत।”

तैबीच जेठकी पुतोहु–माने सुभद्र भाइक पत्नी–कबुल करैत बजली-

“सोलहन्नी सत् कहने छेली!”

जेठकी पुतोहुकेँ कबुल करिते पुछलयैन-

“आ छोटकी पुतोहुकेँ केना परिछन केलिऐन?”

मुस्की दैत बजली-

“डेढ़ियापर ढेर स्त्रीगण सभ कुटिचाल करैत रहए, तैबीच मे

जा असथिरसँ पुछलयैन- ‘कनियाँ, जइ घर एलौं हेन तइमे अल्लूक संग ओलोक तरकारी चलैए, से ओल उखाड़ल होइए किने?”

ओना बजली गीतक लयमे मुदा ओल उखाड़ब ओतेक असान तँ नहियेँ अछि। कारण, एक तँ माइटिक तरक तरकारी छी ओल, तैपर गाछसँ कन्द धरि कब-कबाह सेहो होइते अछि।

पुछलयैन-

“ओ की कहलैन?”

बजली-

“ओहो मुड़ी गाड़ि लेली..!”

अपना बेटीकेँ पालैक लूरि जइ माएकेँ रहत ओ आनोक बेटीकेँ तँ पालिये सकैए! तखन एते विषमता किए?”

तैबीच दरबज्जापर हल्ला भेल-

“आब ऐठाम देरी नहि करू, असमसानोक रस्ता नमहर अछि।”



शब्द संख्या : 2553, तिथि : 24 अक्टूबर 2017

गाम बिसैर गेल

पैछला रबिकेँ गौरीकान्त गाम आएल। एलाक दसे मिनटक पछाइत भाँज लगि गेल जे बेटाक संग गौरीकान्त अमेरिकासँ दिल्ली आ दिल्लीसँ पटना हवाइ जहाजसँ उतैर रिजर्व गाड़ी पटनासँ केने गाम पहुँचल। गौरीकान्तक घराड़ी तँ बँचल छै मुदा ओ मराड़ी बनि गेल अछि। ने पुरना इनारक पानि चालू आ ने घरे-दुआर एकोटा ठाढ़। इनारक ऊपरका लहरा सभ तेना खसि पड़ल जे पानिसँ निच्चाँ जमीन पकैड़ लेलक। बिनु नौतल जहिना बर, पीपर आ पाखैर चलि अबैए तहिना भाँगो-धथुर नइ औत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, मुदा से रच्छ रहल जे गौरीकान्तक बेटा पानिक दसटा बोतल संगे नेने आएल छेलइ। बोन-झाड़ भेल घराड़ी गौरीकान्तक। भाय मिथिलाक ने माटि छी, बिनु केनौं-धेनौं किछु-ने-किछु होइते अछि। कोनो कि राजस्थान आकि गुजरातक थोड़े छी जे बलुआएल रहने किछु जनमबे ने करत।

चारि बजे बेरूपहरमे गौरीकान्त गाम पहुँचल छल। बेटाकेँ पहिल भेँट गामक रहइ, ओना जन्म अखुनका झाड़खण्डेमे भेल छेलै, जइसँ दू-तीन खेप बच्चामे गाम आएल छल, मुदा ओ पाँच बर्खक अवस्थासँ पहिनहि। गाम अबिते गौरीकान्त जखन हिया कऽ गाम दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे जहिना गामक भूगोल बदैल गेल अछि, भरिसक तहिना लोकक गणितो तँ बदलिये गेल अछि! ओना, अपन इतिहास की अछि से तँ अपने जानब। मुदा लाख मनक बोझ

मनपर पड़िते गौरीकान्तक मन अखनो ओइ विचारसँ सक्कत ऐछे जे विचारि आएल छल- जिनगीक शेष भाग समाजमे बिता समाजक हाथे संस्कार लेब।

गौरीकान्त हमर लंगोटिया संगी छी, जहिना गाममे एकठाम घर तहिना एक उमेरक सेहो ऐछे आ संगे-संग केजरीवाल हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पासो केने छी। गामक हम दुइये गोरे एक किलासक संगी रही। गौरीकान्त हमरासँ नीक रिजल्टो आनए आ पढ़ैयोमे तेज रहए, तँए ओ साईंस रखने छल आ हम कनी दब–माने भुसकौल–रही तँए आर्ट रखने छेलौं। तहूमे ओहेन विषय सभ, जेकरा चूड़ा-दही-चीनीक भोज बुझि सभ मैथिल बैस-बैस खाइत रहल। ओना, हाइ स्कूलमे एकटा बात ईहो छल जे पढ़ाइक क्रममे–विषयवार–घेरा-घेरी सेहो छल आ से किछु जानियोँ कऽ छल आ किछु अनजानोमे।

..माने ई जे सम्पन्न हाइ स्कूल रहितो झंझारपुरमे जहिना वायोलॉजीक पढ़ाइ नइ छल तहिना तमुरिया हाइ स्कूलमे कॉमर्सक पढ़ाइ नइ छल। हँ! जे नव-धव विद्यालय छल, अर्थक अभावमे जे शिक्षकक जोग नइ बना सकल छल, ओकर तँ बाते भिन्न भेल। खाएर जे भेल, मुदा झंझारपुर जहिना डॉक्टरकेँ पैदा करैमे नपुंशक रहल तहिना तमुरियो वेपारीकेँ पैदा करैमे नपुंशके रहल।

अमेरिकाक माटि-पानिमे रमल गौरीकान्त अपन रहैक अपना जनैत बेवस्था केनहि आएल छल। एते तँ समय आगू बढ़िये गेल अछि जे एकटा वैगमे पाँच हाथक रहैक घरसँ लऽ कऽ कुर्सी-टेबुल आ कोंच-पलंग तक आनि हवा भरि बनाइये सकै छी।

तीन दिनक रूटिंगमे सुनील आएल अछि जइमे माए-बापकेँ–माने दुनू परानी गौरीकान्तकेँ–रहैक असथाय बेवस्था करैत, चारिम

दिन अमेरिका विदा भऽ जाएत। ओना, गाम पहुँचैमे गौरीकान्तकेँ सीमाकातमे पुछए पड़ल छल। किएक तँ गामक मुँह-कान जहिना नहर-सड़क बनौलक तहिना उजाड़बो तँ करबे केलक। तँए गाम देखि गौरीकान्त भकचकाएल जरूर, मुदा अपना धराड़ीक कोणपर जे तहियेसँ ताड़क गाछ छल ओ छेलैहे, जेकरा ठेकना गौरीकान्त अपन घराड़ी चीन्हि पएर रोपलक। गाड़ी-सवारीक झमारल तीनू गोरे–दुनू परानी गौरीकान्त आ सुनील–रहबे करए, तँए सुतै-बैसैक बेवस्था अबिते कऽ लेलक। पर-पैखाना तँ धड़फड़मे नहि बनौल जा सकैए, आ ने तेकर कोनो तेहेन हलतलबीए बुझि पड़लै, किएक तँ सौंसे घराड़ी बोन-झाड़ लगले अछि। खाइ-पीबैक सेहो बेसी तरद्दुत करैक जरूरते नहि। आठ दिनक खेनाइक पैकेटे बनौल अनने अछि।

दोसर दिन भोरमे चाह-ताह पीला पछाति तीनू गोरे सुतै-बैसैक वस्तु छोड़ि, बाँकी सभ किछुकेँ समेट पीठपर लादि गामक अपन खेत-पथार टोहियाबए विदा भेल। दूटा खेत पुरना सड़कक कातमे जे रहै ओ लगले भेट गेलै मुदा तीनटा जे बाधमे छेलै ओइ बाधेमे पानि पसरल देखि घुमि कऽ चलि आएल। अबिते नहाइक इच्छा तीनू गोरेकेँ भेल, पियास तँ बोतलक पानिसँ ससाइर लेलक मुदा नहाइक तृष्णाकेँ तँ पोखैर, इनार आकि चापाकलेसँ ससाइर सकैए। ओना, एक्के घन्टामे खेत घुमि कऽ माने खेत देखि कऽ तीनू गोरे डेरापर डन्टा नेने आबि चुकल छल। तैबीच एकटा संजोग बनल। संजोग ई बनल जे अही गामक एक गोरे, जेकर उमेर करीब पैंतालीस बर्खक अछि, ओ अमेरिकासँ आएल दोसर संगी पौलक, तँए बिनु बजौले गौरीकान्तक ऐठाम पहुँच गेल। ओकर नाओं छिऐ- ठकनलाल।

जिनगीक सोल्हम बर्खमे ठकनलाल गामसँ बम्बै नोकरी करए गेल, शुरूमे एकटा कारखानामे लेबरक श्रेणीमे काज करए लगल। मुदा ओ बेसी दिन नहि केलक, किछुए दिनक पछाइत लेबरक

ठीकेदारी करए लगल। माने गाम-घरसँ आएल छुट्टा श्रमीक सभ जे भोरू-पहरमे चौक-चौराहापर मौजूद रहैए आ उट्ठा काज गछैए, ओकरे ठीकेदारी करए लगल। बम्बै शहरमे रहैत रहैत ठकनलालकेँ कनी-मनी पाँखि जनमए लगल। साल भरिक पछाइत ठकनलाल गाम-घरसँ लोककेँ बझा-बझा कारखानामे लगबए लगल। आमदनी बढ़लै। मुदा जहिना अकासमे उड़ैत गोटे चिड़ै अपन जेरसँ हजारो किस्मक दोसर चिड़ैक जेरमे वौआइत पहुँच जाइए आ पहुँचला पछाइत ओइ चिड़ैक की गति होइ छै, ओ तँ चिड़ै-चिड़ैपर निर्भर अछि। ओना रेंगिग सिस्टम नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे अछि आ जेतए अछि से तेतइ रहह...।

पाँखि भेला पछाइत ठकनलाल सेहो एकटा अमेरिकन ठीकेदारक हाथे अमेरिका पहुँच गेल। केतए की भेलै से तँ अखन तक ठकनलाल केकरो लग नहि बाजल तँए हमहूँ नइ बुझै छी। मुदा एकरो तँ झूठ नहियेँ कहल जा सकै छै जे ममियौतो भाय आ पिसियौतो भाय अपन-अपन रुपैआ खर्च कऽ कऽ जहलसँ निकालि कऽ नहि अनने छल। ओना, दुनू मसियौत-ममियौत भाय ठकनक दुनू बेटाकेँ अपने लग रखि कमाइक गर धड़ा देने अछि। जेलसँ एला पछाइत ठकनलालकेँ परिवारक सभजन बैस निर्णय कऽ लेलक जे ठकन गाममे रहत। ओकरा हजार रुपैआ महिना गाममे देब। ओही कारावासक पड़ल ठकनलाल गौरीकान्तक ऐठाम पहुँचल।

भाषाक मिलानी होइमे गौरीकान्तकेँ मिसियो भरि परेशानी नइ भेल। किएक तँ दुनू गोरेकेँ गामक भाषासँ लऽ कऽ अमेरिकन भाषा तकक मिलानी रहबे करइ। दुनूकेँ अमेरिकासँ लऽ कऽ गाम धरिक एक-कनिहा संगी भेबे कएल। मुदा तइमे कनी फेंट-फाँट भेल। फेंट-फाँट ई भेल जे गौरीकान्त दुनू परानी अमेरिकाक खाएल-पीअल-रमल-बसल, मुदा ठकनलाल से नहि, असगरे खाएल-पीअल-रमल-

बसल आ घरवाली सोलहन्नी गामेवाली रहलै ओना, धरतीपर जे जिनगी पौलक ओकरा सभकेँ धरतीक सुख पबैक आ जीबैक इच्छा छइहे, मुदा ओइमे ओझरी लागल अछि। खाएर जे अछि, ओझरीक पोझरीकेँ पछाइत सोझराएब। जखने दू आदमीक बीच काज करैक एक-शैली आबि गेल तखने गामक काजमे धक्का लगबे करत। दुनू गोरेक बीच दसे मिनटमे काजक दौड़ शुरू भेल। गाम-गाममे दस-बीसटा गाड़ी-सवारी भइये गेल अछि। ठकनलालक संग सुनील रमकल। दुइये किलोमीटरपर बजार, जैठाम चापाकलक समानसँ मिस्त्री धरि भेटैए।

चापाकलक मिस्त्रीकेँ बुझल जे ऐठाम तीस-पैंतीस फुट निच्चाँमे पानि भेट जाइए। केहेन पानि औत आ नइ औत तेकर ठिक्काक भार तँ नइ अछि। सोझे पानिक ठिक्का-पट्टा पटि गेल। ठकनक संग सुनीलो अमेरिकन चालि पकैड़ लगले कलक मिस्त्रीकेँ हुण्डे काज सुमझा आगू बढ़ि ईंटा-सिमटी-लोहा इत्यादि घरक समानक सभ जोगार बैसबऽ चलि गेल। जाबे ठकनक संग सुनील डेरापर पहुँचल ताबे कलक मिस्त्री, बिनु नापक कल जकाँ तीस फुट पाइपक जगह साए फुट पाइपक हिसाब लगा, कलसँ पानि निकालि दरबज्जापर बैस गेल।

..सभ हिसाबक मुँह-मिलानी करैत पचास रुपैआ बकशीश पबैत मिस्त्री खुशी-खुशी गाम गेल। काजक शैली दू रंगक होइए। पहिल तँ सभकेँ बुझल अछिए जे ऑफिसक टेबुलक फीस बनल छै, दैत चलियौ आ काजकेँ तेज गतिये करैत चलू। मुदा दोसर शैली लिखित-अलिखितक बीच ओझरा गेल अछि, जेकर प्रभाव गाम-गाममे केहेन अछि ई तँ गौंवे ने बुझि सकै छैथ।

तेसर दिन गौरीकान्त बैंक सबहक मुँह-मिलानी करता। तेकर

समय बनल। तेसर दिनक काज करैत सुनील अमेरिकाक बाट तीन दिन पहिने जहिना चारि बजेमे पहुँचल तहिना पकैड़ लेलक। गामक लोक आड़ि-मारिबला अछिए, कियो अमेरिकासँ आबैथ आकि लंकासँ, समाजमे जेहने जिनगी रहल छैन तेहने ने भोग भोगता। ओइमे गामक लोक केतौ नहि रहत। मुदा तँए की लोकक आवाजाही घटल सेहो बात नहियेँ अछि।

चारि कोठरीक घरक संग कीचेन, बाथ रूम सबहक बेवस्था संगे बनबैक विचार गौरीकान्तक भेलैन। ओना, दलान बनौत कि नहि, से थोड़ेक लटपटाएल अछि। किएक तँ गौरीकान्तक आगू धर्म संकट फँसि गेल। धर्म संकट ई जे दलान पुरुखकेँ बैसैक छिऐ, गामक लोकक आबा-जाही नहि, तैठाम दुनू परानी सड़कक कातक दरबज्जापर केना बैसब। भाय, गाम जखन गौरीकान्त आबि गेल तखन पुरनो गप-सप्प तँ किछु उखड़बे करत किने? जखने पुरना गप-सप्प उखड़त तखने लंगोटिया संगीमे अपनो हिसाब हेबे करत। जँ से हएत तँ ओकरा हिसाबक बहीमे नाम दर्ज भऽ जाएत। मुदा अपनो तँ समाज छी जैठाम जीबैक विचार होइए तैठाम जँ एक जुगक समाजक जीवन्त बेकती जँ श्रद्धासँ अन्तिम संस्कार पबैले गाम आएल, तखन जँ से नइ भेटै ओहो तँ समाजक कलंके भेल। तइ कलंकक भागी तँ हमरा छोड़ि कियो दोसर हएत नहि। किएक तँ धरमराजक दरबार जखन अन्तिम बेरिया पहुँचब, तखन जिनगी भरिक ने हिसाब-बारी हएत जे जे समाज अहाँकेँ स्वतंत्र जीबैक अधिकार देने अछि तेकरा अहाँ की देलिऐ?

गौरीकान्तसँ भेँट करैक विचार मनमे रोपि लेलौं। ओना, गौरीकान्तक तीनू दिनक जिनगीक हिसाब बुझिये रहल छी जे महाकाल जकाँ समझ रहलै। तँए जखने महाकालीक पूजा हएत तखने छोट-छीन देव-देवी पछुआ जेबे करत। अपनो तँ एते सोन्हि

भेटिये गेल अछि जे काने-कान ने सुनैत सुनब- गौरीकान्त गाम आएल। तैबीच तँ हजारो कान बीचमे अछिए। तहूमे तीन दिन बेसी नइ भेल, पचि सकैए। तँए दोखी बनैक बाट नइ देखलौं। चारि-छह मास जन्मक अन्तर दुनू गोरेक बीच अछि। दुनू गोरे संगे-संग हाइ स्कूल तक पढ़लौं। गौरीकान्त साइंस पढ़ि इंजीनियर भेल। पिता मेहनती लोक, मेहनतक उपारजनमे पढ़ब-लिखब दिस खर्च करबकेँ नीक बुझै छेलखिन, तँए खर्चक कोताही कहियो ने हुअ देलखिन। गौरीकान्तो प्रतिभाशील, असानीसँ इंजीनियर भेल। प्रतियोगितो औझुका जकाँ नहि छल। जे आइ झारखण्ड राज्य छी ओ बिहारे छल। इंजीनियर बनि टाटानगरमे नोकरी शुरू केलक। बिआह नइ भेल छेलइ। इंजीनियर बनिते सुभ्यस्त परिवार सभसँ घटक सभ पहुँचल। अन्तो-अन्त अंग्रेजी ऑनर्सक कन्याँक संग बिआह भेल। इंजीनियर बनिते गौरीकान्तक अपन मन जेते अमेरिका जा नोकरी करैक भेलै तइसँ बेसी पत्नी आ सासुरक भेल। किएक तँ सासुरमे एकटा ओहन बेकती रहैथ जे नोकरी करैले अमेरिका गेला आ दसे बर्खक कमाइसँ गाम आबि अपन इंजीनियरिंग कॉलेज चला रहला अछि। से बुझल-देखल रहबे करैन, तँए बेसी जोर देलखिन। तैसंग पत्नियोँकेँ जेठुआ टुकलीकेँ जहिना धिया-पुता नाँगैरमे काठी खोंसि उड़बैए तहिना तेतेक उड़ौलकैन जे दिन-राति जागलो-सुतलमे अमेरिके देखैत। अमेरिकाक नाओं सुनिते कियो कहैन- “बहिन, स्वर्गक भोग तोरेटा कपारमे विधाता लिखलखुन!”

तँ किम्हरोसँ पत्र अबैत- “बहिन, आब तों बहिने जकाँ भरि जिनगी बहिने बनल रहि जेबह!”

एक तँ बिनु बोझ पड़ल महिला गौरीकान्तक पत्नी कनछुट्टू रहबे करइ। खाएर जे रहइ, जेहेन रहइ.., मुदा पाँच सालक पछाइत टाटानगरक नोकरी छोड़ि गौरीकान्त अमेरिका चलि गेल।

तीस साल नोकरी केलाक पछाइत, इंजनक बीच इंजन बनल गौरीकान्त चारि साल पहिने सेवा मुक्त भेल। व्यस्त जीवन अमेरिकाक ऐछे, पत्नी छोड़ि दोसर लगमे कियो ने बैसनिहार आ ने हबे-गब केनिहार। तइमे मात्र दुइये परानी, कखनो बेटा नजैर पड़ैत तँ पुतोहु नहि, कखनो पुतोहु तँ बेटा नहि। अपने दुनू परानी काजसँ अकाज भइये गेल अछि। जइसँ जीवन्ता जिनगीसँ हटिये गेल छइ। पहाड़पर सँ ढरकल जिनगी भइये गेल छइ। मुदा किछु छै, एते तँ जीबठगर गौरीकान्तकेँ मानले ने जाएत जे जिनगी भरिक हेराएल-भोथियाएल जँ अन्तिम संस्कार धरि आबि गेल तँ ओकर उद्धार होइते अछि।

चारि बजे बेरू पहर गौरीकान्तसँ भेँट करए विदा भेलौं। बीघा डेढ़ेक दूरीपर घर। घर मरने घराड़ी कनी बोनाह भइये गेल छइ। मुर्दघटी जकाँ तँ नहि, मुदा मरण-हरणक नुआँ-बिस्तर आ टुटल-फुटल तौलो-कराहीक कान-खापट तँ फेकल जाइते अछि। इनार भथा गेल। पुरना–माने पैछला जिनगीक देखल–मात्र एकटा ताड़क गाछ ठेकानपर, बाँकी सभ बेठेकना गेल। जे आमक गाछ, पाँच बर्खक छल ओ चालीस बर्खक भऽ गेल। गामक पाँचटा पोखैरमे तीनटा कमला-बाढ़िमे भथाइये गेल आ बँचल जे दूटा अछि ओकरो मुँह-कान तेना ने झड़ल-झुड़ल अछि जे ओहो अपन पुरना चिन्ह बिसैर गेल।

दुनू परानी गौरीकान्त टेन्टमे बैसल अपन ढहैत जिनगीक गर-गुर लगबैक सोंगर-सबहक विचार करैत छल। आगूमे मकानक काज चलैत रहइ। माने चारि कोठरीक पक्का मकानमे हाथ लागल छेलइ।

टेन्टसँ आगू बढ़िते रही कि आगूए-सँ ठकनलाल दुनू हाथे पकैड़ आगू देखबए लगल। अपनो मनमे भेल जे जाबे काज–कृत्ति–

कैँ आँखिसँ देखि नइ लेब, ताबे काजक बात बुझब केना? जँ गपो-सप्प करब तँ ओ काजोक भऽ सकैए आ अकाजकोक। तँए पहिने काजेकैँ–माने मकानक नींवक खुनाइकैँ–किए ने अगुआ ली। ठकनो लाल गामसँ अमेरिका तकक खेलाड़ी अछिए। मकानक नींवक कोण लग पहुँचा ठकनलाल खाइ-पीबैक जोगारमे टेन्ट पहुँच गेल। गौरीकान्तसँ कोनो वस्तु पुछैक जरूरत ठकनलालकैँ रहबे ने करइ, तँए गौरीकान्त किछु बजबे किए करत। सभ जोगार-पाती–माने खाइ-पीबैक वस्तु–टेबुलपर लगा ठकनलाल फेर लग पहुँच गेल। ओना, एतेक जरूर भेल जे ठकनलालकैँ संग छोड़ने नींवकैँ हिया कऽ देखैक समय भेट गेल। शहरी स्टाइलक घर। जेहने घर-घराड़ी बनाएब तेहने ने सरो-समाज देखब...।

तैबीच ठकनलाल बाजल-

“काका, दुइये गौरेमे केते घर की करता।”

आन सभसँ कनी हटलो रही आ कनी अपनो बोलीकैँ दबलौं, तँए फुस-फुसा कऽ नइ बुझू, मध्यम स्वरे बुझू। बजलौं-

“ठकन, जखन मनेजरी लेलह तखन अपनो परिवारक ने जोगार बैसैबतह। एतबो नइ बुझै छहक जे सड़ल-पाकल दुनू परानी गौरीकान्त आबि गेल। माथो दुखैते ते कहतह मुम्बैये हॉसपीटल लऽ चलैले। पाँच दिन आकि दस दिन, जे समय लगतह तैबीच दुनूठाम माने अहूठाम आ अपनो ऐठाम, ओगरवाही केना करबह?”

ओना, ठकनलालक अपन सोच रहै जे पाँच सालसँ कममे नीक जकाँ घर नहियेँ सजत तैबीच सभतुर लागल रहबे करब, जँ कहीं तइ बिच्चेमे दुनू परानी मरली तँ अपन सजौल-बनौल घर अपने सभ परानी ने भोगब। जहिना अपन परिवार शहरसँ गामक जहलखानामे पठा देलक तहिना ओकरो सभकैँ देखा देबै जे हमर

माए-बाप बड़ बुद्धू नइ छल जे ठकना नाम रखलक..! मुस्की दइते ठकनलाल टेन्टक भीतर हवादार कुरसी-टेबुल लगा अरियातए आएल छल, बाँहि पकड़ने लऽ जा कऽ गौरीकान्त लग बैसौलक।

अपना मनमे नचैत छल जे हाइ स्कूल तकक जिनगीक संगी दुनू गोरे रहि चुकल छी। ओतबे संगपनामे ने अखन धरिक संग पुरल अछि। मुदा ओ तँ अपना समयमे निमहल। आब तँ दुनू परानी गौरीकान्त सड़ि-गलि-पकि आएल अछि। बेटा-पुतोहु अमेरिकामे रहतै। जे दोहरा कऽ गाम औत कि नहि। अमेरिकेमे ओ सभ रहत आ माए-बापक श्राद्धो-कर्म ओतैसँ सुनि मानत। मुदा गाम तँ से नहि छी। गामक धरतीपर पहुँच गेल अछि। श्राद्ध केनिहार खरचा दुआरे कियो भलेँ नइ तैयार हुअए मुदा मरैक जगह लग, चारि हाथ खाधि खुनि ओइमे नइ मटिया देत, एहनो अबिसवास तँ नहियेँ कएल जा सकैए। मटियेबे करत। ओना, जहिना अपना मनमे होइ छल तहिना गौरीकान्तक मनमे सेहो छेलैहे। तैबीच ठकनलाल चौहद्दी बान्हि चुकल छल, तँए कान्ही मिलानमे देरी किए लगैत। की कहाँ, पान-सातटा पुड़िया आनि ठकनलाल टेबुलपर पहिनहि पसाइर चुकल छल। मनमे हुअए जे एते जे खेला पछाइत गप-सप्प शुरू करब आ टटके खेलहा बिसैर जाएब सेहो केहेन हएत। बजलौं- “ठकन, जहिना अबै बेरक जलखै होइए तहिना ने जाइ बेरक पनपिआइ सेहो हएत, तँए आपस होइकाल ई सभ खेबह। अखन चाह टा पीबह।”

ईहो तँ अमेरिकन गुण अछिए जे खाइकाल जखने कहत ‘नहि’ आ जँ थारीमे दऽ देलिऐ तँ लगले मारि बैसत। ठकनलाल अपन चालि पकैड़ मानि लेलक। दुनू परानी गौरीकान्तक संग गप-सप्प शुरू भेल। सुहरदे मुहेँ गौरीकान्त बाजल- “गाम बिसैर गेल हएत।”

गौरीकान्तक प्रश्नक भीतर नीक-बेजाए अनेको प्रश्न छिपले

अछि, ओ केना लगले बाजल जा सकैए आकि तत्काल टारले जा सकैए..? बजलौं-

“गाम केकरा बिसरल जे तोरा बिसरतह?”

ओना, मनमे ईहो होइत रहए जे जँ पाइ बेसी हेतै तँ एहेन स्कीम धरा समाजक एकटा बास स्थल किए ने बनैक विचार देब। ओना, अपन आँखिक ज्योति जेहेन गौरीकान्तक हेतइ, तेहन देखत। मुदा अपन नजैर गौरीकान्तक पत्नीक निच्चाँ-ऊपर घुमि रहल छेलए जे आब केहेन विचार मनमे उठि रहल छैन। सेवा दुआरे बेटा-पुतोहु गाम अबैक विचारमे मिसियो भरि देरी नइ केलक..!

गौरीकान्त अपन जुगक जिनगीक जखन समीक्षा करैत तँ पबैत जे जइ अवस्थामे अखन पहुँच गेल छी, तेकर निमरजना केना हएत, ई परिवारक मिलल धारक ऐगला छोर छी, जँ बीचमे सुखा जाएत वा भथन भऽ जाएत तखन तँ जिनगीक धारे अवरूद्ध भऽ जाएत..!

खसल मने गौरीकान्त अपनाकेँ समर्पित करैत बाजल-

“भगवाने दरबार जकाँ समाजोक दरबारकेँ बुझिये रहल छी, तँए अपनाकेँ ओइ समर-भूमिमे समर्पित करबे करब।”

आगू बजैक सभ रस्ता बन्द देख, बिना किछु बजने प्रणाम-पाती करैत ओतए-सँ विदा भऽ अपना ऐठाम चलि एलौं।



शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टूबर 2017

ऐँठ साड़ी

आइ छठिक खरना पाबैन छी। साढ़े सात-पौने आठ बजे भिनसुरका बात छी। ओना नीन समैयेपर टुटि गेल छल मुदा पाबैनक उछाही नीन टुटिते आगूमे खसि पड़ल। आगूमे खसल, माने जखने आइक प्रभात दिस तकलौं कि छठिक खरना नजैरपर आएल। जहिना छठिक खरना नजैरपर आएल तहिना सूर्यक अर्घ सेहो आएल, मुदा तैसंग ईहो आएल जे अर्घ देल जाइए सूर्यकेँ मुदा पाबैनक नाओं छी छठि परमेसरी..!

अखन तक ऐ प्रश्न दिस नजैर कहियो उठले ने छल जे एकेबेर बोझ जकाँ तेना माथमे चढ़ि गेल जे नीन टुटला पछातियो ओछाइन छोड़ैक साहसे ने हुअए। तैबीच किसनी काकीकेँ पुतोहुक संग कहो-कही आ ललको-ललकी शुरू भेल। सेटले आँगन अछि, ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल सुनए लगलौं। किसनी काकी अपन पुतोहुकेँ कहलखिन-

“तोरा धिरित नइ छह!”

ओना, किसनी काकी अपना पतोहुपर ललैक कऽ बाजल छेली मुदा ‘धिरित नइ छह’ सुनिते मन ठमकल। सोचलौं, जँ अखन काकीक आगू जाएब तँ पुतोहुक शब्द हमरेपर छोड़ए लगती। हो-न-हो जँ कहीं यएह पुछि दैथ जे आइ कोन पाबैन छी, पुरुखक आकि स्त्रीक..? तँ की हुनका हम बुझा कऽ शान्त कऽ सकब? पुरना घावपर नून छीटि अनेरे जे देहो आ मनोकेँ विसविसाएब तइसँ नीक

पत्नीए-केँ पठा बुझि ली।

पत्नीकेँ कहलयैन-

“किसनी काकी आइ भोरे-भोर किए एते गरमाएल छैथ, से कनी बुझने आउ ते...।”

कनियोँ देरी हएत तँ बुझले अछि जे ओ केहेन ठोर-पकाहि लोक छैथ, लगले कहए लगती जे ‘तूँ हमरा आन बुझै छह जे सभटा उधारीए खाता चलत। जे समांग जीबैतमे आँखिक सोझमे सेवा-बरदास नहि करत ओ मुइला पछाइत केते करत तेतबो की नइ बुझै छी।’

जहिना पत्नीकेँ कहलयैन तहिना ओ विदा भेली। तइ बिच्चेमे किसनी काकी दोहरा कऽ बजली-

“जखैन गामे-लोककेँ धिरित नइ अछि तखैन परिवार सबहक की रहत..!”

कान ठाढ़ करि कऽ रहबे करी, धियान किसनीए काकीपर रहए। कनी नरमाएल आवाज बुझि पड़ल। किए तँ परिवारक संगे गामक बात सेहो बाजि रहली अछि। जरूर कोनो तेहेन बात मनमे हेतैन। अपन जे प्रश्न छल- भगवान भास्करक अर्घ आ छठि परमेसरीक पाबैन, तेकरा मने-मन बन्ठा काकापर सोंपि, मुँह-कानमे पानि लइले तैयार भेलौं। बन्ठा काका, माने हाइ स्कूलक ओहन शिक्षक जे अपन विचारपर ठाढ़ होइक दम रखने छैथ। बच्चेसँ नीक विद्यार्थी रहला। विद्यार्थी जीवनसँ लऽ कऽ जहिया नोकरी शुरू केलैन तहिया तक ‘सुलोचन कुमार’ नाओंसँ जानल-मानल जाइ छला। मुदा नोकरीक पछाइत गामक लोक हुनका ‘बन्ठा काका’क नाओंसँ पुकारए लगलैन। तेकर कारण शरीरक कद भरिसक सेहो छैन। ओना, समाजक देल नाओं ‘बन्ठा’, ‘बन्ठा बौआ’, ‘बन्ठा

भाय’ आ ‘बन्ठा काका’ जे छैन यएह ने ससैर कऽ ‘बन्ठा बाबा’ तक पहुँचतैन। माए-बाप छठियार दिन बेटा-बेटीक नाओं रखैए। नाओं रखैक माने भेल समाजक दाइ-माइ सभ जे अपनामे विचारि आमक पातपर लिखि नामक प्रस्ताव दइ छथिन, तेकरे ने माए-बाप मानि अपन बच्चाक नाओं घोषित करै छैथ। तहिना ने समाजक देल नाओं सोल्होअना स्वीकार भेलैन। धनपत राय जहिना ‘प्रेमचन्द’ भेला, मुनीन्द्र चौधरी ‘राजकमल’ भेला तहिना सुलोचन कुमारसँ ‘बन्ठा’ सेहो भेला। ओना ई नाओं शुरूमे सुलोचन कुमार जखन धिया-पुताक जेरमे आमक गाछीक अखड़ाहापर जाइ छला तहियो ‘बन्ठा पहलमान’क नाओं धारण केने छला। मुदा अखड़ाहा छोड़ला पछाइत जखन विद्यालय धेलैन, तेकर पछाइत लिखित नाओं एने पुन: ओ दबि गेलैन।

पत्नीकेँ अबिते कहलयैन- “दोहरा कऽ किसनी काकी लग जाउ आ हमरे नाओं कहबैन जे धाहे-बोखारे फल्लाँ धऽ धऽ जरै छैथ, से कनी चलि कऽ देखथुन।”

ई सोचि बजलौं जे आँगनसँ जखने काकी निकैल औती तँ गप-सप्पक क्रम बदलने मनो बदलतैन, जइसँ विचारमे ढीलपन औतैन। जखने विचारमे ढीलपन देखबैन कि गपक पाशा बदैल कीकीकेँ दोसर दिस मोड़ि देबैन। अनेरे पाबैन-दिन जे भोरेसँ घौचाल शुरू भेल ओहो दबि जाएत।

कहलापर पत्नी आँगनसँ तँ निकैल काकीकेँ बजबए विदा भेली, मुदा जखन अपने चद्देर-तद्देर ओढ़ि बोखरलग्गु बनि सिरमापर मुड़ी देलिऐ कि पत्नी दरबज्जाक कोनचर लगसँ हिया कऽ देखए लगली। हिया कऽ देखैक कारण भरिसक ई रहैन जे जखन काकी लग झूठ बजैले जाइ छी, तखन झूठ बजौनिहार केते अपन झूठक मेकप केलैन...। अपनो मनमे भेल जे सोझमतिया किसनी काकी

छथिए, पतिआइमे देरी लगबे ने करतैन। भाय, पाबैन-दिन छी, भोरेसँ जँ किसनी काकी विवाद लधती तँ हो-न-हो दुपहर होइत-होइत कहीं पाबनियेँपर ने अट्ठा-बज्जर खसि पड़ए। जखने एकबेर अट्ठा-बज्जर खसत कि पाबनियेँ खोंर भऽ जाएत। खोंर भेला पछाइत जहिना जितिया पाबैन खोंर भऽ एकसंझू बनि जाइए, तहिना भऽ जाएत। जखने जितिया पाबैन जकाँ छठि एकसंझू हएत तखने...। छठि कि कोनो आन पाबैन छी जे एकसंझूओसँ काज चलि जाएत। दू-संझू पाबैन छी, अनेरे एकटा टुटि जाएत! तहूमे जँ छीप दिससँ टुटत तँ जड़ि दिस अदहा लगने लगलो रहैत, मुदा जँ कहीं जड़ि दिससँ टुटल, तखन तँ दुनू कूर समाप्त! तँए किसनी काकीक मनकेँ बदलब जरूरी बुझिये पड़ल।

अपन मुँह झाँपि दुखताह की बनब जे अँगनासँ निकैलते पत्नी ड्योढ़वालीकेँ ललकब सुनए लगली-

“एना होइ! किसनी काकी किए बजली जे ललमुँही सभ सभटा पाबैन ढंस केने जाइए..!”

ड्योढ़वाली बगलेमे पड़ोसीक परिवार छथि।

ड्योढ़वालीक बात सुनि पत्नी दरबज्जाक मुँहथैरपर ठमैक कऽ ठाढ़े रहली। एक तँ दरबज्जाक आगूए-मे पड़ोसनी किसनीए काकी-दे बजैत, आ किसनीए काकीकेँ बजबैले जाइत रहैथ। पत्नीक मनमे भेलैन जखने किसनी काकीकेँ बजा कऽ अनबैन आ अपना काने ड्योढ़वालीक बात सुनती, तँ अनेरे अहीठाम कहा-कही शुरू हएत! जखने घर लग कहा-कही हएत तखने सभ छार-भार अपना ऊपर खसत! पत्नीक मने घुमए लगलैन। ने आगू डेग उठबैक साहस होनि आ ने पाछू हटैक। बलुआह माटिक मुरुत जकाँ ने एक बून पानि थम्हैबला आ ने चाननक शीलाक रगरक रग्गर थम्हैबला..!

दूरक ललक लगमे सुनए लगलौं। मुदा एकटा जरूर भेल जे कनी हटलमे जहिना किसनी काकीक आवाज बुझि पड़ै छल तहिना लगमे ड्योढ़वालीक। मरदा-मरदीक ललक नइ सुनने मनमे उठल जे ऐठाम सोलहन्नी दुखताह बनने काज नइ चलत, दोसर रंगक मेकप करए पड़त। सुतलसँ उठि चौकीए-पर बैस मने-मन विचारए लगलौं जे आब की करी? अपन विचारकेँ सोलहन्नीसँ अठन्नी बनेलौं। बनेलौं ई जे चौकीपर सँ निच्चाँ उतैर चद्देर ओढ़लौं। भाय! महिला जगतमे ने जा रहल छी, तँए ओहने रूप ने बनबए पड़त।

चद्देर ओढ़ि निच्चाँ होइते पत्नीकेँ देखि बजलौं-

“पाबैन दिन छी, एना जे पएर-मे जत्ता बान्हि आँटा पीसब तखन तँ छठिक ढोलक ‘ठकर-ठकर ठक-ठकुआ’ सुनिते रहब..!”

भाय, अपन घर अपने समेटने ने समटाइए। अनकर सभ खिड़की खोलि अपने बन्न कऽ कऽ राखए चाहबै से केना हएत। जँ अनकर खोलबै तँ अपनो खोलियौ। मुदा से पत्नी चेतली। चेतली ई जे चोट्टे आँगन दिस घुमैत बजली-

“अँगना-घरमे काज छिड़ियाएल अछि। अपनेसँ किसनी काकीकेँ देखियौन।”

तैसंग ईहो रच्छ रहल जे ड्योढ़ोवाली चुप भऽ पाबैनक जोगारमे लगि गेली। अपने आगू बढ़ि किसनी काकीक ऐठाम पहुँचलौं। ओतए चारि-पाँच गोरे ठाढ़ भेल गप-सप्प करैत रहैथ। जइमे बन्ठो काका छला। चद्देर ओढ़ल देखि अगुआ कऽ बन्ठे काका बजला-

“की बौआ, सभ दिन खइहह पबनियेँ ललैहह!”

बन्ठा कक्काक मुँहपर जवाब दइक हिम्मत नइ भेल। हिम्मत नइ होइक कारण भेल बनौआ दुखताह ने रही, तँए केमहरसँ की

बाजब से ओरियेबे ने कएल। बिच्चेमे लसैक गेलौं। केना ने लसैकतौं, जँ निरोग बनि बजितौं तँ भगलपन किए लधने छी? कोनो कि पूस माघक जाड़ मास छिऐ जे चद्देर ओढ़ने छी। अखन ते छठिक व्रतधारी एक-पहर साँझोमे आ एक-पहर भोरोमे छाती भरि जलतरंग करैए, तहूमे अनका सोझामे रहितौं तँ भग्गल भगलपन जोड़ि कहितिऐ जे मच्छरक दुआरे चद्देर ओढ़ने छी, मुदा बन्ठा काका लग एहेन झूठ बिना पकड़ेने रहब। आन भलेँ बन्ठा काकाकेँ अदना बुझैत होनि मुदा अपने तँ जरूर जनै छी जे बन्ठा काका पौराणिक पुरुख छैथ, जे बजता से करता आ जे करता से बजता। बन्ठा चमार जहिया बन्ठ लकड़ीसँ अखड़ाहापर बन्ठा हाथे ढोल बजबै छला, तहिया लोरिक-रूदल सन मनियार छल तेकरे जकाँ ने बन्ठो काका छैथ। तँए अपनाकेँ निरोग केना कहितिऐन? ओना, अपना मने ओ रोगी बुझि हमरा पाबैनसँ बाड़ि देने छला मुदा पाबैन-दिन अपनो केना पाछू घुसैकतौं। भाय, आसीन-कातिक छिऐहे सरदी-बोखारक मौसम छी, सएह ने हमरो भेल हएत। मुदा केते निरोग कहबैन आ केते रोगाएल, से नपैक थर्मामीटर थोड़े अछि। लगले दोसर प्रश्न आगूमे उठि गेल। उठि ई गेल जे जँ बेसी निरोग कहबैन तँ कहता जे चलह तँ पोखैरक घाट देखिऐ जे घाटक पानि पवित्र अछि की नहि, जलतरंग जोग अछि की नहि। जँ थाल-कादो हएत तँ सौंसे पोखैर भलेँ नहि, मुदा जेतबो दूरमे माए-बहिन हाथ उठा सूर्य भगवानकेँ अर्घ देथिन, तेतबो दूर तक फरिच जल रहत तखने ने पवित्रतासँ हाथ उठाएब हेतैन...।

फेर भेल जे एहेन भरिगर काजमे पड़ब नीक नहि। पोखैरक घाटेपर थाल-कादो हेतै तँ हौउ। सभकेँ थाले-कादो नीक लगै छै तँ अपनो नीके लागत। आ जँ अपन मन नइ मानत तँ चबुतरा देल चापाकल दरबज्जापर अछिए, बाल्टीन भरि पानि आगूमे रखि डाली

पसारि देब। जखने सूर्य भगवान मेघमे उगता कि धाँइ-दे बाल्टीनक जलमे नचबे करता, बस तखने अर्घ दऽ देबैन। तैबीच बन्ठा काका किसनी काकीकेँ बोधि नेने छला तँए वातावरण थोड़ेक नरमा गेल छल। जइ काजे किसनी काकी बिगड़ल छेली, तेकर निराकरण छठिक प्रात भनेक तिथिपर रहि गेल। पाबैन भरिक अंकुश किसनी काकीकेँ बन्ठा काका लगा चुकल छला। बजलौं-

“काका, पाबैन छिऐ, आइ तँ छुट्टीए-मे हएब। हमरे ऐठाम चलू, चाहो-ताहो पीब आ किसनी काकी भोरेसँ किए ललकारा भरै छेली सेहो कनी बुझि लेब।”

ओना, अखन तक हम अपना मने निरोग छी मुदा बन्ठा काका तँ रोगीए बुझै छैथ तँए ओ अपना ऐठाम चलि कऽ गप-सप्प करैक जगहसँ नीक हमरे ऐठमाकेँ बुझलैन। भऽ सकैए दुखताहक होनि वा बेसी दिनपर गाम एलासँ सामाजिकता सेहो होइन। खाएर.., दुनू गोरे विदा भेलौं। थोड़ेक आगू बढ़िते बन्ठा काका बजला-

“बौआ, की कहबह। तेहेन लंकाबास भऽ गेल अछि जे अखन तक चाहो ने पीलौं हेन।”

पुछलयैन-

“किए! अबेर-कऽ नीन टुटल की?”

‘अबेर’ सुनि बन्ठा काका सहमला। सहमैक कारण भेलैन जे जँ समैपर उठलौं, तखन चाहे किए पछुआएल? आ जखन पहिलुक काज- ‘चाह पीब’ अपन धुरी छोड़ि देलक तखन ऐगलो सबहक ने धुरी छुटि जेतइ? अपनाकेँ सम्हारैत बन्ठा काका बजला-

“बौआ, की पुछै छह! पाबैन-दिन छी, पबनौटक आशा सभकेँ अछिए, मुदा डुम्मा लोकक मुआबजा सरकारकेँ सभसँ बेसी भरए पड़ै छइ।”

काका बजिते छला, तैबीच दरबज्जापर पहुँचलौं। पहुँचते पत्नीकेँ कहलयैन-

“अखन तक बन्ठा काका तीन बेर चाह पीब नेने रहितैथ, से निराधारे छैथ, तँए तीनू बेरक मोजगरा पुराएब।”

बिच्चेमे बन्ठा काका लोकि लेलैन-

“ऐँह, अहिना लोक बजैए!”

मुहसँ निकैल गेल-

“केतौ अनतए बजलौं हेन।”

मुँह दुसैत बन्ठा काका बजला-

“यएह ने तोरा सन-सन नवतुरियामे बुड़िपन अछि जे पत्नियोँ लग पुरुख बनल नइ होइ छह!”

तैबीच, पत्नी शुरूहेमे जे चाह बनौने छेली ओ दूटा कपमे नेने एली। जहिना भोरुका तुकक चाह छुटने बन्ठा कक्काक मन खौंता गेल छेलैन तहिना चाह पीबते शान्त भेलैन।

बजलौं-

“काका, गाममे सभ दिन अहाँ नइ रहै छी, केतेको विचार, केतेको प्रश्न मनमे उठैए आ बिसैर जाइ छी। आन कियो गाममे अहाँ सन छैथ नहि, जे मनगर जवाब देता।”

एक तँ चाह पीला पछाइत बन्ठा कक्काक मन शान्त छेलैन्हे, तैपर हमर विचार सुनि आरो शान्त होइत बजला-

“मनमे तँ बहुत अछि, मुदा बहुत तँ बहुत लोककेँ तैयार भेने ने हेतइ।”

बन्ठा कक्काक बातसँ बुझि पड़ल, काका अपनो वौआइ छैथ आ हमरो वौएता। कहलयैन- “काका, दुनियाँ-दारीक गप-सप्प छोड़ू,

अखनो एकटा प्रश्न मनमे घुरियाइए। तँए पहिने ऐठाम तकक वृतान्त सुना दिअ, पछाइत अपन बात फरियाएब।”

पत्नी पान नेने एली। पान खेला पछाइत बन्ठा कक्काक मन जेना पूर्ण तृप्त भऽ गेलैन। ओना, मुँहक सुरखीसँ बन्ठा काका शान्त जकाँ बुझि पड़ैथ, मुदा मनमे अशान्ति छेलैन। अशान्तिक कारण छेलैन जे एक दिस लोककेँ देखै छला आ दोसर दिस पाबैन दिस तकै छला तँ बुझि पड़ै छेलैन जे कमला धारक कटहरबा घाटक कटहरक कोआ सभकेँ भेटबे करत...। गम्भीर होइत बन्ठा काकाकेँ देखि मनमे भेल जे छी छठि पाबैन, जइमे लोक पोखैर आकि धारमे स्नान करैत सूर्यकेँ अर्घ चढ़बैए आ दोसर दिस बन्ठा काका समुद्रमे डुमबैक विचार सुनबए लगता। तइसँ नीक जे अपने किए ने किछु चालि मारी। बजलौं-

“काका, चाहक यात्रा किए भङ्गैठ गेल?”

ओना बन्ठा कक्काक मन तुरछए लगलैन, मुदा जखन समाजेक पोखैरमे स्नानक संग सूर्यकेँ अर्घ दैक पाबैन छी तखन अपनो ने ओही समाजमे छी, तँए मनकेँ दबैत बजला-

“बौआ, आन दिन तोरा पितियाइनकेँ जगा कऽ उठबए पड़ै छल, मुदा आइ पहिनहि उठि सिरखड़ियावालीसँ कहा-कही करै छेली। हुनके दुनू गोरेक आवाज सुनि अपन नीन टुटल।”

पुछलयैन- “किए पाबैन-दिन, भोरे-भोर दुनू गोरे कहा-कही करै छेली?”

मुस्की दैत बन्ठा काका बजला-

“जहिना कोटाक खराँत-ले लोक डीलर ऐठाम ‘पहिने हम लेब’ तँ ‘पहिने हम लेब’ करैत कहा-कही करैए तहिना बुझह।”

बजलौं- “काका, आइ खरना पाबैन छी, तखन किए

डीलरबला गप बजलिऐ?”

बजला- “डीलरक ऐठाम चाउर-गहुमक बँटवारामे ते कनी लज्जैत रहितो अछि मुदा पाबैनमे की अछि से तँ स्त्रीगणे सभ जानैथ।”

बन्ठा काकाकेँ भँसियाइत देखि बजलौं-

“काका, आइ पाबैनक दिन छी, तोहूमे मन कनी गड़बड़ो अछि, तँए चौहद्दी छोड़ि अपन चास-बासक गप करू।”

बन्ठा काका जेना बुझि गेला तहिना बजला-

“बौआ, साड़ीक कहा-कही छल। सिरखड़ियावालीक कहब रहै ऐँठ साड़ीसँ खरना पाबैन नइ हएत।”

बन्ठा कक्काक बात सुनि सहमलौं, किएक तँ ‘ऐँठ’ की से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। पुछलयैन-

“की ‘ऐँठ’ काका?”

बन्ठा काका बजला-

“ऐँठ भेल जे, जे साड़ी एको दिन पहिरल हुअए।”

बजलौं-

“काकीक कहब की छेलैन?”

बजला- “हुनकर कहब जे अपने मनक बात छी, पहिल खींच देलिऐ ओ निरेठ भऽ गेल। जखन निरेठ भेल तखने ओ ऐँठ नइ रहल। तइले एते कहा-कही करैक कोन जरूरत। मुदा कहा-कहीक बात करैत जँ चाह बनबए कहितिऐन तखन ओ झगड़ा अपना दिस उनटैत की नहि, तँए चुपे-चाप आगू बढ़ि गेलौं।”

आगू बढ़ब सुनि अपनो नीक लागल। बजलौं- “नीक केलौं।”

हमर ‘नीक’ सुनिते बन्ठा काका बजला- “नीक की हएत

कपार! कनियेँ आगू बढ़लौं तँ देखलिऐ, सोनरेवाली आ कैथिनियाँवालीकेँ खूब ललका-ललकी रस्तेपर करै छेली। अपन-अपन बात सुनबैले दुनू गोरे रस्तेकेँ रोकने छेली। मुदा रच्छ रहल जे फरिकेसँ दुनू गोरेक गप सुनि नेने छेलौं। एकक कहब रहै जे खरना पाबैन करैले अलगसँ एकटा साड़ी बनि कऽ ऊपरेसँ आएल अछि, ओ पहीर लोक पाबैन करत।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"दोसरक कहब की छेलैन?"

बन्ठा काका बजला-

"दोसरक कहब रहै जे हम जे दुर्गेपूजाक मेलामे खरना पाबैनले साड़ी कीन नेने छेलौं से की करब। मुदा रच्छ रहल जे दुनू गोरे रस्ता छोड़ि देली। आगू बढ़लौं।"

"नीक केलौं, काका।"-हम कहलयैन।

बन्ठा काका बजला-

"नीक की करब, अपनेटा नीक केने थोड़े नीक होइए। आनो नीक बुझि करत तखन ने। किछु छी तँ लंकाबास छी किने। किछुकेँ छोड़ैत चलू, किछुसँ जुटैत चलू। किसनी भौजीकेँ अठ-अठ हाथ कुदैत पुतोहुपर देखलयैन। ओना, पुतोहु अपन हाथ ससाइर नेने छेली। तँए सासुक बातकेँ खलिया बन्दूकक आवाज बुझि अनठौने छेली आ अपन खरना पाबैनपर सुरता लगौने छेली। मुदा रच्छ रहल जे जखने किसनी भौजी आगूमे अबैत हमरा देखली कि एकाएक चुप भऽ गेली। ललकैकाल आँखिसँ नोर निकलै छेलैन कि नहि, से तँ नहि देखि पेलिऐन मुदा चुप होइते देखलयैन जे दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर टघैर रहल छैन। नोर देखि मन खटकल जे भोरे-भोर कोन एहेन खटका किसनी भौजीकेँ भेलैन!"

बजलौं- “ओना, किसनी काकी तँ छोट-छीन खटकाकेँ नइ मानै छैथ। जेना हरहारा साँपकेँ देखिते कियो डेरा कऽ पाछू हटि जाइए आ कियो हाथपर राखि खेलाइए, तहिना छोट-छीन खटकासँ किसनी काकी खेलाइ छैथ। मुदा जँ आँखिसँ नोरक टघार निकललैन तँ जरूर कोनो तेहेन काज रहल हेतैन।”

बिच्चेमे विचारकेँ छीनैत बन्ठा काका बजला-

“हँ, गम्भीर बात छेलैन।”

‘गम्भीर’ सुनि सुनैक जिज्ञासा भेल। बजलौं-

“की गम्भीर बात छेलैन से तँ कहने हेती किने?”

बन्ठा काका-

“पुछलयैन, भौजी दुनू आँखिसँ नोरक दुनू धार बहैए, से की?”

ऐगला बात हमरा पेटेमे रहए तइ बिच्चेमे किसनी भौजी कहली-

“बन्ठा बौआ, नवतुरिया सभकेँ बुझल हेतै कि नहि, मुदा अहाँ तँ सोझेमे तहियो छेलौं आ अखनो छी।”

कहलयैन-

“हँ, से तँ छीहे।”

हमर बात- ‘हँ, से तँ छीहे’ सुनिते किसनी भौजीक विचारक धारकेँ जेना धारा भेटल तहिना धड़धड़ाइत बजली-

“सासुर बसना जहिया पाँचे बर्ख भेल छल तहिये स्वामी मरि गेला, से तँ बुझले अछि।”

बजलौं-

“ताबे हमहूँ नवतुरिया रही। तँए, भाय जे मुइला से तँ बुझल

अछि मुदा किए मुइला से नइ बुझल अछि।”

किसनी भौजी-

“यएह पाबैन छी, अगते शीतलहरी पकैड़ नेने छेलइ। तहूमे अनाड़ी मास , माने उतारक मास छल तँए लगले जाड़क मसीम पकड़ा गेल।”

कहि किसनी भौजी ठमैक गेली। भौजीकेँ ठमैकते कहलयैन-

“हँ, कनी-मनी सालो मोन पड़ैए।”

‘साल’ सुनि किसनी काकीकेँ आरो सह भेटलैन। सहटैत सेरियाम धरतीपर उतैर बजली-

“ओही साल छठिए पाबैन दिन मरि गेला।”

बजलौं-

“आब नीक जकाँ मोन पड़ल। ओइ सालक शीतलहरीमे बहुतो लोक गाममे मरल। अखुनका जकाँ कि लोककेँ नुआ-बिस्तरक सुख छल। जाड़क मास अबिते केते लोक कठुआ-कठुआ मरै छल।”

किसनी भौजी बजली-

“सासुक मुँह देखि अपन जिनगीकेँ तियागि ऐठाम रहलौं। पतिक संग बेटोक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। एक तँ खेत-पथार बेसी नहि, तैपर जेहो छल तेकरो दियाद-वाद सभ हड़पैक कोशिश केलक। एहेन स्थितिमे दू सालक बेटाकेँ पोसलौं।”

मुड़ी डोलैत हमरा मुहसँ निकलल-

“से तँ आँखिक देखल अछि।”

तैपर किसनी भौजी बजली-

“अनका बेटा जेकाँ बेटाकेँ नीक जकाँ नइ पढ़ा सकलिऐ,

तेकर कारण छल जे एक दिस वृद्ध सासु अपन जिनगीसँ हारल-थाकल छेली, दोसर दिस भविसक बेटा। मुदा तैयो सम्हारैत-सम्हारैत बीस बर्खक बनाइये देलिऐ। आँखि-पाँखि भेलै, दस हजारक नोकरी दिल्लीमे करैए।”

कहलयैन-

“से तँ अहाँ स्त्रीगण रहितो परिवारक गाड़ीक धुरीकेँ, केकैयी जहिना रणभूमिमे दशरथक गाड़ीमे अपन बाँहि लगा समर जीतलैन तहिना गामक नमूना तँ छीहे। तँए नमनीय छीहे।”

हमर बात सुनिते किसनी भौजी पसीज गेली। अपन विचारक बहैत तूफानी बेगकेँ रोकैत किसनी भौजी बजली-

“बौआ, पाँचसँ दस प्रतिशत परिवार एहेन अछि जेकरा नुआ-बिस्तरक अभाव छइ। मुदा अधिकतर परिवार आब ओहेन अछि जेकरा जरूरतसँ बहुत बेसी कपड़ा-लत्ता छइ। कहुना-कहुना तँ बीस जोड़सँ बेसी कपड़ा अपनो घरमे अछि। तखन ई कोन बहाना भेल जे छठिक खरना-ले ‘ऐँठ साड़ी’ उपयोग नइ हएत। दू साए रुपैआसँ सौंसे पाबैन हएत, तैठाम ऐ खर्चक माए-बाप के भेल?”

भौजीक मनक बात बुझि गेलौं तँए असथिरसँ हुनका कान लग अपन मुँह लऽ जा फुसफुसा कऽ कहलयैन-

“जेहेन अहाँक लूरि-बुधि अछि तेहेन अपने ने जीवन-बसर करब आ जेहेन हुनकर–माने अहाँक पुतोहुकेँ–छैन तेहेन ओ अपने ने जीती। तइले अनेरे मगजमारी केने की फैदा।”

जहिना नढ़ियाक बोल नढ़िया, सुग्गाक बोल सुग्गा, हंसक बोल हंस आ कुत्ताक बोल कुत्ता परेख बाजए लगैए तहिना हमर बोल परेख किसनी भौजी कहलैन-

“कखन हमर पनचैती करब?”

कहलयैन-

“ई पनचैती थोड़े छी, छी तँ ठट्ठा। पाबैनक प्रात पनचैती हएत।”

बन्ठा कक्काक बात सुनि कहलयैन-

“तखन तँ ओमहरसँ अहाँक जान छुटिये गेल। आब, एकटा प्रश्न हमरो अछि। सूर्यक अर्घ, छठि परमेसरी पाबैन केना कहबैए?”

बन्ठा काका बजला-

“तोरो प्रश्नक जवाब विस्तारसँ ओही दिन, माने जइ दिन किसनी भौजीक पनचैती हेतैन, देबह। अखन एतबे बुझह जे आसिनक आश आ कातिकक बासक बीचक ई बीचमानि छी।”



शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017

Notes